प्रधानमंत्री मोदी बोले -मंगोलिया के विकास में भारत दृढ़ साझेदार

- 12

मांग बढ़ने से सितंबर माह में बढ़ा रत्न आभूषण का निर्यात

- 12

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एकजुट वैश्विक दृष्टिकोण जरूरी

- 13

सलामी बल्लेबाज केएल राहुल का नाबाद अर्धशतक, भारत ने किया क्लीन स्वीप

- 14

आज का मौसम

28.0⁰ अधिकतम तापमान

18.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.13

सूर्यास्त 05.42

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

हल्द्वानी

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी 10:34 उपरांत दशमी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 15 अक्टूबर 2025, वर्ष 5, अंक 235, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

हाईकोर्ट ने याचिकर्ता पर लगाया 5 लाख का जुर्माना

विधि संवाददाता, नैनीताल

- घुड़दौड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज के रजिस्ट्रार की नियुक्ति को दी थी चुनौती

अमृत विचार: हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जी. नरेंद्र एवं न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने घुड़दौड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज (गोविंद बल्लभ पंत इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी) के रजिस्ट्रार संदीप की नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए याचिकर्ता पर पांच लाख का जुर्माना लगाया है।

टिहरी निवासी अजय किशोर बहुगुणा की ओर से दायर याचिका में याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि रजिस्ट्रार पद पर संदीप कुमार की नियुक्ति गलत हुई है। उनके पास निर्धारित योग्यता नहीं है। याचिकाकर्ता की ओर से उन्हें पद से हटाने की मांग की गयी। दूसरी ओर कॉलेज की ओर से याचिका का विरोध करते हुए कहा गया कि उनकी नियुक्ति नियम के तहत बोर्ड आफ गवर्नर ने की है। साथ ही, इस पद पर उन्हें छह साल हो चुके हैं। इतने समय बाद नियुक्ति को चुनौती देना न्याय संगत नहीं है। खंडपीठ ने याचिका को आधारहीन माना और कोर्ट का समय नष्ट करने के लिए याचिकाकर्ता पर पांच लाख का जुर्माना लगा दिया।

अयोध्या में बनेगा एनएसजी केंद्र, आपात स्थिति पर तुरंत पहुंचेंगे कमांडो

- केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने एनएसजी के 41वें स्थापना दिवस पर की घोषणा

मानेसर (हरियाणा), एजेंसी

गुरुग्राम के मानेसर में स्थित एनएसजी के 41वें स्थापना दिवस पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते अमित शाह।

गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि सरकार उत्तर प्रदेश के अयोध्या में ब्लैक कैट कमांडो बल एनएसजी का एक और क्षेत्रीय केंद्र स्थापित करेगी। मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद और गांधीनगर के मौजूदा केंद्रों के बाद यह राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) का छठा क्षेत्रीय केंद्र होगा। एनएसजी केंद्र इसके कमांडो को किसी भी आपात स्थिति में तुरंत और प्रभावी ढंग से पहुंचने में मदद करते हैं।

आतंकवाद रोधी कमांडो बल के 41वें स्थापना दिवस पर यहां उसके मुख्यालय में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि मोदी सरकार आने वाले दिनों में एनएसजी की कार्यप्रणाली में बड़ा बदलाव लाने वाली है। उन्होंने कहा अयोध्या में केंद्र बनने के बाद यहां एनएसजी के जवान चौबीसों घंटे तैनात रहेंगे। सरकार ने 30 जून और एक जुलाई 2009 को मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद और कोलकाता में एनएसजी के चार क्षेत्रीय केंद्रों का संचालन शुरू किया था। इन केंद्रों की स्थापना का निर्णय 2008 के 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद लिया गया था, ताकि विशिष्ट कमांडो को हमले वाली जगह पर पहुंचने में लगने वाला समय घटाया जा सके। इससे पहले, एनएसजी कमांडो को दिल्ली से हवाई मार्ग से लाना पड़ता था, जिससे देरी होती थी। एनएसजी की ये इकाइयां लंबे समय तक चलने वाले, उच्च जोखिम वाले आतंकवाद रोधी अभियानों के लिए एक विशेष 'बैकअप' बल के रूप में कार्य करती हैं। ये केंद्र कमांडो की पेशेवर कुशलता को निखारने में मदद करते हैं और राज्यों के प्रथम प्रतिक्रिया बलों, पुलिस बलों की क्षमता निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एनएसजी का गठन 1984 में हुआ था। इसके अभियान में चूक नहीं होती, कम समय में किसी भी हमले का मुकाबला कर सकता है।

आतंकवादियों के लिए कोई जगह सुरक्षित नहीं : शाह

मानेसर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान में आतंकवादी समूहों के मुख्यालयों, प्रशिक्षण केंद्रों और 'लॉन्च पैड्स' को तबाह कर दिया गया तथा अब आतंकवादियों के लिए कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं है। शाह ने यह भी कहा कि भारतीय सुरक्षा बल जमीन के अंदर घुसकर हर आतंकवादी कृत्य की सजा देने के लिए कृतसंकल्प हैं। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान में आतंकवादी मुख्यालयों, उनके प्रशिक्षण केंद्रों और लॉन्च पैड्स को नष्ट किया है...ऑपरेशन महादेव में हमारे सुरक्षा बलों ने पहलगाम में आतंकी हमला करने वाले आतंकवादियों का सफाया करने के लिए सटीक कार्रवाई की। इससे नागरिकों का सुरक्षा बलों पर विश्वास और भी मजबूत हुआ है।

ब्रीफ न्यूज

बनबसा में बनेगी एकीकृत जांच चौकी

देहरादून। केंद्र सरकार ने चम्पावत जनपद के बनबसा क्षेत्र में एकीकृत जांच चौकी (इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट) के निर्माण के लिए वन भूमि विचलन को अंतिम स्वीकृति प्रदान कर दी है। मंगलवार को मिली जानकारी के अनुसार, यह स्वीकृति वन (संरक्षण एवं संवर्धन) अधिनियम, 1980 की धारा 2 के अंतर्गत दी गई है। इस परियोजना के लिए कुल 34 .00 हेक्टेयर आरक्षित वन भूमि को भूमि बंदरगाह प्राधिकरण, भारत के पक्ष में विचलित किया गया है। यह भूमि तराई पूर्व वन प्रभाग, हल्द्वानी के अंतर्गत चैनी कम्पार्टमेंट-14, बनबसा, पूर्णागिरी (टनकपुर) तहसील, चम्पावत में स्थित है।

उत्तरकाशी में भूकंप के झटके

देहरादून। उत्तरकाशी जनपद में मंगलवार शाम भूकंप के झटके महसूस किए गए। जिला आपदा प्रबंधन केंद्र प्रभारी शार्दूल गुसाई ने बताया कि शाम 19 :30 :10 बजे भूकंप का झटका दर्ज किया गया, जिसका केंद्र उत्तराखंड-हिमाचल सीमा पर मोरी ब्लॉक के निकट था। इसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3 .6 तीव्रता थी, जबकि गहराई 5 किलोमीटर नीचे पाई गई। जिला प्रशासन द्वारा स्थिति की निरंतर निगरानी की जा रही है। अब तक किसी प्रकार की हानि की सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

जैसलमेर में चलती एसी बस में लगी आग, 20 यात्री जिंदा जले

57 यात्री थे सवार, आग से बचने के लिए लोग बस से कूदे

जैसलमेर, एजेंसी

राजस्थान के जैसलमेर जिले के थईयात गांव के पास आग लगने के बाद धू-धूकर जलती बस। ● एजेंसी

जैसलमेर-जोधपुर राजमार्ग पर मंगलवार को जैसलमेर से जोधपुर जा रही एक एसी बस में आग लगने से 20 यात्रियों की जिंदा जल गए। बस में 57 यात्री सवार थे। आग का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है।

उन्होंने कहा, राजस्थान के जैसलमेर में हुए हादसे में हुई जान-माल की हानि से व्यथित हूं. इस कठिन समय में मेरी संवेदनाएं प्रभावित लोगों और उनके परिवारों के साथ हैं। पीएम ने मृतक के परिजनों को 2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की। जोधपुर के पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) राजेश मीणा ने बताया कि गंभीर रूप से घायल यात्रियों को जोधपुर रेफर कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार, बस जैसलमेर से जोधपुर जा रही थी तभी अपराह्न करीब तीन बजे थईयात गांव के पास उसके पिछले हिस्से से अचानक धुआं निकलने लगा और चालक ने बस को सड़क किनारे रोका। हालांकि कुछ ही पलों में आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। स्थानीय निवासी और राहगीर मौके पर पहुंचे और बचाव कार्य में मदद की। दमकल और पुलिस को सूचित किया और घायलों को जैसलमेर के जवाहर अस्पताल ले जाया गया। जिला कलेक्टर प्रताप सिंह ने इस घटना पर गहरी संवेदना व्यक्त की है और संबंधित अधिकारियों को तत्काल राहत एवं चिकित्सा व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

कई यात्रियों की हालत नाजुक, मुख्यमंत्री लेते रहे हादसे से संबंधित फीडबैक

यात्रियों की हालत नाजुक बताई जा रही है। हादसे में मारे गए लोगों की पहचान के लिए जिला प्रशासन ने कवायद शुरू कर दी है। मृतकों की पहचान के लिए डीएनए की जांच की जाएगी। इसके बाद ही शव सौंपे जाएंगे। मुख्यमंत्री हादसे के संबंध में फीडबैक लेते रहे। मुख्यमंत्री शर्मा ने 'एक्स' पर लिखा, जैसलमेर में बस में लगी आग की घटना अत्यंत हृदय विदारक है। इस दुखद हादसे से प्रभावित नागरिकों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। संबंधित अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार एवं प्रभावितों को हर संभव सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। राज्यपाल बागडे, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत व पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी हादसे पर शोक जताया है।

सरकार ने निष्पक्ष-पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के लिए उठाए कई कदम

मुख्यमंत्री धामी ने 1456 अभ्यर्थियों को प्रदान किए नियुक्ति पत्र

- 1347 सहायक अध्यापकों, 109 समीक्षा एवं सहायक समीक्षा अधिकारियों को मिली नियुक्ति

मुख्य संवाददाता, देहरादून

चयनित अभ्यर्थी को नियुक्ति पत्र प्रदान करते सीएम पुष्कर सिंह धामी।

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। राज्य में विद्यालयों के इन्फ्रास्ट्रक्चर से लेकर डिजिटलाइजेशन तक, प्रत्येक स्तर पर व्यापक सुधार लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। प्रदेश में भर्ती की प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने मंगलवार को दून मेडिकल कॉलेज में 1456 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। इनमें लोक सेवा आयोग के माध्यम से चयनित 109 समीक्षा अधिकारी एवं सहायक समीक्षा अधिकारी और उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से चयनित 1347 सहायक अध्यापक (एलटी) शामिल हैं। सीएम ने कहा कि, किसी भी राज्य की शासन व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण आधार उसका प्रशासनिक तंत्र होता है। सचिवालय को राज्य की शासन व्यवस्था का मस्तिष्क कह सकते हैं क्योंकि यहीं पर नीतियां बनती हैं, निर्णय लिए जाते हैं और विकास परियोजनाओं को धरातल पर उतारने का खाका तैयार किया जाता है। इस पूरी व्यवस्था को प्रभावी बनाने में समीक्षा अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कहा कि, जब एक बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलती है, तो वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के साथ समाज और देश के लिए भी अमूल्य योगदान देता है।

4 वर्ष में 26000 से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरी

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले चार वर्षों में राज्य में 26 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी में सेवायोजित किया जा चुका है। यह संख्या राज्य गठन के पश्चात से पूर्ववर्ती सरकारों के कार्यकाल में मिली कुल नौकरियों से दो गुना से भी अधिक हैं। कहा कि, आज हमारे युवा पारदर्शी व्यवस्था और मेरिट के आधार पर सरकारी नौकरियों में अवसर पा रहे हैं। हाल ही में हरिद्वार के एक परीक्षा सेंटर पर एक व्यक्ति द्वारा नकल का एक प्रकरण सामने आया था। सरकार ने तुरंत एक्शन लेते हुए आरोपी को गिरफ्तार कराया और जांच के एसआईटी गठित की। युवाओं के हितों की रक्षा के लिए और युवाओं की मांग पर सीबीआई जांच की संस्तुति प्रदान कर पेपर निरस्त करने का भी निर्णय लिया। कहा कि उन्होंने स्वयं युवाओं के पास धरनास्थल पर जाकर उनकी सभी न्यायोचित मांगों को मानने का आश्वासन दिया।

दिवंगत आईपीएस पूरन कुमार पर गंभीर आरोप लगा एएसआई ने की आत्महत्या

चंडीगढ़, एजेंसी

- छह मिनट का वीडियो और तीन पन्नों का सुसाइड नोट छोड़ा
- बोला- करप्शन में बदनामी के डर से पूरन ने किया सुसाइड

हरियाणा में एक सहायक उप-निरीक्षक ने मंगलवार को रोहतक जिले में गोली मारकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने दिवंगत आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए छह मिनट का वीडियो व तीन पन्नों का एक सुसाइड नोट छोड़ा है।

पुलिस ने बताया कि एएसआई संदीप कुमार ने पूरन कुमार के सहयोगी और हेड कांस्टेबल सुशील की गिरफ्तारी में अहम भूमिका निभाई थी। पूरन रोहतक जिले में महानिरीक्षक रहे थे और पिछले हफ्ते चंडीगढ़ स्थित अपने घर में मृत पाए गए थे।

साइबर प्रकोष्ठ में तैनात एएसआई का शव रोहतक के लाढौत-धामर रोड स्थित उनके घर से बरामद किया गया। आईपीएस अधिकारी के आत्महत्या के मामले को लेकर बढ़ते विवाद के बीच संदीप कुमार की आत्महत्या का मामला सामने आया है। संदीप ने वीडियो में पूरन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि भगत सिंह ने भी बलिदान दिया व एक कठिन रास्ता अपनाया, जिसके बाद देश जागृत हुआ। वीडियो में कहा, यह देश तब जागृत होगा जब हम सत्य के मार्ग पर अपना बलिदान देंगे। वीडियो में यह भी सुना जा सकता है कि 'ईमानदार अधिकारी' नरेंद्र बिजारणिया ने पूरन से सवाल किए थे। पूरन का नाम हाल ही में एक रिश्वत कांड में सामने आया था। रोहतक में शराब के एक ठेकेदार ने हेड कांस्टेबल सुशील कुमार के खिलाफ रिश्वतखोरी का मामला दर्ज कराया था।

ठेकेदार ने आरोप लगाया कि सुशील ने पूरन के नाम पर (जब वह वहां तैनात थे) 2.5 लाख रुपये की रिश्वत मांगी थी। सुशील कुमार को हाल ही में गिरफ्तार किया गया था।

आरोपों से घिरे डीजीपी को छुट्टी पर भेजा गया

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने आईपीएस अधिकारी की आत्महत्या मामले को लेकर विपक्ष के हमले के बीच राज्य के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) शत्रुजीत कपूर को छुट्टी पर भेज दिया। सरकार ने इससे पहले रोहतक के पूर्व पुलिस अधीक्षक नरेंद्र बिजारणिया का तबादला कर दिया था।

डीपीआरओ के आदेश रद्द, सीएम ने बैठाई जांच

मुख्य संवाददाता, देहरादून

- टिहरी, उत्तरकाशी में बाहरी व्यक्ति को नंबर प्लेट लगाने का काम देने का मामला

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मकानों पर नंबर प्लेट लगाने के संबंध में जिला पंचायतराज अधिकारी, टिहरी गढ़वाल एवं उत्तरकाशी द्वारा जारी आदेशों को तत्काल प्रभाव से रद्द करने के साथ ही मामले की पूरी जांच कराने और दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। टिहरी एवं उत्तरकाशी जिले के जिला पंचायतराज अधिकारियों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन आदि कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार करने हेतु मकानों पर नम्बर प्लेट लगाने का कार्य एक बाहरी व्यक्ति को देने से संबंधित पत्र सोशल मीडिया में वायरल हुए थे।

सीएम ने उक्त प्रकरणों का संज्ञान लेते हुए इस संबंध में अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश देते हुए कहा कि सरकार के संकल्प के अनुरूप सभी योजनाएं और कार्यक्रम जनहित, पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ लागू होने आवश्यक हैं। सभी कार्यों में स्थानीय लोगों के रोजगार और हितों का पूरा ध्यान रखने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने दोहराया कि 10 करोड़ रुपये तक के सरकारी अधिप्राप्तियों में स्थानीय लोगों को सर्वोच्च प्राथमिकता दिए जाने हेतु सरकार के द्वारा जारी आदेशों का हर स्तर पर सख्ती से अनुपालन किया जाए।

भाजपा ने 71 उम्मीदवारों की सूची जारी की

पटना। भाजपा ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए मंगलवार को अपने 71 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की, जिसमें 13 मंत्रियों और नौ महिलाओं के नाम शामिल हैं जबकि विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव का टिकट काट दिया गया है।

भाजपा नवंबर में होने वाला विधानसभा चुनाव राजग के तहत लड़ रही है। वह 243 विधानसभा सीट में से 101 पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। शेष सीटें गठबंधन सहयोगियों के हिस्से में गई हैं जिनमें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जनता दल (यू) भी शामिल है। भाजपा की पहली सूची में उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को तारापुर, पूर्व उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा को लखीसराय से प्रत्याशी बनाया गया है। वहीं, विस अध्यक्ष नंदकिशोर यादव का टिकट काट दिया गया है। यादव 7 बार पटना साहिब से विधायक रह चुके हैं। पार्टी ने उनकी जगह हाईकोर्ट के वकील और भाजपा नेता रत्नेश कुशवाहा को उम्मीदवार बनाया है। भाजपा की पहली सूची में 13 मंत्रियों और नौ महिला उम्मीदवारों के नाम शामिल हैं। पार्टी ने 48 मौजूदा विधायकों को दोबारा मौका दिया है।

बिहार विधानसभा चुनाव

- विस अध्यक्ष नंदकिशोर यादव का टिकट काटा

ऐलान

अमेरिका के बाहर भारत में सबसे बड़ा एआई केंद्र होगा स्थापित, विशाखापत्तनम में अडाणी समूह के साथ मिलकर बनाएगी डेटा केंद्र

गूगल एआई 15 अरब डॉलर का निवेश कर स्थापित करेगी डेटा सेंटर

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका की कंपनी गूगल अगले पांच वर्ष में विशाखापत्तनम में एक कृत्रिम मेधा (एआई) केंद्र स्थापित करने के लिए 15 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश करेगी। इसमें अडाणी समूह के साथ साझेदारी में देश का सबसे बड़ा डेटा सेंटर भी शामिल होगा।

प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी ने कहा कि आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में यह एआई केंद्र अमेरिका के बाहर गूगल का सबसे बड़ा केंद्र होगा। इसमें एक गीगावाट का डाटा सेंटर परिसर, नए बड़े पैमाने के ऊर्जा स्रोत एवं विस्तारित फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क शामिल होगा। कंपनी के एक कार्यक्रम में गूगल क्लाउड के सीईओ थॉमस कुरियन ने कहा, यह अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा एआई केंद्र होगा जिसमें हम निवेश करने जा रहे हैं। कार्यक्रम में औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।यह घोषणा नयी दिल्ली में गूगल द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'भारत एआई शक्ति' के दौरान की गई। यह कार्यक्रम भारत-एआई इम्पैक्ट समिट 2026 से पहले आयोजित किया गया। कार्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बात करके बहुत अच्छा लगा, हमने विशाखापत्तनम में पहले गूगल एआई केंद्र के लिए अपनी योजनाओं को साझा किया जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। पिचाई ने लिखा, यह केंद्र गीगावाट स्तरीय कंप्यूटिंग क्षमता, एक नया अंतरराष्ट्रीय सब-सी गेटवे और विशाल ऊर्जा अवसंरचना को एक साथ लाता है। इसके माध्यम से हम अपनी उद्योग-अग्रणी प्रौद्योगिकी को भारत के उद्यमों एवं उपयोगकर्ताओं तक पहुंचाएंगे जिससे एआई नवोन्मेषण में तेजी आएगी और देश भर में विकास को गति मिलेगी। इसके अलावा अरबपति गौतम अडाणी के समूह की प्रमुख कंपनी अदाणी एंटरप्राइजेज ने कहा कि उसकी संयुक्त उद्यम कंपनी अडानीकॉनेक्स और गूगल, विशाखापत्तनम में भारत का सबसे बड़ा एआई डेटा सेंटर परिसर और नई हरित ऊर्जा अवसंरचना विकसित करेंगे। सीतारमण ने कहा कि इसलिए मुझे लगता है कि यह काम करने के लिए सही जगह और आने के लिए सही देश है... यह भारतीय इतिहास के उन बहुत ही दिलचस्प चरणों में से एक है जहां नीति, राजनीतिक क्षेत्र में कई दलों द्वारा इसे अपनाने से पहले ही आगे बढ़ रही है। वैष्णव ने राज्य में गूगल के निवेश को शीघ्र मंजूरी देने के लिए आंध्र प्रदेश सरकार की सराहना की।

गूगल एआई केंद्र डिजिटल अर्थव्यवस्था को देगा बढ़ावा : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि विशाखापत्तनम में गूगल एआई केंद्र की स्थापना प्रौद्योगिकी के लोकतांत्रीकरण में एक बेहद महत्वपूर्ण कदम होगा। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, आंध्र प्रदेश के शहर विशाखापत्तनम में गूगल एआई केंद्र की स्थापना को लेकर काफी खुश हूं।

अमृत विचार

हल्द्वानी, बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

स्टेट ब्रीफ

सड़कों के लिए 161 करोड़ स्वीकृत

देहरादून : मुख्यमंत्री ने मसूरी के अनारवाला मालसी मोटर मार्ग पुर्ननिर्माण कार्य को 3 .19 करोड़, बागेश्वर में मोटर मार्ग के निर्माण को 1 .01 करोड़, लैंसडाउन नैनीडांडा में मोटर मार्ग निर्माण को 83 .34 लाख के अलावा पीडब्ल्यूडी के चालू निर्माण कार्य वृहद निर्माण मद में 155 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की है। सीएम ने काशीपुर में ग्राम दोहरी वकील में मार्ग निर्माण को 50 .16 लाख की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। शासन ने इन योजनाओं से सम्बन्धित शासनादेश भी जारी कर दिए हैं। इसके साथ ही सीएम ने विभिन्न निर्माण कार्यों के लिए 196 करोड़ की धनराशि स्वीकृत की है।

समस्या को लेकर वन मंत्री से मिले पार्षद

हल्द्वानी : वार्ड 58 के पार्षद मनोज जोशी ने मंगलवार को सर्किट हाउस में वन मंत्री सुबोध उनियाल से मुलाकात कर डी-क्लास खन्ना फार्म व केशवपुरम की सालों पुरानी सड़क की समस्या पर चर्चा की। पार्षद ने बताया कि पिछले 50 वर्षों से लगभग 200 परिवार वन भूमि से होकर गुजरते हैं और सड़क नहीं होने से परेशान हैं। इस पर मंत्री सुबोध उनियाल ने तत्काल संबंधित विभाग को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। पार्षद ने मंत्री का आभार व्यक्त किया।

3 माह में 5-6 लाख श्रमिकों को करें पंजीकृत: मुख्यमंत्री

श्रमवीरों के कल्याण को 11.50 करोड़ की आर्थिक सहायता की हस्तांतरित

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि राज्य के सभी मनरेगा श्रमिकों को शीघ्रतापूर्वक भवन एवं सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अंतर्गत कवर किया जाए। इसमें कोई शिथिलता या विलंब स्वीकार नहीं होगा।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में कैंप कार्यालय में उत्तराखंड भवन एवं सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड की बैठक आयोजित हुई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बोर्ड में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों एवं उनके आश्रितों के कल्याणार्थ ऑनलाइन पोर्टल एवं डीबीटी के माध्यम से लगभग 10,000 श्रमिकों एवं उनके परिजनों को 11 करोड़ 50 लाख की आर्थिक सहायता राशि हस्तांतरित की। सीएम ने स्पष्ट निर्देश दिए कि अगले तीन महीनों के भीतर कम से कम 5 से 6 लाख श्रमिकों को बोर्ड के अंतर्गत पंजीकृत किया जाए। श्रम विभाग एवं बोर्ड के अधिकारियों का यह दायित्व है कि वे प्रत्येक श्रमिक तक पहुंच बनाएं और उन्हें सरकार द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं एवं सुविधाओं की पूरी जानकारी प्रदान करें। कई बार जानकारी के अभाव में पात्र श्रमिक योजनाओं के लाभ से वंचित रह जाते हैं, जो किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। स्पष्ट किया कि श्रमिकों के कल्याण से जुड़ी किसी भी योजना में लापरवाही या ढिलाई नहीं की जानी चाहिए। सभी अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि योजनाओं की जानकारी पंचायत स्तर तक पहुंचाई जाए और श्रमिकों के पंजीकरण की प्रक्रिया को अभियान रूप में चलाया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य का विकास हमारे श्रमिक भाइयों-बहनों के परिश्रम पर आधारित है। उनके कल्याण में कोई कमी नहीं छोड़ी जाएगी। सभी मनरेगा श्रमिकों को कल्याण बोर्ड के अंतर्गत लाना हमारा लक्ष्य ही नहीं, यह सरकार की जिम्मेदारी है।

खनन विभाग बना मॉडल डिपार्टमेंट

सीएम ने कहा कि, जनहित एवं राजस्व वृद्धि के क्षेत्र में खनन विभाग ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। राज्य के खनन राजस्व में हुई अप्रत्याशित बढ़ोतरी इसका स्पष्ट प्रमाण है कि सरकार की नवीन खनन नीति प्रभावी, पारदर्शी और सशक्त रूप से लागू की गई है। राज्य की यह नीति और कार्यप्रणाली अब अन्य राज्यों के लिए भी एक मॉडल बन चुकी है। हिमाचल और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों के प्रतिनिधि अधिकारी भी उत्तराखंड आकर खनन क्षेत्र में लागू क्रियान्वित मॉडल का अध्ययन कर रहे हैं तथा यहां की नीतियों और व्यवस्थाओं को अपने-अपने राज्यों में लागू करने के प्रयास कर रहे हैं।

स्कूल कार्मिकों से संबंधित याचिकाएं खारिज

विधि संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: हाईकोर्ट ने आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी द्वारा संचालित स्कूलों के कर्मचारियों से संबंधित सात याचिकाओं को गैर पोषणीय मानते हुए खारिज कर दिया है। हालांकि, कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं को यह स्वतंत्रता दी है कि वे अपने कानूनी अधिकारों के निवारण के लिए उपयुक्त अन्य मंचों (जैसे श्रम न्यायालय या सिविल कोर्ट) पर जा सकते हैं।

न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ ने यह फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया कि एडब्लूईएस और इसके तहत संचालित स्कूल न तो केंद्र या राज्य सरकार से कोई वित्तीय सहायता प्राप्त करते हैं और न ही उन पर सरकार का कोई प्रशासनिक या वित्तीय नियंत्रण है इसलिए ये संस्थान संविधान के अनुच्छेद 12 के तहत 'राज्य' की परिभाषा के दायरे में नहीं आते हैं और इनके खिलाफ रिट याचिका दायर नहीं की जा सकती। मामले के अनुसार, याचिकाओं में आर्मी पब्लिक स्कूलों द्वारा उनकी सेवाएं समाप्त करने को चुनौती दी थी। मुख्य याचिकाकर्ता कंचन चंद को 1 मई 2019 को पीआरटी शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था और बाद में 2 फरवरी 2024 से प्रधानाध्यापक बनाया गया था। लेकिन 6 फरवरी 2025 को स्कूल चेयरमैन के आदेश से सेवाएं समाप्त कर दी गई जिसके खिलाफ उन्होंने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। स्कूल प्रबंधन ने कोर्ट को अवगत कराया कि ये स्कूल सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत है और यह स्व-वित्तपोषण मोड पर कार्य करता है।

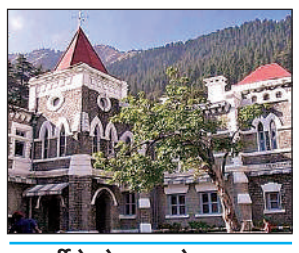

● आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी द्वारा संचालित हैं स्कूल

अंतर्धार्मिक प्रेमी युगल को दें पुलिस सुरक्षा

विधि संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: हाईकोर्ट ने अंतर्धार्मिक विवाह कर रहे प्रेमी युगल को तत्काल पुलिस सुरक्षा प्रदान करने का आदेश थानाध्यक्ष ट्रांजिट कैम्प रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर को दिया है।

मुख्य न्यायाधीश जी. नरेंद्र एवं न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने ऊधमसिंह नगर निवासी दूसरे समुदाय की युवती द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि बालिग होने के नाते प्रत्येक नागरिक को अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करने का संवैधानिक अधिकार है और राज्य का यह दायित्व है कि वह निजी व्यक्तियों के खतरे से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करे। याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत को सूचित किया गया कि वे अलग-अलग धर्मों से संबंध रखते हैं, जिनमें लड़की मुस्लिम और लड़का हिंदू हैं। इस रिश्ते से लड़की के परिवार के सदस्य सख्त खिलाफ हैं और उन्हें जान से मारने व गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दे रहे हैं। हाईकोर्ट की खंडपीठ ने ट्रांजिट कैंप थानाध्यक्ष को त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया है।

परिवहन निगम के पूर्व कर्मी दें एमडी को प्रत्यावेदन

नैनीताल : हाईकोर्ट ने उत्तराखंड परिवहन निगम के सेवानिवृत्त कर्मचारियों द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए उन्हें छठवें वेतन आयोग के पूर्ण लाभों की मांग के लिए निगम के प्रबंध निदेशक के समक्ष प्रत्यावेदन प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ के समक्ष परिवहन निगम के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की याचिकाओं में बताया गया था कि निगम के अन्य सभी कर्मचारियों को 01 जनवरी 2006 से छठे वेतन आयोग का पूरा लाभ दिया गया है, जबकि 2023 में मैकेनिक के पद से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी शामिल हैं, उन्हें यह लाभ नहीं दिया गया है। सुनवाई के दौरान न्यायालय ने पाया कि याचिकाकर्ताओं ने उत्तराखंड परिवहन निगम के समक्ष आधिकारिक तौर पर अपनी मांग नहीं रखी है जिसका कोई दस्तावेजी प्रमाण याचिकाओं में प्रस्तुत नहीं किया था। कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं को आदेश दिया है कि वे इस आदेश की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर निगम के प्रबंध निदेशक के समक्ष अपना अभ्यावेदन प्रस्तुत करें। प्रबंध निदेशक को निर्देश दिया गया है कि वे अभ्यावेदन प्राप्त होने की तारीख से चार माह के भीतर, कानून के अनुसार, याचिकाकर्ताओं के छठे वेतन आयोग के लाभ के मामले पर उचित विचार करें और निर्णय पारित करें। इस निर्देश के साथ, संबंधित रिट याचिकाओं का निस्तारण कर दिया गया है।

पिछली सरकारों की लापरवाही से हुआ जनसंख्या असंतुलन

मुख्य संवाददाता, देहरादून

● डेमोग्राफिक बदलाव पर सीएम धामी ने दिया बड़ा बयान

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश के बदलते डेमोग्राफिक परिदृश्य (जनसंख्या संरचना) को लेकर बड़ा बयान दिया। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि राज्य की सांस्कृतिक पहचान और जनसंख्या संतुलन से किसी भी तरह की छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

धामी ने कहा कि उत्तराखंड देवभूमि है और यहां की सामाजिक-सांस्कृतिक बनावट को किसी भी कीमत पर बिगड़ने नहीं दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने देहरादून के पछवादून क्षेत्र समेत राज्य के कई हिस्सों में हो रहे डेमोग्राफिक बदलाव पर चिंता जताते हुए कहा कि अब सरकार ऐसे किसी भी बदलाव को नजरअंदाज नहीं करेगी। उन्होंने बताया कि सरकार ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने जिलों में डेमोग्राफिक पैटर्न पर सतर्क निगरानी रखें। निर्देश दिए कि राशन कार्ड आधार कार्ड, बिजली कनेक्शन और परिवार रजिस्टर जैसे दस्तावेजों के आधार पर अपात्र व्यक्तियों की पहचान की जाए और जो लोग गलत तरीके से सरकारी योजनाओं का लाभ ले रहे हैं, उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री ने इस दौरान पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर भी निशाना साधते हुए कहा कि पिछली सरकारों की लापरवाही के चलते कई जगहों पर जनसंख्या असंतुलन की स्थिति बनी, लेकिन अब सरकार पूरी सख्ती से कार्रवाई कर रही है। राज्य की जनसंख्या संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों से कोई समझौता नहीं होगा, हमने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे डेमोग्राफिक बदलाव को लेकर सतर्क रहें और अपात्र रूप से सरकारी सुविधाएं लेने वालों पर तुरंत कानूनी कार्रवाई करें। अब उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान और जनसंख्या संतुलन की रक्षा सरकार की प्राथमिकता है।

दून में नदी और नालों के किनारे निर्माण फिर शुरू

देहरादून: उत्तराखंड में मानसून के दौरान अधिकतर प्राकृतिक आपदाओं में सर्वाधिक प्रभावित हुईं नदी-नालों के किनारे की बसावटों को लेकर बढ़ी चिंताओं के बीच फिर से नदी तटों पर निर्माण शुरू हो गया है। देहरादून में भी 15 और 16 सितंबर को सहस्त्रधारा और मालदेवता सहित सात-आठ जगहों पर अतिवृष्टि और बादल फटने के कारण भारी तबाही हुई थी। इस दौरान उफान पर आए नदी-नालों के किनारे बने कई होटल, रेस्तरां और इमारतें देखते ही देखते पानी में बह गईं। होटलों और इमारतों का मलबा, सड़कों के धंस जाने से गायब हुई ज़मीन, और टूटे पड़े पुल- इन सबके रूप में तबाही के निशान अब भी दिखाई दे रहे हैं, लेकिन एक महीने से भी कम समय में सहस्त्रधारा में दोबारा निर्माण शुरू हो चुका है जबकि मालदेवता में नदी के बीच में ही दीवार खड़ी कर निर्माण कार्य किया जा रहा है। एक ओर आपदा में ढहे मकानों के अवशेष हैं और वहीं दूसरी ओर नई इमारतें खड़ी करने का काम शुरू हो गया है। इस मानसून में आपदाओं में प्रदेश भर में 133 लोगों की मृत्यु हुई थी जबकि 88 अब भी लापता हैं।

अनियमितता पर एक मेडिकल स्टोर कराया बंद, दो को नोटिस

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: ड्रग्स विभाग, स्वास्थ्य विभाग, प्रशासन और पुलिस ने संयुक्त रूप से रामनगर एवं आसपास के इलाकों में मेडिकल स्टोरों पर अचानक छापामार कार्रवाई की। छापामार कार्रवाई को देख अधिकांश मेडिकल स्टोर बंद हो गए। वरिष्ठ औषधि निरीक्षक मीनाक्षी बिष्ट ने बताया कि सरकार की गाइडलाइन के तहत यह अभियान रामनगर में चलाया गया है।

उन्होंने बताया कि अभियान के तहत एक मेडिकल स्टोर पर अनिमितताएं मिली हैं। उसको बंद कर दिया गया है। दो मेडिकल स्वामियों पर अनियमितताएं मिलने पर नोटिस जारी कर दिशा निर्देश दिए गए हैं। कुछ मेडिकल स्टोर पर प्रपत्र अधूरे पाए गए थे जिसको लेकर संबंधित मेडिकल स्वामी को प्रपत्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि प्रतिबंधित कफ सिरप को लेकर मेडिकल स्टोर स्वामियों को आवश्यक दिशा निर्देश देने के साथ ही प्रतिबंधित कफ सिरप एवं दवा न बेचने की कड़ी चेतावनी दी गई है। उन्होंने कहा कि यदि कोई भी मेडिकल स्वामी विभाग के नियमों की अनदेखी करेगा तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पूर्व मोहल्ला खताडी क्षेत्र में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने झोलाछाप डॉक्टर के खिलाफ कार्रवाई की थी जिसके तहत एक क्लीनिक में मौजूद दावों का निरीक्षण करते हुए कुछ दावों के मौके पर सैंपल लेने की कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी तो वहीं मौके पर मौजूद स्वास्थ्य विभाग की टीम ने इस क्लिनिक को बंद करने की कार्रवाई की हैं। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले एक और क्लिनिक और पैथोलॉजी लैब को बंद किया गया था। उन्होंने बताया कि विभाग का यह अभियान लगातार जारी रहेगा। वरिष्ठ औषधि निरीक्षक मीनाक्षी बिष्ट, वरिष्ठ औषधि निरीक्षक नीरज कुमार, ड्रग्स निरीक्षक रामनगर अर्चना गहतोड़ी, औषधि निरीक्षक निधि शर्मा, औषधि निरीक्षक शुभम कोटनाला, नायब तहसीलदार कुंदन पूरी, राजस्व उप निरीक्षक राहुल आर्य, एसआई गगनदीप सिंह, कांस्टेबल संजय कुमार मौजूद रहें।

मेडिकल स्टोर की जांच करती स्वास्थ्य विभाग की टीम। ● अमृत विचार

दीपावली: ट्रेनों में मारामारी वेटिंग में चल रहे सभी कोच

संवाददाता, हल्द्वानी

● रोडवेज के पास यात्रियों का टोटा, यात्री बढ़ने पर चलाएगा अतिरिक्त बसें

अमृत विचार : धनतेरस और दीपावली के त्यौहार को लेकर ट्रेनों में मारामारी चल रही है। ट्रेनों में अधिकांश श्रेणियों में सीटें वेटिंग में चल रही हैं। दिल्ली मार्ग पर चलने वाली काठगोदाम शताब्दी एक्सप्रेस में धनतेरस से पहले कल गुरुवार और शुक्रवार को सीटें वेटिंग में चल रही हैं। जिसमें गुरुवार को दिल्ली से हल्द्वानी आने के लिए ट्रेन के चेयर कार में 40 की वेटिंग व ईसी में 22 की वेटिंग चल रही है। उत्तराखंड संपर्क क्रांति सेकेंड सिटिंग में 42 और चेयर कार में 35 की वेटिंग चल रही है। जबकि रानीखेत एक्सप्रेस में बुकिंग उपलब्ध नहीं है। देहरादून चलने वाली देहरादून काठगोदाम एक्सप्रेस में कल गुरुवार को हल्द्वानी पहुंचने के लिए स्लीपर में 87 की वेटिंग, थर्ड एसी में 37 और सेकेंड एसी में 19 की वेटिंग चल रही है।

लखनऊ मार्ग पर चलने वाली बाघ एक्सप्रेस और लाजपत नगर काठगोदाम एक्सप्रेस में भी सीटों में वेटिंग चल रही है। बाघ एक्सप्रेस में गुरुवार को हल्द्वानी पहुंचने के लिए स्लीपर में 6 से अधिक वेटिंग, थर्ड एसी में 8 और सेकेंड एसी में 5 की वेटिंग चल रही है। स्लीपर तत्काल, थर्ड एसी और सेकेंड एसी में भी सीटें उपलब्ध नहीं हैं। त्यौहार के बाद वापसी के लिए भी ट्रेनों में मारामारी देखने को मिल रही है। नई दिल्ली-शताब्दी एक्सप्रेस में 24 अक्टूबर को चेयर कार में 17 की वेटिंग, रानीखेत एक्सप्रेस में स्लीपर में 107, थर्ड एसी में 65, सेकेंड एसी में 30 और फर्स्ट एसी में 10 की वेटिंग चल रही है। उत्तराखंड संपर्क क्रांति में 42 की वेटिंग, चेयर कार में 37 की वेटिंग चल रही है। वहीं रोडवेज में यात्रियों का टोटा चल रहा है। हल्द्वानी डिपो प्रबंधन का कहना है कि यात्रियों की संख्या में पिछली दीपावली के मुकाबले बहुत गिरावट हुई है। डिपो इंचार्ज विद्या देवी ने कहा जरूरत पड़ने पर दिल्ली, देहरादून, लखनऊ प्रमुख मार्गों पर बसें चलाई जाएंगी।

शुष्क बना रहा सरोवर नगरी का मौसम

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: सरोवर नगरी का मौसम मंगलवार को शुष्क बना रहा। सुबह के समय चटख धूप खिली रही और मौसम खुशगवार नजर आया लेकिन दोपहर में घना कोहरा छाने लगा और बादल भी मंडराने लगे।

दोपहर तीन बजे ठंडक महसूस होने लगी जिस कारण लोगों को हीटर का सहारा लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। कोहरा देर शाम तक छाया हुआ था जिस कारण ठंड में अधिक वृद्धि होने लगी है। जीआईसी मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, अधिकतम तापमान 23 व न्यूनतम 13 डिग्री सेल्सियस रहा। आद्रता अधिकतम 80 व न्यूनतम 45 प्रतिशत रही। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में भी मौसम शुष्क बना रहेगा। इस बीच पर्वतीय क्षेत्रों में ठंड में बढ़ोतरी जारी रहेगी।

सीजेआई पर जूता फेंकने की घटना पर जताया आक्रोश

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: डॉ. भीम राव आंबेडकर के चेतना दिवस के अवसर पर नैनीताल रोड स्थित मधुवन बैंकेट हाल में स्वाभिमान जागरण मंच के तत्वावधान में अनुसूचित जाति समाज की सर्वदलीय प्रतिनिधि सभा हुई। भाजपा, कांग्रेस, बसपा सहित सभी राजनैतिक एवं गैर राजनैतिक दलों के लोगों ने भाग लिया।

आयोजक समीर आर्य ने कहा कि हम सभी अपने-अपने राजनैतिक दलों में रहें कोई आपत्ति नहीं लेकिन समाज हित के विषयों को गंभीरता एवं एकजुटता के साथ खड़े रहकर लड़ना होगा। सीजेआई गवई पर किये गये हमले व हरियाणा के सीनियर आईपीएस वाई. पूरन कुमार की आत्महत्या पर कठोर रोष उत्पन्न हुआ। दोषियों पर कार्रवाई की मांग की। दिनेश आर्य, बसपा के प्रदेश महासचिव भुवन आर्य, इंदर पाल, एमआर आर्य, शिल्पकार सभा के अध्यक्ष डॉ. रमेश चंद्रा, शिव गणेश, अमित बौद्ध, गिरीश आर्य आदि थे।

पुराने वाहनों से न हो अतिरिक्त टैक्स वसूली

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : गौला खनन मजदूर संघर्ष समिति ने परिवहन विभाग से 15 वर्ष पुराने वाहनों से अतिरिक्त टैक्स नहीं वसूलने समेत विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा।

खनन वाहन स्वामियों ने आरटीओ गुरुदेव सिंह को ज्ञापन सौंपकर कहा कि उत्तर प्रदेश में 15 वर्ष पुराने खनन वाहनों से अतिरिक्त टैक्स नहीं वसूला जाता है। उप्र की तर्ज पर ही राज्य में भी 15 वर्ष से अधिक पुराने वाहनों से अतिरिक्त टैक्स नहीं वसूला जाए। साथ ही ओवरलोडिंग का वजन

108 क्विंटल या अधिक का मानक तय किया जाए ताकि चालान नहीं हो। निजी फिटनेस सेंटर पर मनमाने ढंग से वसूली का आरोप लगाते हुए इस पर रोक लगाने की मांग की। साथ ही कहा कि गौला नदी के खनन से जुड़े वाहनों की पूर्व की भांति ही फिटनेस की जानी चाहिए। चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर निर्णय नहीं लिया गया तो उग्र आंदोलन होगा। इस दौरान अध्यक्ष राजेंद्र सिंह बिष्ट, करन अधिकारी, संतोष कुमार, राजेश बिष्ट मौजूद रहे।

जागा लोनिवि, बागजाला में सड़क की नापजोख की

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : जल संस्थान की ओर से 13.31 लाख का बजट जारी किये जाने के बावजूद सड़क की मरम्मत शुरू नहीं किये जाने को लेकर बागजाला के ग्रामीणों ने लोक निर्माण विभाग पर रोष व्यक्त करते हुए कार्यालय परिसर में धरने की चेतावनी दी थी, जिस पर मंगलवार को विभाग के एई, जेई टीम के साथ बागजाला के धरना स्थल पर पहुंचे। इस दौरान किसान महासभा बागजाला के पदाधिकारियों ने स्थलीय निरीक्षण कराते हुए अधिकारियों को सड़क की हालत दिखाई। जिस पर लोनिवि के अधिकारियों ने सड़क की नाप जोख करते हुए शीघ्र ही सड़क की मरम्मत करने का आश्वासन दिया। ग्रामीणों ने कहा कि यदि अब भी सड़क का निर्माण शुरू नहीं हुआ तो लोनिवि कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इधर, बागजाला को मालिकाना अधिकार देने, नए निर्माण पर लगी रोक हटाने, पंचायत चुनाव के अधिकार की बहाली समेत आठ सूत्रीय मांगों को लेकर चल रहा अनिश्चितकालीन धरना 58 वें दिन भी जारी रहा। लोगों ने शीघ्र ही मांगें पूरी नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी। विमला देवी, डॉ. कैलाश पांडे, हरीश लोधी, प्रेम सिंह नयाल, आकाश भारती, हेमा देवी, हरक सिंह बिष्ट, भोला सिंह, मीना भट्ट, दौलत सिंह कुंजवाल, दीवान सिंह बर्गली , सतपाल, यासीन रहे।

कार्रवाई | कलियर में जियारत करने आया था अमरोहा का दंपती, पुलिस ने 6 आरोपी दबोचे

मां की गोद से चोरी मासूम 4 .90 लाख में बेचा

संवाददाता, हरिद्वार

अमृत विचार: बच्चा चोरी के सनसनीखेज मामले का कलियर थाना पुलिस ने 55 घंटे के भीतर खुलासा करते हुए बच्चा चोर गिरोह का भंडाफोड़ कर चार महिलाओं सहित छह आरोपी गिरफ्तार किए हैं।

एसएसपी हरिद्वार प्रमेंद्र सिंह डोबाल ने मंगलवार को बताया कि बीती 11 अक्टूबर को अमरोहा (यूपी) निवासी जहीर अंसारी ने कलियर थाने में शिकायत दर्ज करायी थी कि वह पत्नी और तीन माह के बेटे के साथ जियारत को आया था। इस दौरान दो अज्ञात महिलाएं झांसा देकर उसकी पत्नी की गोद में सो रहे तीन माह के मासूम को चोरी कर ले गईं। एसओ कलियर रविंद्र कुमार की टीम ने मासूम को मेरठ से सकुशल बरामद करते हुए चोरी और खरीद-फरोख्त में शामिल छह आरोपियों-मेरठ के अहमद नगर निवासी आस मोहम्मद उर्फ लंगड़ा, उसकी पत्नी शहनाज, श्याम नगर निवासी सलमा, सिविल लाइन निवासी अंचन, शास्त्रीनगर निवासी नेहा शर्मा और बच्चा खरीदने वाले विशाल गुप्ता निवासी कंकरखेड़ा को गिरफ्तार कर एक लाख रुपये बरामद किए। एसएसपी के अनुसार, विशाल की दस साल बाद भी संतान नहीं थी। दंपती का इलाज मेरठ के एक प्राइवेट अस्पताल में चल रहा था। विशाल ने अस्पताल की पेशेंट कोऑर्डिनेटर नेहा के जरिए बच्चे का सौदा कराया था। बच्चा शहनाज व सलमा ने चोरी कर उसे तीन लाख में अंचन को बेचा था जबकि अंचन ने उसे 3.90 लाख में नेहा को और नेहा ने 4.90 लाख में विशाल को बेचा था। पुलिस की त्वरित कार्रवाई और तकनीकी जांच के दम पर महज 55 घंटे में मासूम को उसके माता-पिता से मिलवा दिया गया, जिससे परिजनों की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े।

हरिद्वार पुलिस की गिरफ्त में बच्चा चोर गिरोह के सदस्य। ● अमृत विचार

प्रतियोगिता में विजेता चंद्रादित्य सती, शुवम पोखरिया एवं रणविजय सिंह बाफिला।

तीन युवाओं का तबला वादन में उत्कृष्ट प्रदर्शन

हल्द्वानी : ताल तंत्र-ऑल इंडिया संगीत प्रतियोगिता-2025 में स्वर संगम संगीत संस्थान हल्द्वानी के तीन युवा कलाकारों ने उत्कृष्ट तबला वादन प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। लखनऊ घराने के तबला आचार्य डॉ. मुकेश चंद्र पंत के शिष्य चंद्रादित्य सती ने प्रतियोगिता में द्वितीय जबकि शुवम पोखरिया ने तृतीय और रणविजय बाफिला ने इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। विगत दिनों एमएसएमई मंत्रालय के सौजन्य से स्वामी विवेकानंद फाउंडेशन ऑफ आर्ट एंड कल्चर द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शीर्ष के तीन स्थान प्राप्त करने में युवा कलाकारों, उनके गुरु व स्वर संगम संगीत संस्थान की असाधारण उपलब्धि पर क्षेत्र के संगीत प्रेमियों ने बधाई दी।

सिटी ब्रीफ

बनभूलपुरा पुलिस ने तलाशे मोबाइल, मालिकों के सुपुर्द

हल्द्वानी : खो चुके कई मोबाइल फोन को बनभूलपुरा पुलिस ने आखिरकार तलाश लिया है। ये मोबाइल दो-तीन माह पहले खोए थे। पुलिस के मुताबिक, शिकायतकर्ता वसीम, संध्या सिरसवाल, इरफान, सलीम और अक्सा ने अपने मोबाइल फोन गुम होने की शिकायत दर्ज कराई गई थी। प्रभारी थानाध्यक्ष सुशील जोशी और उनकी टीम ने सर्विलांस सेल की तकनीकी सहायता से खोए हुए पांच मोबाइल फोन बरामद कर लिए। सभी मोबाइल उनके मालिकों के सुपुर्द कर दिए गए हैं।

बाजार क्षेत्र में चलने वाले वाहनों पर प्रतिबंध लगाने की मांग

नैनीताल। भाजपा के जिला उपाध्यक्ष दयाकिशन पोखरिया ने त्योहारी सीजन को देखते हुए बाजार क्षेत्र में वाहनों की आवाजाही पर रोक लगाने की मांग की है। एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए कहा है कि त्योहार के सीजन में बाजारों में लोगों की भीड़ रहती है। ऐसे में वाहनों की आवाजाही में घटना की संभावना रहती है। उन्होंने त्योहारी सीजन के चलते तल्लीताल व मल्लीताल बाजार में सुबह दस बजे से आठ बजे तक वाहनों के चलने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है। एसडीएम नवाजिश खलिक ने बताया कि त्योहार के सीजन में सुबह दस बजे से शाम आठ बजे तक बाजारों में वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा।

सीएम ने हल्द्वानी को दी सिटी बसों की सौगात

मुख्यमंत्री धामी ने सर्किट हाउस से दिखाई हरी झंडी, शहर के फिलहाल 3 रुटों पर दौड़ेंगी 12 बसें

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : आखिरकार एक लंबे इंतजार के बाद शहरवासियों को सिटी बस की सौगात मिली है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को काठगोदाम स्थित सर्किट हाउस परिसर से हरी झंडी दिखाकर सिटी बसों को रवाना कर इसका शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि सिटी बस सेवा से शहरवासियों को सस्ती, सुलभ व सुरक्षित परिवहन सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस पहल से शहर के यातायात दबाव में कमी आएगी। साथ ही प्रदूषण घटने के साथ ऊर्जा संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

आरटीओ डॉ. गुरदेव सिंह ने बताया कि सिटी बस सेवा को चरणबद्ध तरीके से शहर के प्रमुख मार्गों पर शुरू किया जाएगा, जिससे आम लोगों, विद्यार्थियों और नौकरीपेशा लोगों को अधिक सुविधा मिलेगी।

आरटीओ कार्यालय की ओर से बसों के संचालन के लिए 6 रूट बनाए गए हैं। हालांकि शुरुआती चरण में 3 रुटों पर 12 बसों का संचालन किया जा रहा है।

इन बसों की पहचान अलग रखने के लिए सभी बसों को अलग-अलग रूट के अनुसार नंबर और रंगों में बांटा गया है। गर्मियों के सीजन में बसों का संचालन सुबह 6:30 बजे से रात 8:30 बजे तक और सर्दियों के मौसम में शाम 7 बजे तक किया जाएगा। बस का किराया भी 9 रुपये से लेकर 45 रुपये तक रखा गया है। बस सीसीटीवी कैमरे से लैस है। इस मौके पर विधायक बंशीधर भगत, राम सिंह कैड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, दीपक रावत, आईजी रिद्धिमा अग्रवाल, मुख्य विकास अधिकारी अनामिका, आरटीओ प्रवर्तन अरविंद पांडे, एआरटीओ बीके सिंह, एआरटीओ जितेंद्र आदि मौजूद रहे।

सर्किट हाउस से हल्द्वानी सिटी बस को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी। ● अमृत विचार

इन तीन रुटों पर चलाई जा रहीं बसें

बसों की पहचान के लिए सभी बसों को अलग-अलग रंग और रूट नंबर दिया गया है। रूट नंबर 1 को पीला रंग दिया गया है। इस रूट की बसें रानीबाग-काठगोदाम-तिकोनिया-रोडवेज-मुखानी-कठघरिया-फतेहपुर-लामाचौड़ मार्ग पर चलेंगी, जिस दौरान करीब 45 किमी. की दूरी तय करेंगी।

रूट नंबर 2 की बसों को नीला रंग दिया गया है। जिसके तहत बसें काठगोदाम बस स्टेशन-नरीमन चौराहा-स्टेडियम-तीनपानी-गोरापड़ाव-पीलीकोठी-मुखानी-बस स्टैंड मार्ग पर चलेंगी। जिस दौरान करीब 33 किमी. दूरी तय होगी। इसी तरह रूट नंबर 3 पर हरे रंग की बस चलेंगी। जो देवलचौड़-गैस गोदाम-मुखानी-कालाढूंगी चौराहा-बस स्टैंड मार्ग पर चलेंगी। इस दौरान बसें 12 .2 किमी. की दूरी तय करेंगी।

ऑटोरिक्शा व अन्य लोकल सार्वजनिक वाहन से किफायती होगा सफर

सिटी बस का किराया आम आदमी को ध्यान में रखकर औसत रखा गया है। बसों का किराया प्रति किमी. के अनुसार निर्धारित किया गया है। जहां ऑटोरिक्शा में 3 से 5 किमी. तक का किराया न्यूनतम 15 रुपये निर्धारित है। इससे ऊपर 20 से लेकर 30 रुपये तक दूरी के अनुसार तय है। साथ ही 10 से 15 किमी. की दूरी के रूट पर चलते हैं। वहीं, सिटी बस में पहले 2 किमी. तक 9 रुपये किराया रखा गया है। यात्रियों को 2 से अधिक लेकिन 6 किमी. तक का सफर तय करने के लिए 12 रुपये खर्च करने होंगे। सबसे खास बात है कि बसों के रूट इस तरह से बनाए गए हैं कि ये शहर का अधिकांश प्रमुख हिस्सा इसमें शामिल हैं।

सिटी बस की किमी. के अनुसार निर्धारित किराया सूची

6 से अधिक लेकिन 10 किमी. तक 18 रुपये

10 से अधिक लेकिन 14 किमी. तक 25 रुपये

14 से अधिक लेकिन 19 किमी. तक 30 रुपये

19 से अधिक लेकिन 24 किमी. तक 35 रुपये

24 से अधिक लेकिन 29 किमी. तक 40 रुपये

29 किमी. से अधिक 45 रुपये

जीतपुर नेगी में निरीक्षण करते मंत्री सुबोध उनियाल, साथ में मेयर गजराज बिष्ट।

हर दा अब घर में बैठकर करें राम भजन : उनियाल

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : विधानसभा चुनाव अभी दूर है लेकिन सत्ता-विपक्ष में जुबानी जंग छिड़ गई है। कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने पूर्व सीएम हरीश रावत पर तंज कसा है कि अब उन्हें घर में आराम करना चाहिए, राम भजन करना चाहिए।

मंगलवार को हल्द्वानी पहुंचे मंत्री उनियाल ने पत्रकारों से बातचीत में पूर्व सीएम रावत पर हमला बोला। कि हरीश रावत कभी साथ नहीं रहे। यदि वह साथ होते तो छोड़ने की नौबत ही क्यों आती। बेशक हम एक राजनैतिक दल में जरूर लेकिन वह कभी साथी नहीं रहे। दुष्ट लोगों के साथ हमारे अच्छे संबंध नहीं होते हैं। कहा कि अब पूर्व सीएम रावत की उम्र हो गई है। उनकी वामप्रस्थ की उम्र है, घर में आराम कीजिए। यदि उन्होंने मेरी यह सलाह मान ली होती तो कम से कम तीन चुनाव में हार का सामना नहीं करना पड़ता। वर्ष 2017 के चुनाव में भी उनसे कहा था कि संन्यास ले लीजिए, फिर वर्ष 2022 में भी संन्यास लेने के लिए कहा लेकिन वह (हरीश रावत) नहीं माने और चुनाव हार गए। अब मेरी सलाह है कि अब उन्हें घर में आराम करना चाहिए और राम का भजन करना चाहिए।

जीतपुर नेगी का भी किया निरीक्षण

कैबिनेट मंत्री उनियाल ने जीतपुर नेगी में वन भूमि के अड़ंगे की वजह से सड़क और नाले निर्माण में आ रही दिक्कतों को लेकर स्थलीय निरीक्षण किया। क्षेत्रवासियों ने उनियाल को समस्याएं बताईं। उन्होंने वन अधिकारियों से वार्ता की और समस्याओं के समाधान के निर्देश दिए। इस पर मेयर गजराज बिष्ट ने उनका आभार जताया।

शुद्ध घी से बनाकर आंचल बेचेगा लड्डू, गुलाब-जामुन

● दीपावली में मिठाई बाजार में आंचल बनाएगा पकड़

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: दीपावली त्योहार पर मिठाई की बिक्री में जबरदस्त उछाल आता है। अब बाजार में खुली मिठाई के साथ ही पैक्ड मिठाई का भी चलन बढ़ रहा है। इस बढ़ रहे बाजार में आंचल भी अपनी पैठ बना रहा है। इस बार दीपावली में आंचल चार तरह की मिठाई के साथ बाजार में उतरेगा और बड़े ब्रांडों को टक्कर देगा।

नैनीताल दुग्ध संघ के अनुसार आंचल ब्रांड को और भी व्यापक बनाया जा रहा है। आंचल मावा, पनीर, दूध, क्रीम, मक्खन, छांछ, दही, आइसक्रीम के लिए जाना जाता है तो वहीं अब आंचल ब्रांड की पैक्ड मिठाई भी बनाई जाएंगी। आंचल पंजीरी लड्डू, आंचल बेसन लड्डू, आंचल रसगुल्ला और आंचल गुलाब जामुन को बाजार में उतारा गया है। आंचल पंजीरी लड्डू वजन 400 ग्राम का मूल्य 260 रुपये है। इसी तरह आंचल बेसन लड्डू वजन 400 ग्राम का बाजार मूल्य 300 रुपये, आंचल रसगुल्ला वजन एक किलो बाजार मूल्य 220 और आंचल गुलाब-जामुन वजन एक किलो बाजार मूल्य 230 रुपये रखा गया है। सामान्य प्रबंधक अनुराग शर्मा के अनुसार इन मिठाई का निर्माण आंचल अपने बनाए शुद्ध घी से करेगा। इनकी बिक्री में एजेंट को अच्छा मुनाफा दिया जा रहा है।

बढ़ता जा रहा है बाजार

पिछले कुछ सालों से पैक्ड मिठाई का बाजार बढ़ता जा रहा है। इस बाजार में हल्दीराम, बिकानो, बीकानेर वाला, बाबाजी आदि ब्रांड बाजार में मौजूद हैं। इन ब्रांडों के बीच आंचल को अपनी पहचान बनानी है। यह ब्रांड राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं तो वहीं आंचल को स्थानीय ब्रांड होने का लाभ भी मिलता है। जानकारों का कहना है कि आंचल ब्रांड की बिक्री बढ़ने से स्थानीय स्तर पर रोजगार में बढ़ोत्तरी होती है।

मारपीट पर इंजीनियर ने दी थाने में तहरीर

हल्द्वानी : 13 बीघा नलकूप संचालक की पत्नी ने पड़ोस में रहने वाले लोगों पर मारपीट का आरोप लगाया है। जल संस्थान के सहायक अभियंता रविंद्र कुमार ने बनभूलपुरा थाने में तहरीर दी है। कहा कि आए दिन लड़ाई-झगड़ा करने से नलकूप के संचालन में भी प्रभाव पड़ रहा है। इधर, नलकूप संचालक अलीम अहमद की पत्नी का आरोप है कि सामने रहने वाला परिवार नलकूप परिसर में गंदगी फैला देते हैं। समझाने पर सामने वाली महिला पति और बेटे को लेकर मारपीट करने के लिए पहुंच जाती है। आरोप लगाया, नलकूप में आग लगाने की भी धमकी दी गई है। बीते माह कुछ लोग नलकूप परिसर में बने घर में घुसकर मारपीट व जान से मारने की धमकी दी है। इस नलकूप से इंदिरा नगर समेत अन्य क्षेत्रों में आपूर्ति की जाती है जिससे नलकूप संचालन में विपरित प्रभाव पड़ रहा है।

त्वरित समाधान, समयबद्धता प्राथमिकता

संवाददाता, नैनीताल

● नवागत डीएम ललित मोहन रयाल ने संभाला कार्यभार, कहा- शासन की योजनाएं-नीतियां आम जन तक पहुंचाना प्रथम जिम्मेदारी

अमृत विचार: जनपद के नये जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने मंगलवार को अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया है। उन्होंने सर्वप्रथम कोषागार नैनीताल पहुंचकर अभिलेखों, स्टाम्पों एवं संबंधित दस्तावेजों का परीक्षण किया और औपचारिक रूप से कार्यभार संभाला।

कार्यभार ग्रहण करने के उपरांत जिलाधिकारी रयाल ने कहा कि जनता से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाओं और नीतियों को प्रभावी ढंग से आमजन तक पहुंचाना प्रशासन की पहली जिम्मेदारी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिले में पर्यटन सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ करना, ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू बनाना, तथा विकास कार्यों को समयबद्धता से पूर्ण करना उनकी शीर्ष प्राथमिकताओं में रहेगा। उन्होंने कहा कि नैनीताल जिले में आने वाले पर्यटकों को सुगम और सुरक्षित सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाएगा। साथ ही वर्तमान में चल रहे विकास कार्यों की लगातार मॉनिटरिंग कर उन्हें निर्धारित समय सीमा में पूरा किया जाएगा।

इसके उपरांत जिलाधिकारी ने कार्यालय सभाकक्ष में मुख्य विकास अधिकारी और राजस्व विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर जिले में विकास एवं राजस्व कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनसमस्याओं का समाधान पारदर्शिता और संवेदनशीलता के साथ करें तथा सरकार की

जनकल्याणकारी योजनाओं को तेजी से क्रियान्वित करें। कहा कि जनता से मिलने का समय तय करें, संवाद बनाए रखें और प्रत्येक कार्य को उत्साह एवं जिम्मेदारी से पूरा करें। उन्होंने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देश दिए कि ग्राम्य विकास, कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, समाज कल्याण, बाल विकास, एवं पंचायतीराज विभागों की योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों को समय पर मिले, यह सुनिश्चित किया जाए।

जिलाधिकारी ने पंचायतीराज एवं नगर विकास विभाग को निर्देश दिए कि जन्म एवं मृत्यु प्रमाणपत्र समय पर जारी किए जाएं तथा यूसीसी प्रमाणपत्रों से संबंधित कार्यों की भी नियमित समीक्षा की जाए। उन्होंने सभी उपजिलाधिकारियों को न्यायालयों में लंबित वादों के निस्तारण में तेजी लाने और राजस्व विरासत के प्रकरणों का निस्तारण राजस्व मैनुअल के अनुसार समय पर करने के निर्देश दिए। इससे पूर्व नवागंतुक जिलाधिकारी के जनपद आगमन पर कलेक्ट्रेट परिसर में पुलिस द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कार्यभार संभालने के उपरांत विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। इस दौरान सीडीओ अनामिका, एडीएम विवेक राय, शैलेंद्र सिंह नेगी, सचिव जिला विकास प्राधिकरण विजय नाथ शुक्ल, उपजिलाधिकारी प्रमोद कुमार, परितोष वर्मा, रेखा कोहली, राहुल वर्मा, बीसी. पंत, नवाजिश खलिक, मुख्य कोषाधिकारी कमलेश भंडारी मौजूद रहे।

पाक से युद्ध लड़े वीर सैनिक पंत का निधन

हल्द्वानी : 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध में देश की सेवा में बहुमूल्य योगदान देने वाले सर्वोदय विहार हल्द्वानी निवासी वीर सैनिक जीवन चंद्र पंत का 87 वर्ष की आयु में सोमवार को निधन हो गया। 13 अक्टूबर को चित्र शिला घाट रानीबाग में उनका अंतिम संस्कार किया गया। पंत ने 15 वर्ष देश की सेवा की। वह सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते थे। उनके निधन पर पूर्व सैनिकों ने गहरा दुख जताया है। वर्तमान में उनके ज्येष्ठ पुत्र एलआईसी कार्यालय डीडीहाट में व कनिष्ठ पुत्र जिला पिथौरागढ़ में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

15 स्थानों पर छापे, आठ नमूने भरे

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: त्योहारी सीजन में खाद्य सुरक्षा विभाग ने नैनीताल जिले में 15 स्थानों पर औचक निरीक्षण किया। साथ ही संदेह के आधार पर मावा, लड्डू आदि के कुल आठ नमूने भरे गए।

तहसीलदार कुलदीप पांडेय के नेतृत्व में टीम ने मिठाई की दुकानों पर छापेमारी की। टीम ने शहर की उन दुकानों को चला जो मिठाई कारोबार को लेकर काफी मशहूर हैं। हल्द्वानी से कुल छह नमूने भरे गए हैं। टीम ने बताया कि संदेह के आधार पर दो मावा, दो पतीसा, आटा लड्डू और सूजी के नमूने लिए गए हैं। इसके अलावा जिले में अन्य स्थानों जैसे की रामनगर, कोटाबाग में छापेमारी की गई। वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी रामनगर असलम खान ने दो नमूने सब्जी मसाला और नमकीन का लिया। वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी अभय कुमार सिंह ने जनता से अपील की है कि अगर कहीं भी मिलावटी सामान बिक रहा हो या गंदगी हो तो इसकी सूचना तुरंत विभाग को दें।

मिठाई की दुकान में जांच करती खाद्य सुरक्षा विभाग टीम। ● अमृत विचार

अदालत का फैसला | सह-अभियुक्त के बयान पर भरोसा नहीं, रंगेहाथ पकड़े गए कर्मचारी की डिस्चार्ज अर्जी खारिज

राज्य कर अधिकारी बरी, कर्मी पर चलेगा केस

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : विशेष न्यायाधीश भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम सविता चमोली की अदालत ने भ्रष्टाचार के एक अहम मामले में फैसला सुनाते हुए एक अधिकारी को बरी कर दिया है। अदालत ने राज्य कर अधिकारी उम्मेद सिंह बिष्ट को आरोपों से बरी कर दिया, जबकि सह-अभियुक्त और जीएसटी मामलों का काम देखने वाले आरोपी कर्मचारी दीपक मेहता की उन्मोचन अर्जी खारिज कर दी। मेहता के खिलाफ अब भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (संशोधित 2018) की धारा 7 के तहत औपचारिक रूप से आरोप तय होंगे।

विस्तृत आदेश में उम्मेद सिंह बिष्ट को बरी करने के पीछे मुख्य कारण यह बताया कि अभियोजन पक्ष उनके खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध के लिए आवश्यक तत्व - रिश्वत की मांग और उसकी स्वीकृति का कोई ठोस, प्रत्यक्ष या परिस्थितिजन्य साक्ष्य पेश नहीं कर पाया।

अदालत ने कहा कि बिष्ट के पास शिकायतकर्ता की जीएसटी फाइल लंबित थी, लेकिन केवल फाइल लंबित होने से भ्रष्टाचार का अपराध गठित नहीं होता, जब तक कि रिश्वत की मांग साबित न हो। इसके अलावा, बिष्ट के खिलाफ संलिप्तता का एकमात्र आधार सह-अभियुक्त दीपक मेहता का पुलिस हिरासत में दिया गया बयान था।

न्यायालय ने सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि पुलिस को दिया गया ऐसा इकबालिया बयान साक्ष्य के रूप में अग्राह्य है और किसी अन्य अभियुक्त के खिलाफ आरोप तय करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। यहां तक कि विजिलेंस की प्रारंभिक गोपनीय जांच में भी बिष्ट का नाम नहीं आया था। इन सभी तथ्यों को देखते हुए, न्यायालय ने पाया कि बिष्ट के खिलाफ मुकदमा चलाने का कोई पर्याप्त आधार नहीं है, और उन्हें बरी किया जाता है।

दीपक मेहता पर मुकदमा चलेगा, रंगेहाथों की गिरफ्तारी

हल्द्वानी : इसके विपरीत, न्यायालय ने कर्मचारी दीपक मेहता की उन्मोचन अर्जी को खारिज कर दिया क्योंकि उनके खिलाफ प्रथम दृष्ट्या पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। विजिलेंस टीम ने शिकायतकर्ता मनोज जोशी से 3,000/- की रिश्वत लेते हुए दीपक मेहता को रंगेहाथों गिरफ्तार किया था। अभियोजन पक्ष ने रिश्वत के नोटों की बरामदगी, उन पर लगे फिलोपथीन पाउडर का साक्ष्य और सोडियम कार्बोनेट घोल में हाथ धोने पर घोल का गुलाबी रंग हो जाने जैसे ट्रेप से संबंधित दस्तावेजी साक्ष्य पेश किए हैं। मेहता के वकील द्वारा 'विलंब से प्राप्त अभियोजन स्वीकृति' की वैधता पर उठाए गए सवाल को अदालत ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि अभियोजन चलाने की अनुमति प्राप्त हो चुकी है और इसकी वैधता पर किसी भी आपत्ति के बाद निर्णय के स्तर पर ही तय की जाएगी, न कि आरोप तय करने के स्तर पर। इन तथ्यों को देखते हुए अदालत ने पाया कि दीपक मेहता के विरुद्ध धारा 7 भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 (संशोधित 2018) का आरोप तय करने के लिए पर्याप्त आधार है। अदालत ने आदेश दिया कि उम्मेद सिंह बिष्ट को बरी किया जाता है, जबकि दीपक मेहता के विरुद्ध 10 नवंबर 2025 को आरोप तय किए जाएंगे।

अमृत विचार

हल्द्वानी , बुधवार,15 अक्टूबर 2025

सिटी ब्रीफ

अस्पताल में सुविधाएं उपलब्ध कराए सरकार

भीमताल : राज्य आंदोलनकारी प्रेम कुलियाल ने शासन से भीमताल के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्तिथि को सुधारने की मांग की है। उन्होंने कहा यहां के अस्पताल में भीमताल के अलावा ग्राम पंचायत जंगलिया गांव, मलूवताल, हरीनगर पांडे गांव, सांगुडी गांव, सौन गांव, चांफी, अलचौना, हैडिया गांव, चैक बहेड़ी, मेहरा गांव, सूर्या गांव, सलड़ी, खैरौला, चनौती समेत अन्य ग्राम सभाओं के लोग स्वास्थ्य लाभ अर्जित करने आते हैं परंतु अस्पताल में सुविधाएं नहीं है। वहीं बताया कि खाली सिडकुल की अधिकांश भूमि बंजर है या लोगों ने रोजगार के नाम पर आवासीय भवन बनाए है और जो स्थानीय लोगों के भी नहीं है। यदि आवासीय भवन ही बनाने हैं तो उन्हें स्थानीय लोगों को आवंटित किया जाए।

गाली गलौज व घर में तोड़फोड़ करने का आरोप, केस दर्ज

नैनीताल : मल्लीताल सैनिक स्कूल क्षेत्र निवासी हेम चंद्र जोशी व गिरीश ने कोतवाली में शिकायती पत्र देते हुए कहा है कि सोमवार को लगभग शाम चार बजे उनके पड़ोस में रहने वाले एक युवक ने उन दोनों के साथ अभद्रता की। विरोध करने पर युवक गाली गलौज करने लगा। वहीं उनको मारने की भी कोशिश की। घर के दरवाजे तोड़ दिये और घर में धुसकर मारपीट करने की कोशिश की। एसएसआई दीपक बिष्ट ने बताया कि शिकायत के आधार पर मल्लीताल निवासी देवेंद्र आर्य के खिलाफ बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है।

छात्रों को एल्बेंडाजोल टेबलेट बांटी

हल्दूचौड़ : एलबीएस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़ की प्राचार्य प्रो. डॉ. सीमा श्रीवास्तव के दिशा निर्देशन में 19 वर्ष से कम आयु के कला, विज्ञान और वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों को एल्बेंडाजोल दवा खिलाई गई। यहां मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी मेघा गुरुरानी, श्वेता शर्मा, पूजा, वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. जयचंद कुमार गौतम, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अजीत कुमार सैनी, डॉ. सरोज पंत, डॉ. कमला पांडे, डॉ. मनोज कुमार जोशी, डॉ. गीता तिवारी पाण्डे, डॉ. हेम चन्द्र पाण्डे, डॉ. भगवती देवी, डॉ. मनोज कुमार पंत, डॉ. रीता दुर्गापाल, डॉ. मंजू जोशी, डॉ. आर.के.सनवाल, डॉ. हेमलता गोस्वामी, डॉ. पप्पू सागर आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड क्रांतिदल का दो दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन शुरू, पार्टी के वरिष्ठ नेता काशी सिंह ऐरी ने भी की शिरकत

अब राज्य को बचाने के लिए संघर्ष की जरूरत : जंतवाल

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: उत्तराखंड राज्य का दो दिवसीय महाधिवेशन पीरुमदारा स्थित एक वेंकट हाल में शुरू हो चुका है। द्विवार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन वरिष्ठ नेता काशी सिंह ऐरी, पूर्व विधायक पुष्पेंद्र त्रिपाठी, दल के पूर्व अध्यक्ष पूरन सिंह कठायत ने संयुक्त रूप से किया। दल के वरिष्ठ नेता काशी सिंह ऐरी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि विधान सभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए दल को मजबूती के साथ आगे बढ़ाना है। इसके लिए दल की रीति और नीति को जनता तक पहुंचाना आवश्यक है। पूर्व विधायक डॉ. नारायण सिंह जंतवाल ने कहा कि पहले उक्रांद ने राज्य निर्माण के लिए लड़ाई लड़ी, अब जैसे हालात हैं उस हिसाब से अब राज्य को बचाने के लिए लड़ाई लड़नी होगी ओर इसके लिए उक्रांद की युवा ब्रिगेड को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उक्रांद के वरिष्ठ नेता काशी सिंह ऐरी।

पूर्व विधायक पुष्पेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि जिस राज्य की अवधारणा के लिए उक्रांद सड़कों पर उतरा सरकारों ने उसके मायने ही बदल दिए। भ्रष्टाचार, युवाओं की नौकरियों में घोटाले, महिलाओं के साथ अन्याय जैसे कई मुद्दे हैं जिनके लिए हमें मिलकर आगे आना ही ही होगा। जनता तक अपनी पकड़ बनाने के लिए कड़े संघर्ष की जरूरत है। कार्यक्रम का आयोजन दल के केंद्रीय उपाध्यक्ष एवं राज्य आंदोलनकारी इन्द्र सिंह मनराल के निर्देशन में पूर्व अध्यक्ष पूरन सिंह कठायत की अध्यक्षता में सम्पन्न अधिवेशन के पहले दिन अधिवेशन में वक्ताओं ने संगठन की सुदृढ़ता, कार्यकर्ताओं की भूमिका, युवाओं की भागीदारी, भविष्य की कार्ययोजना और दल की एकजुटता जैसे विषयों पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर लंबे समय से सक्रिय कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का समापन संगठन की एकता और जनसेवा के संकल्प के साथ हुआ।अधिवेशन का संचालन सुशील उनियाल और किरण रावत द्वारा किया गया। इस दौरान खड़क सिंह बगड़वाल, मोहिनी बंगारी, विजया ध्यानी, भुवन जोशी, एसपी जुयाल, सुशील उनियाल, प्रताप चौहान, देवेंद्र चंद्र उत्तराखंडी, शशि बरगवाल, युद्धवीर सिंह, देवदत्त शर्मा, रामेश्वरी चौहान, चंद्र शेखर पुनेठा समेत प्रदेश भर से आए लगभग पांच सौ कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खाद्य विभाग ने मिठाई की दुकानों का किया निरीक्षण

संवाददाता, कोटाबाग

अमृत विचार: खाद्य विभाग ने मंगलवार को कोटाबाग बाजार के एक दर्जन मिठाई व किराने के प्रतिष्ठानों का सघन निरीक्षण किया। जिससे दुकानदारों में हडकंप मचा रहा। खाद्य अधिकारी असलम खान ने कारोबारियों से गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री को विक्रय करने, बिना बिल के खरीद न करने और प्रतिष्ठान में नियमित रूप से साफ सफाई के विशेष निर्देश दिए। दो किराने की दुकान से जनहित में प्रयोगशाला विश्लेषण के लिए सब्जी मसाला व नमकीन के नमूने लिए गए।

निरीक्षण करते खाद्य अधिकारी असलम खान।

वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी असलम खान ने बताया आगामी दीपावली त्योहार को लेकर विभाग द्वारा विशेष सतर्कता बरती जा रही है। किसी भी सूरत में मिलावटी खाद्य सामग्री का विक्रय नहीं होने दिया जाएगा और ऐसा करने वालों के खिलाफ विभाग सख्त से सख्त कार्यवाही करेगा। कहा आयुक्त के निर्देश पर जनपद में संयुक्त टीमों का गठन किया गया है। जो प्रतिदिन कार्यवाही कर रही है जिसकी रिपोर्ट आयुक्त कार्यालय को भेजी जा रही है।

उत्तराधिकार प्रकरणों का त्वरित निस्तारण हो: रयाल

जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने जिले के सभी तहसीलदारों को निर्देश किए जारी, कहा-निर्विवाद प्रकरण में न हो अनावश्यक देरी

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने जिले के सभी तहसीलदारों को निर्देश जारी करते हुए कहा कि प्रायः देखा जाता है कि तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार के न्यायालयों में गैर विवादित नामांतरण की भू-राजस्व अधिनियम 1901 की धारा-34 के प्रकरण अत्यधिक संख्या में लंबित हैं, जिसके परिणामस्वरूप आरओआर (खतौनी) को अद्यतन रखा जाना सम्भव नहीं हो पा रहा है साथ ही क्रेता को अंतरण के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले विधिक अधिकार एवं लाभ से वंचित होना पड़ रहा है।

यह स्थिति अत्यंत खेदजनक है। जबकि अंतरण की सूचना उप निबन्धक के स्तर से तहसीलदार को अंतरण की तिथि को ही प्राप्त होने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त क्रेता, लेखपाल, पटवारी के स्तर से भी अन्तरण की सूचना प्राप्त होने पर उत्तर प्रदेश देवेन्यू कोर्ट मैन्युअल के पैरा-ए-373 में वर्णित उद्घोषणा को उत्तर भू-राजस्व अधिनियम, 1901 की धारा-197 के अनुसार तहसीलदार न्यायालय से जारी कर तामीली उपरान्त निर्धारित 30 दिन, जो कि व्यवहार में 35 दिन की समय सीमा के अन्दर आपत्ति प्राप्त न होने पर अन्तरण के सम्बन्ध में नामान्तरण आदेश किये जाने की व्यवस्था है।

नवनियुक्त जिला अधिकारी का स्वागत करते हुए भीमताल के जनप्रतिनिधि।

उद्घोषणा में वर्णित अवधि में उद्घोषणा के अन्तर्गत उल्लिखित भूमि के सम्बन्ध में आपत्ति प्राप्त होने पर सुनवाई का पर्याप्त अवसर देकर नामांतरण आदेश किये जाने की व्यवस्था है। यहां यह भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि नामांतरण की कार्यवाही अर्द्धन्यायिक प्रकिया है जिसमें पक्षकारों को स्वतः दिये जाने की व्यवस्था नहीं है।

मूलतः नामांतरण का उद्देश्य खतौनियों को अद्यतन रखे जाने तथा भू राजस्व निर्धारण से सम्बन्धित है। इस संबंध में जिलाधिकारी ने सभी तहसीलदारों को आदेश जारी करते हुए कहा कि जनहित में गैर विवादित नामांतरण के प्रकरणों को निर्धारित व्यवस्था के अंतर्गत निर्धारित समय सीमा के अंदर निस्तारित किया जाना सुनिश्चित करें। साथ ही विवादित प्रकरणों में भी त्वरित सुनवाई कर निस्तारण सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि उक्त आदेशों में किसी भी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी।

डीएम का स्वागत करते हुए क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराया

भीमताल : क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों ने नवनियुक्त जिला अधिकारी ललित मोहन रयाल से नैनीताल में मुलाकात कर उनका स्वागत किया। उन्होंने जिलाधिकारी को क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराया। सामाजिक कार्यकर्ता नितेश बिष्ट के नेतृत्व में मिले शिष्ट मंडल ने भीमताल की सड़कों पर विशेष चर्चा करते हुए बताया कि क्षेत्र की सड़कों के लिए शासन के द्वारा हर वर्ष करोड़ों की धनराशि स्वीकृत की जाती है इसके बावजूद हर वर्ष सड़क चलने के लायक भी नहीं रहती है। वहीं दूसरी तरफ उन्होंने लेक कार्निवल, पानी व स्वास्थ्य आदि की समस्याओं से भी अवगत कराया। जिलाधिकारी ने शीघ्र ही सार्थक कार्रवाई का आश्वासन दिया। मुलाकात करने वालों में मनोज दुर्गापाल व विक्रम कंडारी आदि लोग मौजूद थे।

अब चौपाल में ही होगा विरासतन का फैसला

संवाददाता, नैनीताल

- जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने दिए सख्त निर्देश

अमृत विचार: जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने जनहित में विरासतन नामांतरण प्रकरणों के त्वरित निस्तारण को जनपद के सभी उप जिलाधिकारियों, तहसीलदारों तथा राजस्व अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं।

उन्होंने कहा कि भूमि स्वामी के निधन के उपरांत विरासत नामांतरण के प्रकरणों में अनावश्यक विलंब अस्वीकार्य है, क्योंकि इससे खातेदारों को सरकारी योजनाओं, मुआवजे आदि का समय पर लाभ नहीं मिल पाता। उन्होंने निर्देश दिए कि अधिकारी राजस्व ग्रामों में चौपाल लगाकर लंबित विरासत नामांतरण प्रकरणों का स्थलीय स्तर पर निस्तारण सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भूमि राजस्व अधिनियम-1901 की धारा 33 के तहत यदि मृतक खातेदार के उत्तराधिकारी के संबंध में कोई विवाद नहीं है, तो नामांतरण की प्रक्रिया तत्काल प्रारंभ की जाए और संबंधित अभिलेखों में प्रविष्टि कर 30 दिवस के भीतर पूर्ण निस्तारण किया जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जहां किसी भूमि पर व्यक्तिगत या कानूनी विवाद पाया जाए, वहां तत्काल जांच की जाए और आवश्यकता पड़ने पर प्रकरण तहसील स्तर पर सुनवाई को भेजा जाए। जिलाधिकारी ने सभी उपजिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि राजस्व अधिकारी आगामी 20 दिनों के भीतर सभी ग्रामों में चौपाल आयोजित करें और जनता को विरासत नामांतरण संबंधी प्रक्रिया से अवगत कराएं। साथ ही प्रत्येक तहसीलदार यह सुनिश्चित करें कि विरासत नामांतरण के सभी गैर विवादित प्रकरणों का शीघ्र एवं पारदर्शी निस्तारण किया जाए।

अर्णव को मिला बेस्ट स्पीकर का पुरस्कार

नैनीताल : कुमाऊं विश्वविद्यालय, डीएसबी परिसर के छात्र अर्णव त्रिपाठी ने राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उन्हें 'बेस्ट स्पीकर' के रूप में 10 हजार का पुरस्कार प्रदान किया गया। आरटीआई सप्ताह के अवसर पर दून विश्वविद्यालय, देहरादून में आयोजित की गई थी, जिसमें राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। अर्णव त्रिपाठी ने अपने तार्किक दृष्टिकोण, सटीक अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुति से निर्णायक मंडल को प्रभावित किया और सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किए गए।

कुमाऊं विवि के कुलपति प्रो. (कर्नल) दीवान एस रावत ने अर्णव त्रिपाठी की इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता विवि की उस शैक्षणिक संस्कृति का परिणाम है। प्रो. नीता बोरा शर्मा, निदेशक, डीएसबी परिसर, प्रो. संजय पन्त, डीन स्टूडेंट वेलफेयर, डॉ. एमएस. मन्द्रवाल, कुलसचिव, प्रो. ललित तिवारी सहित अन्य प्राध्यापकों ने भी अर्णव त्रिपाठी को शुभकामनाएं दीं हैं।

उप जिला चिकित्सालय बनाने की मांग

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र में भीमताल विधानसभा में स्वास्थ्य समस्याओं देखते हुए जिला मंत्री प्रकाश भट्ट मनोज के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने मुख्यमंत्री पुष्कर धामी से मुलाकात कर उनसे भीमताल में उप जिला चिकित्सालय खोने की मांग की।

उन्होंने मुख्यमंत्री को तीन सूत्रीय मांग पत्र भी सौंपा। ज्ञापन में बताया कि भीमताल ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले दुर्गम और दूरस्थ पर्वतीय विकासखंड के साथ-साथ भीमताल ब्लॉक देवीधुरा, धारी, रामगढ़, ओखलकांडा, शहर फाटक, नौकुचियाताल, जंगलिया गांव व पलड़ा बबियाड़ आदि क्षेत्रों के मध्य में स्थित है। जहां की अनुमानित एकत्र आबादी डेढ़ लाख के आसपास है। बताया कि क्षेत्र की आबादी को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए एक मात्र हल्द्वानी ही माध्यम है। ग्रामीण क्षेत्र से हल्द्वानी शहर अत्यंत दूर होने की वजह से ग्रामीण अंचल के मरीजों को समय पर प्राथमिक उपचार भी नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि भीमताल ब्लॉक में स्थित जिला स्तरीय विकास भवन के 52 विभागों के कार्यालय और केंद्रीय कार्यालय तथा उच्च शिक्षण संस्थान कुमाऊं विवि, निजी शैक्षणिक संस्थान भी स्थापित हैं। इन संस्थानों में सैकड़ों की संख्या में कर्मचारी के साथ-साथ विद्यार्थी भी आवासीय भवन में रहते हैं। जिसके चलते भीमताल ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले समस्त क्षेत्रीय व ग्रामीण जनता की मांग को देखते हुए उप जिला अस्पताल का निर्माण करवाने की है। सीएम ने सकरात्मक कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

मुख्यमंत्री का स्वागत करते जिला मंत्री व अन्य भाजपा कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

कला उत्सव में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

भवाली: राउमावि मेहरागांव में खंड स्तरीय कला उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भीमताल विकास खंड के अधिकांश विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में गायन, वादन, चित्रकला, मूर्तिकला, नाटक, चित्रकारी व पारम्परिक कहानी की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

मुख्य अतिथि होटल एसोशिएशन के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद कपिल व विशिष्ठ अतिथि राजकीय शिक्षक महासंघ के ब्लाक अध्यक्ष हरिशंकर कांडपाल रहे। नोडल अधिकारी प्रकाश नदगली व मंच संचालन डॉ. प्रदीप उपाध्याय ने किया। प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। कला उत्सव समन्वयक अंजना पंत, शबनम, सरोजनी पांडे, अंजना पंत, शशि बाला आदि रहे।

छापेमारी के विरोध में लामबंद हुए दवा विक्रेता

- छापेमारी न रुकने पर दी आंदोलन की चेतावनी

संवाददाता, लालकुआं

अमृत विचार: लालकुआं केमिस्ट क्लब की सम्पन्न बैठक में ड्रग कंट्रोल विभाग व प्रशासन की मेडिकल स्टोरों पर की जा रही छापेमारी के खिलाफ दवा विक्रेता लामबंद होने लगे हैं। यहां हुई बैठक में दवा विक्रेताओं ने अनावश्यक छापेमारी पर रोक नहीं लगने की दशा में केमिस्ट क्लब प्रदेश केमिस्ट संघ के आह्वान पर प्रदेश व्यापी आंदोलन की चेतावनी दी है।

केमिस्ट संघ के जिला अध्यक्ष राजकुमार सेतिया की अध्यक्षता में हुई बैठक में वक्ताओं ने कहा कि बीते दिनों मध्य प्रदेश में बच्चों की कफ सिरप से हुई असमय मृत्यु के बाद उत्तराखंड में फुटकर दवा विक्रेताओं पर ड्रग विभाग, पुलिस और अन्य विभागों की ओर से की जा रही कार्यवाही पर चर्चा की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि प्रशासन की इस प्रताड़ना के विरोध में लालकुआं एवं बिंदुखत्ता के समस्त मेडिकल स्टोर स्वामी एकजुट होकर पूर्ण समर्थन देंगे। साथ ही बैठक में वीते दिनों मध्य प्रदेश में हुई बच्चों की मौत पर शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हुए दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की गई।

लालकुआं में बैठक करते केमिस्ट एसोसिएशन के सदस्य।

बैठक में केमिस्ट एसोसिएशन ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि प्रशासन ने दवा विक्रेताओं को परेशान करना जारी रखा तो वे प्रदेशव्यापी आंदोलन को मजबूर होंगे। बैठक में इस बात पर भी जोर दिया गया कि जो दवाएं प्रतिबंधित हैं उन्हें बाजार में उपलब्ध कराने से पूर्व उनके उत्पादन पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। दवा कारोबारी व फार्मासिस्टों का कहना है कि बार-बार की प्रताड़ना से बेहतर है कि हमें रोजगार दिया जाए। बैठक में डॉ. राजकुमार सेतिया जिला अध्यक्ष, आशीष भाटिया नगर महामंत्री, हरीश बिसोती, अनीश अहमद, अनिल गिरधर, फार्मासिस्ट पूरन बोरा, फार्मासिस्ट पंकज शर्मा, फार्मासिस्ट नीरज जोशी, फार्मासिस्ट अर्पित बिसोती, फार्मासिस्ट राजकरण सेतिया, फार्मासिष्ट मीनल गुप्ता, गोधन सिंह बोरा,अनवर अली आदि ने शिरकत की।

कार्यक्रम | सैनिक स्कूल घोड़ाखाल में हीरक जयंती पर हुए कार्यक्रम, मनाया सांस्कृतिक विविधता का उत्सव

अंतर-विद्यालयी लोकनृत्य में सैनिक स्कूल घोड़ाखाल अव्वल

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: सैनिक स्कूल घोड़ाखाल में चल रहे हीरक जयंती समारोह के उपलक्ष्य में रविवार को अंतर-विद्यालय लोकनृत्य प्रतियोगिता का रंगारंग आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के 15 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया और भारत की विविध लोकनृत्य शैलियों की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का दिल जीत लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. हरीश रौतेला, विशिष्ट अतिथि भाजपा के वरिष्ठ नेता व समाजसेवी हेम आर्या तथा प्रथम महिला श्वेता डंगवाल ने दीप जलाकर किया। छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत कर पूरे सभागार को भक्तिमय वातावरण से भर दिया। प्रतियोगिता में अशोक हॉल गर्ल्स रेजिडेंशियल स्कूल रानीखेत, आर्मी पब्लिक स्कूल रानीखेत, भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय नैनीताल, जवाहर नवोदय विद्यालय, मोहन लाल शाह बालिका विद्या मंदिर नैनीताल, ग्रीन माउंट ग्लोबल स्कूल भीमताल, सनवाल स्कूल नैनीताल, नैन्सी कॉन्वेंट स्कूल नैनीताल, हर्मन माइनर स्कूल भीमताल, पीएम अटल उत्कृष्ट राजकीय मॉडल इंटर कॉलेज पटलोट, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खनस्यूं (ओखलकांडा), निर्मला कॉन्वेंट स्कूल गेठिया, डेविटो स्कूल भवाली, लेक्स इंटरनेशनल स्कूल भीमताल और आयोजक सैनिक स्कूल घोड़ाखाल की टीमें शामिल रहीं। कार्यक्रम सुमन निर्मल मिंडा फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरुकता, भारतीय लोक परंपराओं के प्रति सम्मान तथा "विविधता में एकता" की भावना को प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सैनिक स्कूल घोड़ाखाल, द्वितीय स्थान मोहन लाल शाह बालिका विद्यालय नैनीताल, तथा तृतीय स्थान लेक्स इंटरनेशनल स्कूल भीमताल ने प्राप्त किया। वहीं निर्मला कॉन्वेंट स्कूल को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विशेष उपहार प्रदान किया गया।मुख्य अतिथि डॉ. हरीश रौतेला ने विजेता टीमों को प्रमाणपत्र व पुरस्कार वितरित किए। उन्होंने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजन विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, टीम भावना और भारतीय संस्कृति के प्रति गर्व का भाव जागृत करते हैं। प्रधानाचार्य ग्रुप कप्तान विजय सिंह डंगवाल ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट कर आभार व्यक्त किया।

ट्रॉफी के साथ सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के बच्चे। ● अमृत विचार

सैनिक स्कूल व ऑल सेंट कॉलेज सेमीफाइनल में

नैनीताल : ऑल सेंट्स कॉलेज में आयोजित 12वीं अंतर विद्यालयीय बालिका बास्केटबॉल प्रतियोगिता में ऑल सेंट्स कॉलेज रेड टीम और सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के बीच खेला गया, जिसमें सैनिक स्कूल घोड़ाखाल ने एकतरफा प्रदर्शन करते हुए 24-2 से जीत दर्ज की। विजेता टीम की ओर से कविता गुप्ता ने 8 तथा तनुजा बिष्ट ने 7 अंक अर्जित किए। दूसरा मैच ऑल सेंट्स कॉलेज की व्हाइट टीम और सेंट मेरीज कॉन्वेंट कॉलेज नैनीताल के बीच खेला गया। यह मुकाबला कड़ा रहा ऑल सेंट्स कॉलेज व्हाइट टीम ने 10-8 से जीत अपने नाम की। विजेता टीम की अनन्या पिमोली ने सबसे अधिक 8 अंक बनाए, जबकि नंदिनी बिष्ट ने 2 अंक जोड़े। सेंट मेरीज की ओर से तरनप्रीत कौर ने 6 अंक का योगदान दिया।

वन ग्रामों को राजस्व ग्राम का दर्जा देने की मांग को लेकर गरजे ग्रामीण

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: मालिकाना हक संघर्ष समिति के बैनर तले सैकड़ों लोगों ने वन ग्रामों एवं खत्तों को राजस्व गांव बनाने के साथ यहां पर वर्षों से रह रहे ग्रामीणों को मूलभूत सुविधाएं देने की मांग को लेकर सरकार के खिलाफ सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन किया। उन्होंने एसडीएम के माध्यम से प्रदेश के मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा है। उन्होंने चेतावनी दी की यदि दो माह के भीतर उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन किया जाएगा।

समिति के अध्यक्ष एस लाल ने कहा कि आज वन ग्राम में रहने वाले लोग सड़क बिजली पानी स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। उन्होंने कहा कि यहां पर रहने वाले ग्रामीणों को विधायक और सांसद चुनने का तो अधिकार है लेकिन यह लोग अपना ग्राम प्रधान नहीं चुन सकते हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान वोट मांगने के लिए आने वाले विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के लोग चुनाव में वादे करते हैं लेकिन चुनाव जीतने के बाद जनता से किए वादे भूल जाते हैं। उन्होंने कहा कि यदि जरूरत पड़ी तो वह इन चुनावों का बहिष्कार भी करेंगे। सभा में मौजूद ग्रामीणों ने सरकार पर अपनी उपेक्षा का आरोप लगाते हुए नाराजगी व्यक्त की।इस दौरान मलिकाना हक संघर्ष समिति के अध्यक्ष एस लाल, ग्राम प्रधान मोहम्मद ताहिर, तुलसी देवी, ललित कड़कोटी, पुष्कर लाल, राम सिंह, रवि कुमार, किशोर कुमार, बालम सिंह, भूपाल सिंह, चंदन राम, ख्याली राम, शारदा देवी व रमेश चंद्र सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहें।

मांगों को लेकर तहसील मुख्यालय पर धरना देते ग्रामीण। ● अमृत विचार

सिटी ब्रीफ

जल्द होगा कालाआगर-गलनी सड़क का निर्माण

हल्द्वानी : भाजपा के भीमताल विधायक राम सिंह कैड़ा ने बताया कि ओखलकांडा ब्लॉक में कालाआगर–गलनी –चमोली मोटर मार्ग पिछले माह आपदा से पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। लोगों को अत्यधिक परेशानियां हो रही थीं। उन्होंने कहा कि लोनिवि अधिकारियों को आपदा मद से मोटर मार्ग पर वायरक्रैट्स व दीवारों के निर्माण के निर्देश दिए। लोनिवि ने क्षतिग्रस्त मोटर मार्ग पर दीवारों का निर्माण सुधारीकरण के लिए निविदा जारी कर दी है। जल्द ही निविदा प्रक्रिया पूरी होते ही निर्माण शुरू हो जाएगा।

परीक्षाओं के मूल्यांकन की रूपरेखा पर लगी मुहर

हल्द्वानी : यूओयू की परीक्षा समिति की 20 वीं बैठक मंगलवार को कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में विवि की परीक्षाओं के मूल्यांकन को केंद्रीय मूल्यांकन नीति के अंतर्गत कराने की रूपरेखा तैयार कर उसे लागू करने की संस्तुति की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि विवि से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की उपाधियां दीक्षांत समारोह की तिथि घोषित होने के बाद विवि स्तर पर तैयार कर ली जाएंगी। बैठक में उप कुलपति जेएनयू के उप कुलपति प्रो. ब्रजेश कुमार पांडे, पंजाब विवि के उप कुलपति प्रो. योजना रावत आदि मौजूद रहे।

ऑपरेशन सेनेटाइज : सड़क पर उतरे एसएसपी, 70 हिरासत में

दीपावली से पहले हल्द्वानी के प्रमुख बाजारों में एसएसपी ने किया पैदल फ्लैग मार्च

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

त्योहारी सीजन में सुरक्षा इंतजामों का जायजा लेने दलबल के साथ सड़क पर उतरे एसएसपी प्रह्लाद नारायण मीणा। ● अमृत विचार

अमृत विचार : दीपावली से ठीक पहले सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने एसएसपी प्रह्लाद नारायण मीणा ने खुद सड़क और बाजार का रुख किया तो 70 संदिग्ध हत्थे चढ़ गए। ये सभी बेवजह बाजार में घूम रहे थे। पकड़े गए 70 संदिग्धों में 8 ऐसे भी हैं जो बाबा का वेष रखकर बाजार में घूम रहे थे। पुलिस इन सभी से पूछताछ कर रही है। एसएसपी ने कहा है कि दीपावली खुशियों का पर्व है, लेकिन सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। सभी नागरिक अनुशासन का पालन करें, भीड़भाड़ वाले स्थानों पर अपने बच्चों और कीमती सामान का ध्यान रखें। किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। अराजकता किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मंगलवार की शाम एसएसपी मीणा पूरे दलबल के साथ निकले। उन्होंने शहर के कारखाना बाजार, साहूकार बाजार, पटेल चौक, नया बाजार, बर्तन बाजार, मीरा मार्ग, सदर बाजार सहित अन्य क्षेत्रों में पैदल फ्लैग मार्च व औचक निरीक्षण किया। एसएसपी ने ऑपरेशन सेनेटाइज के तहत बाजारों में सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए अधीनस्थ अधिकारियों को सतर्क रहने और संदिग्धों पर कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए। उन्होंने दुकानदारों से बातचीत कर उनके प्रतिष्ठानों में कार्यरत बाहरी व्यक्तियों का सत्यापन अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान पुलिस ने बाजारों और गलियों में अनावश्यक रूप से घूमने वालों को चेताया और शालीनता व अनुशासन बनाए रखने की अपील की। शहर के विभिन्न बिंदुओं पर नाकाबंदी और पिकेट ड्यूटी लगाकर वाहनों और व्यक्तियों की सघन चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान कई संदिग्धों से पूछताछ की गई, जिनमें 70 व्यक्तियों को हिरासत में लिया गया, जिनमें 8 संदिग्ध बाबा भी शामिल हैं। एसपी सिटी प्रकाश चंद्र, सीओ सिटी नितिन लोहनी, सीओ लालकुआं दीपशिखा अग्रवाल, प्रभारी निरीक्षक हल्द्वानी अमर चंद्र शर्मा, यातायात प्रभारी महेश चंद्र आदि मौजूद रहे।

ज्वैलरी शॉप में लगी आग, लोगों ने बुझाई

हल्द्वानी: रामलीला मैदान के पास सुबह एक ज्वैलरी शॉप में अचानक आग लग गई। जिस वक्त आग लगी दुकान में कर्मचारी मौजूद थे। आग तेजी से भड़की, लोगों ने दमकल को सूचना दी, लेकिन कुछ ही समय में लोगों ने आग पर काबू पा लिया।

घटना पटेल चौक में रामलीला ग्राउंड के पास की है। यहां सुबह के वक्त एक प्रतिष्ठित ज्वेलर की दुकान में एकाएक आग भड़क उठी। दुकान में काम कर रहे कर्मचारी समय रहते बाहर निकल गए। आग की लपटों ने फर्नीचर व अन्य सामान राख कर दिया। दुकान स्वामी का दावा है कि एक लाख से अधिक का नुकसान हुआ है। आसपास के व्यापारियों और लोगों ने पानी डालकर बिना दमकल टीम को बुलाए आग बुझा ली। आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट बताई जा रही है। हालांकि कुछ लोगों का कहना है कि दुकान में रखा छोटा सिलेंडर फटने से आग की घटना हुई। दुकान से आग लगने के बाद निकले काले धुएं के गुबार ने लोगों में हड़कंप मचा दिया। एफएसओ एमपी सिंह ने बताया कि सूचना मिली थी। लेकिन कुछ मिनट बाद आग बुझ जाने की जानकारी भी व्यापारी ने फोन पर दे दी थी।

ग्रामीणों का ऐलान... रिंग रोड बनी तो चक्का जाम

कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत को ज्ञापन सौंपते ग्रामीण। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : रिंग रोड के विरोध में ग्रामीणों ने कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने रोड के विरोध में चक्का जाम की चेतावनी दी है।

रामपुर रोड किनारे के दर्जनों गांवों के ग्रामीण विधायक भगत के ऊंचापुल स्थित आवास पहुंचे। उन्होंने विधायक को ज्ञापन सौंपकर कहा कि प्रस्तावित रिंग रोड घनी आबादी वाले इलाकों से होकर गुजर रही है जिससे दर्जनों गांव प्रभावित होंगे। किसानों की उपजाऊ जमीनें नष्ट हो जाएंगी। पंचायत घर आनंदपुर रोड बनाने की तैयारी है, रिंग रोड का मार्ग दस से बारह गांवों की अति व्यस्त आबादी के बीच से गुजरने वाला है। ऐसे में कई छोटे-छोटे जोत वाले किसानों की जमीनें प्रभावित हो रही हैं, यह भूमि उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत हैं। रिंग रोड में भूमि जाती है तो आजीविका का संकट खड़ा हो जाएगा। विधायक भगत ने आश्वासन दिया कि वह मुद्दे को मुख्यमंत्री तक पहुंचा ग्रामीण हित में उचित कदम उठवाएंगे। यहां दलीप नेगी, त्रिलोक निगल्टिया, प्रधान ललित नेगी, नरेश बजवाल एवं जगदीश कुल्याल, बीडीसी सदस्य भूपिंदर सिंह, बालम बिष्ट, हरेंद्र दरम्वाल, आनंद पडियार, मोहन पडियार, देवेंद्र बिष्ट, रवि पडियार आदि मौजूद रहे

सीआरपीएफ ने किया शहीदों को नमन

● पुलिस उप महानिरीक्षक को दिया गार्ड ऑफ ऑनर

संवाददाता, हल्द्वानी

पुलिस उप महानिरीक्षक शंकर दत्त पांडे को गार्ड ऑफ ऑनर देते सीआरपीएफ जवान।

अमृत विचार : समूह केंद्र केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल काठगोदाम के 18वें स्थापना दिवस पर ग्रुप केंद्र में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ग्रुप केंद्र के पुलिस उप महानिरीक्षक ने की। उन्होंने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और बलिदान का स्मरण किया। क्वार्टर गार्ड में पुलिस उप महानिरीक्षक को गार्ड ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

सैनिक सम्मेलन के जरिये उन्होंने सभी जवानों और अधिकारियों को सीआरपीएफ व समूह केंद्र के गौरवशाली इतिहास व सीआरपीएफ की कल्याणकारी योजनाओं, भविष्य की योजनाओं व चुनौतियों के बारे में बताया। इस दौरान कमांडेंट लीलाधर महरानियां, पुलिस उप महानिरीक्षक चिकित्सी वीएन रॉव, सुरेंद्र देव, जेएन सिन्हा, उप कमांडेंट जोगेश कुमार, रवि कुमार सिकरवार, चंद्रशेखर जोशी, रजनी बाला, सहायक कमांडेंट आदि लोग उपस्थित रहे। संध्याकाल में बॉलीबाल व क्रिकेट मैज का आयोजन किया गया।

पेट दर्द के उपचार को पहुंची किशोरी निकली गर्भवती

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: नैनीताल के बीडी पांडे अस्पताल में पेट दर्द का उपचार कराने पहुंची किशोरी के गर्भवती होने की पुष्टी हुई है। अल्ट्रासाउंड जांच में किशोरी एक माह की गर्भवती निकली है। सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने किशोरी से पूछताछ के साथ ही जांच शुरू कर दी है। पुलिस केस दर्ज करने की कार्रवाई में जुटी हुई है।

जानकारी के अनुसार मंगलवार को भवाली कोतवाली क्षेत्र की एक किशोरी के पेट में दर्द हुआ। दर्द के उपचार के लिए किशोरी अपनी मां के साथ बीडी पांडे अस्पताल पहुंची। कारण का पता लगाने के लिए डॉक्टर ने अल्ट्रासाउंड जांच के लिए लिखा। किशोरी की अल्ट्रासाउंड जांच रिपोर्ट डॉक्टर ने देखी तो किशोरी एक माह की गर्भवती निकली। किशोरी के गर्भवती होने की खबर से मां व परिजन भारी सदमा लगा है। मामला चर्चा का विषय बन गया है। अस्पताल की सूचना के बाद पुलिस ने अस्पताल पहुंच किशोरी व उसकी मां से इस संबंध में पूछताछ की। एसपी अपराध व यातायात डॉ. जगदीश चंद्र ने बताया कि मामले में विधिक कार्रवाई की जा रही है।

नन्हें खिलाड़ियों ने दिखाया दम

संवाददाता, हल्द्वानी

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में मेडल के साथ विजयी प्रतिभागी। ● अमृत विचार

अमृत विचार: आर्यमान विक्रम बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग में वार्षिक खेल प्रतिस्पर्धा एवं फन रेस प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें नर्सरी से कक्षा द्वितीय तक के विद्यार्थियों ने फन रेस में तथा कक्षा तृतीय से पंचम तक के विद्यार्थियों ने एथलेटिक्स में भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवेश मेहरा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। फन रेस प्रतियोगिता में, क्लाउन रेस, बनी और गाजर रेस, कप एंड बॉल रेस, गेट रेडी फॉर स्कूल रेस, बॉल बैलेंसिंग रेस, हैट रेस, कप पिरामिड रेस, तथा बलून सैंडविच रेस, प्रमुख रेस रहीं। वहीं, वार्षिक खेल प्रतिस्पर्धा में विद्यार्थियों ने हर्डल रेस, हूपला रेस, रिले रेस आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रधानाचार्य तथा उप-प्रधानाचार्य प्रकाश कुमार ने विजेताओं को सम्मानित करते हुए उनकी प्रशंसा की और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। मुख्य अध्यापिका वंदना टम्टा ने भी विजेता विद्यार्थियों को पदक एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए।

पेंटिंग में कनिष्क, कृतिका तेजस और भावेश विजेता

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: शारदा संघ के तत्वावधान में आयोजित 55वीं ऑन द स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए।

शारदा संघ के महासचिव घनश्याम लाल साह ने बताया कि प्रतियोगिता विभिन्न वर्गों में आयोजित की जिसमें टिनी टॉट ग्रुप में कनिष्क नागरकोटी, वृंदावन पब्लिक स्कूल प्रथम, चैतन्य जोशी, द्वितीय, रिद्धिमा पडियार, तृतीय मिनी ग्रुप में कृतिका बिष्ट प्रथम, जैनाब द्वितीय, वेदांत पालीवाल तृतीय। सब जूनियर ग्रुप में तेजस घंस्याल प्रथम, रियांसी बिष्ट द्वितीय, रियांसी राज तृतीय, जूनियर ग्रुप में भावेश बिष्ट प्रथम, एकलव्या बिष्ट द्वितीय,आविका भाकुनी तृतीय। मिडिल ग्रुप में समारा खान प्रथम, वैभवी मेहरा द्वितीय, रोजाम बी तृतीय। सीनियर ग्रुप में कामाक्षी साकया प्रथम, दिव्यांशु रिजाल द्वितीय, प्रतिभा बिष्ट तृतीय स्थान में रही। प्रतियोगिता का समापन समारोह 16 अक्टूबर को होगा, जिसमें विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे।

एकलव्य एकेडमी का फाइनल में प्रवेश

हल्द्वानी : श्री बालकिशन देवकी जोशी मेमोरियल अंडर-13 क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में एकलव्य क्रिकेट एकेडमी ने जगह बनाई है। एकलव्य क्रिकेट एकेडमी के विभांकर पवार व नैतिक उपाध्याय की घातक गेंदबाजी ने रुद्रा लायंस की टीम को 122 रनों पर ढेर कर दिया। एकलव्य एकेडमी के मानस, भावेश और देवांश के मिले जुले प्रयासों से शानदार जीत हासिल की। विभांकर को मैन ऑफ द मैच और रुद्रा लायंस के यशवीर कंबोज को फाइटर ऑफ द मैच, बेस्ट बैट्समैन ऋषि उपाध्याय रहे। मुख्य अतिथि नवीन टम्टा ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया।

ग्रेट मिशन स्कूल का ट्रॉफी पर कब्जा

संवाददाता, रामनगर

रामनगर में पुरस्कार के साथ ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल की टीम। ● अमृत विचार

अमृत विचार: देवभूमि सहोदया द्वारा आयोजित सीबीएसई इंटर स्कूल अंडर–19 क्रिकेट टूर्नामेंट में ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल ने फाइनल मैच 70 रन से जीतकर चैंपियनशिप अपने नाम की।

प्रतियोगिता में 18 टीमों ने भाग लिया। ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल की टीम ने पूरे टूर्नामेंट में अपने अनुशासित प्रदर्शन व बेहतरीन टीमवर्क से सबका दिल जीत लिया। फाइनल मैच में टॉस जीतकर ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 30 ओवरों में 7 विकेट पर 159 रन बनाए। टीम की ओर से कैप्टन सूजल बिष्ट (53 रन) और शौर्य नेगी (51 रन) ने शानदार पारियां खेलीं। गेंदबाजी में भी टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए विरोधी टीम को मात्र 89 रन पर ऑल आउट कर दिया। सूजल बिष्ट और प्रिंस बोहरा ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 3-3 विकेट हासिल किए। सूजल बिष्ट को मैन ऑफ द मैच, जबकि शानदार बल्लेबाज़ी के लिए शौर्य नेगी को सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ के पुरस्कार से सम्मानित किया। प्राचार्या डॉ. नलिनी श्रीवास्तव, डायरेक्टर डॉ. प्रसून श्रीवास्तव ने टीम के सभी सदस्यों एवं कोच मो. दानिश को बधाई दी।

ताइक्वांडो में खिलाड़ियों ने दिखाया दम, पदक जीते

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: हल्द्वानी में 10 से 12 अक्टूबर तक आयोजित राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में नैनीताल ताइक्वांडो क्लब के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3 रजत व 2 कांस्य पदक अपने नाम किए।

क्लब की ओर से राज्य प्रतियोगिता के लिए 6 खिलाड़ियों का चयन हुआ था। इनमें लक्ष्य अधिकारी, कृतज्ञ धामी और मानसी बर्गली ने सिल्वर मेडल, जबकि भूमिका बनवाल और मानस चंद्रा ने ब्रॉन्ज मेडल जीतकर जनपद का मान बढ़ाया। खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर क्लब के कोच व सचिव विनोद कुमार को क्लब के संरक्षक एवं सांसद प्रतिनिधि गोपाल सिंह रावत, अध्यक्ष विश्वकेतु वैद्य, जिले के सचिव सुनील सिंह, अध्यक्ष चंद्र विजय सिंह बिष्ट, उच्च न्यायालय अधिवक्ता मनीष कुमार भट्ट, जगदीश बावड़ी, मनोज सिंह बिष्ट सहित सभी खेलप्रेमियों ने बधाई दी। सभी ने खिलाड़ियों व उनके परिवारजनों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

नर्सिंग विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल-कूद किए

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : स्टूडेंट नर्सेज एसोसिएशन ऑफ इंडिया और ट्रेन्ड नर्सेज एसोसिएशन ऑफ इंडिया उत्तराखंड के संयुक्त प्रयास से राजकीय मेडिकल कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता व विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरूआत हुई।

उद्घाटन चिकित्सा शिक्षा निदेशक डॉ. अजय आर्य, राजकीय नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. शबिस्ता अहमद ने की। दो दिवसीय प्रतियोगिता में राज्य के विभिन्न 15 नर्सिंग कॉलेजों के छात्र-छात्राएं प्रतिभाग कर रहे हैं। बेडू पाको बारो मासा गीत पर कुमाऊंनी नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। हरियाणवी, गुजराती, बॉलीवुड, नेपाली, पहाड़ी, दक्षिण भारतीय, मराठी एवं राजस्थानी नृत्य भी शामिल रहे। प्रभारी प्राचार्य डॉ. पंकज सिंह, एमएस डॉ. अरुण जोशी, कैंसर संस्थान निदेशक डॉ. केसी पांडे, टीएनएआई के अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा, सचिव टीएनएआई डॉ. ममता कपरवान, राजकीय नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य आशा गंगोला, अनीता अधिकारी, कांता प्रसाद, सागर आदि रहे।

शिक्षकों की कार्यशाला शुरू

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: कौशलम कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक अभिमुखीकरण कार्यशाला बीआरसी धानाचूली में आरंभ हुई। कार्यशाला का उद्घाटन खंड शिक्षा अधिकारी अंशुल बिष्ट ने किया।

कौशलम के महत्व के बारे में बताते हुए अंशुल बिष्ट जी ने बताया कि वर्तमान समय में छात्र-छात्राओं में पढ़ाई के साथ-साथ अन्य कौशल भी विकसित होनी चाहिए जिससे उन्हें स्वरोजगार से जोड़ा जा सके तथा छात्र स्वयं अपना रोजगार आरंभ कर सके। वर्तमान में यह कार्यक्रम कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की कक्षाओं में चलाया जा रहा है इस कार्यशाला में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के कौशलम समन्वयक डॉ. ज्योतिर्मय मिश्रा, कौशलम विशेषज्ञ दीपा रैक्वाल, मास्टर ट्रेनर मेनका धर्मसत्तू, और मदन मोहन पांडे आदि उपस्थित रहे।

अमृत विचार

हल्द्वानी , बुधवार,15 अक्टूबर 2025

सिटी ब्रीफ

पोस्टर प्रतियोगिता में लता ने पाया प्रथम स्थान

बाजपुर : राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आरटीआई सप्ताह के अंतर्गत मंगलवार को पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के मध्य सूचना अधिकार अधिनियम-2005 के संबंध में जागरूकता एवं जानकारी प्रदान करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रोफेसर वीके सिंह द्वारा किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में बीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा लता ने प्रथम स्थान, सलोनी एमए प्रथम सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान तथा शशि बाला बीए प्रथम सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्विज प्रतियोगिता में दिशा एमए प्रथम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान, लता जोशी एवं दीपिका ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान तथा शशि बाला तृतीय स्थान पर रही। निर्णायक मंडल में डा .विकास रंजन, डा .आदर्श चौधरी एवं डा .कैलाश रहे। कार्यक्रम का संचालन डा .मनुहार आर्य ने किया। इस मौके पर उजाला, दीपिका, लता, सलोनी आदि मौजूद रहे।

जिला विधिक शिविर में दी जेंडर संबंधी जानकारी

खटीमा : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव के निर्देश पर राजकीय पूर्व विद्यालय खिलाड़िया में लैंगिक न्याय ट्रांसजेंडर, लोगों के अधिकार, लैंगिक समानता विषय पर कैंप का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रधानाध्यापक श्रीकांत और संचालन विमल कुमार ने किया। पीएलवी विमल कुमार ने जेंडर के विषय में विस्तार पूर्वक बताया।

हाइब्रिड धान नहीं खरीदने पर दिया धरना

आक्रोशित किसान सितारगंज मंडी में धरने पर बैठे, वार्ता व सहमति के बाद आढ़तियों ने खरीदा धान

संवाददाता सितारगंज

अमृत विचार : हाइब्रिड धान 131 व 126 नहीं खरीदने से नाराज किसान मंगलवार को धरने में बैठ गए। बाद में किसानों व कच्चे आढ़तियों के बीच हुई वार्ता व आपसी सहमति के बाद कच्चे आढ़तियों ने धान खरीद लिया।

मंगलवार को रोजाना की तरह अपने ट्रैक्टर ट्रालियों से किसान धान बेचने मण्डी पहुंचे। यहां हाइब्रिड धान को कच्चे आढ़तियों ने रिजेक्ट कर दिया। आक्रोशित किसान मण्डी में ही धरने में बैठ गए। किसानों ने कहा कि पहले किसानों को हाइब्रिड धान की बीज बेचा गया। अब खरीदने से इंकार कर रहे हैं। यदि खरीदना नहीं था तो बीज नहीं बेचना चाहिए था। पांच सौ रुपये किग्रा बीज खरीदा था। व्यापारियों का कहना था कि एवरेज कम है और चावल टूट रहा है। सरकार टूटा चावल उनसे नहीं लेगी। किसानों ने कहा कि किसान अब धान बेचने कहां ले जाए। एक व्यापारी के किसानों को खाली होने के कारण धरने में बैठने की बात पर किसानों ने नाराजगी जताई। इधर, प्रशासन के हाइब्रिड बीज का धान खरीदने में चुप्पी पर भी किसानों ने नाराजगी जताई। किसानों ने कहा कि बाजार में ऐसा बीज नहीं बिकना चाहिए जिसकी उपज की बिक्री नहीं हो। किसानों ने कहा कि कम पानी खपत के कारण उन्होंने अफसरों की सलाह पर धान बोया था। हालांकि कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने किसी प्रकार की सलाह नहीं दी थी।

बाजपुर की अनाज मंडी में एसएमआई नलनीकांत का घेराव करते किसान। ● अमृत विचार

धान की तौल धीमी गति से करने पर किसानों ने किया हंगामा

बाजपुर : अनाज मंडी में मंगलवार को धान की तौल व्यवस्था को लेकर किसानों ने हंगामा कर दिया। किसानों ने आरोप लगाया कि मंडी में तौल धीमी गति से की जा रही है। इस दौरान आक्रोशित किसानों ने एसएमएआई नलनीकांत का घेराव कर अपनी समस्याएं रखीं। उनका कहना था कि क्रय केंद्रों पर किसानों का धान तौल प्रक्रिया काफी धीमी गति से चल रही है। इसके चलते केंद्रों पर किसानों की भीड़ लगी है, जबकि एसडीएम डॉ .अमृता शर्मा ने भी तौल कांटे बढ़ाए जाने के निर्देश दे रखे हैं। जिसमें प्रतिदिन 400 क्विंटल धान की तौल करने के आदेश हैं। उन्होंने मांग की है कि तौल प्रक्रिया में पारदर्शिता लाई जाए और खराब व्यवस्था को जल्द सही किया जाए। धान तौल व्यवस्था में तेजी लाने के लिए तौल कांटों की संख्या बढ़ाई गए। वहीं एसएमआई नलनीकांत का कहना है कि राइस मिलरों की वजह से दिक्कत आ रही है, किसानों का धान तौलने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने किसानों को आश्वासन दिया कि समस्या का शीघ्र समाधान किया जाएगा। इस मौके पर किसान नेता हरदेव सिंह संधू, गुरपेज सिंह, अंग्रेज सिंह, तरसेम सिंह, सतविंदर सिंह, गुरदीप लम्बरदार, सोनू लम्बरदार, गुरदीप लम्बरदार आदि किसान मौजूद रहे।

तीन श्रेणी में दिया जाएगा मुआवजा

खटीमा: नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में आठ जुलाई 2024 को अतिवृष्टि से हुई तबाही का शासन द्वारा आंकलन कर मुआवजा देने का निर्णय लिया है। शासन द्वारा निर्गत मुआवजे को तीन कैटेगरी में बांटा है।

तहसीलदार वीरेन्द्र सिंह सजवाण ने बताया कि मुआवजा वितरण संबंधित समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं और शीघ्र ही मुआवजा वितरित किया जाएगा। अतिवृष्टि से हुए नुकसान का स्थानीय प्रशासन द्वारा मौके के आधार पर सर्वे किया गया था। सर्वे के आधार पर 1438 व्यापारियों का चयन किया गया। सर्वे के दौरान नुकसान वाले व्यापारियों की तीन कैटेगरी बनाई गई हैं। जिसमें उच्च, मध्यम और लघु श्रेणी सुनिश्चित की गई। 1438 व्यापारियों में उच्च श्रेणी वाले व्यापारियों को 50 हजार, मध्य श्रेणी वाले को 25 हजार तथा लघु श्रेणी वाले व्यापारी को 10 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। राजस्व विभाग मुआवजा वितरण संबंधित तैयारी पूर्ण कर चुका है।

गणित मेले में बुद्धिमत्ता का परिचय दिया गया

बाजपुर में कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि। ● अमृत विचार

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: बीसीएसएफ इंटर कॉलेज में मंगलवार को ब्लॉक स्तरीय गणित मेला उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ इंटर कालेज के प्रधानाचार्य कैप्टन एसपी सिंह, प्रबंधक सुनील चंद्र बिष्ट, सह प्रबंधक संदीप शुक्ला तथा कार्यक्रम संयोजक, प्रधानाचार्य सहजराम वर्मा द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया।

कार्यक्रम में ब्लॉक संयोजक डीआर बाराकोटी ने गणित मेले की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की तथा गणितीय गतिविधियों, प्रदर्शनी और प्रतियोगिता के आयोजन की विधिवत जानकारी दी। सर्वप्रथम गणित प्रतियोगिता आयोजित की गई, तत्पश्चात गणितीय गतिविधियां एवं गणितीय प्रदर्शनी का मूल्यांकन निर्णायक मंडल के सदस्यों लीलाधर पलड़िया, रेखा तथा प्रकाश सिंह बंगारी द्वारा किया गया। वहीं प्रतियोगिता के दौरान सीनियर वर्ग में मयंक पांडे राइंका गजरौला प्रथम व इसी विद्यालय के प्रशांत कुमार द्वितीय, युवराज सिंह राइंका बेरिया दौलत तृतीय रहे। इसी प्रकार जूनियर वर्ग में मोहम्मद अयान बीसीएसएफ बाजपुर प्रथम, आकांक्षा राइंका गजरौला द्वितीय व कृष्णा राज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रेंहटा तृतीय स्थान पर रही। मुख्य अतिथि एसपी सिंह ने गणित विषय के महत्व पर प्रकाश डाला तथा विद्यार्थियों को गणित को जीवन का अभिन्न अंग मानकर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। विजेता विद्यार्थियों को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर विश्वजीत, गणेश प्रसाद, संजीव अग्रवाल, सुनील कुमार, प्रियांशी तिवारी, ललिता बिष्ट मौजूद रहे।

जिला कार्यालय का उद्घाटन करेंगे सीएम

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान को लेकर मुरादाबाद रोड स्थित पीडब्ल्यूडी अतिथि गृह में भाजपा की ओर से प्रेसवार्ता आयोजित की गई। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज पाल ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान का उद्देश्य हर नागरिक को स्वदेशी भावना से जोड़ना, हर घर स्वदेशी का संकल्प दिलाना और वोकल फॉर लोकल का संदेश प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना है। उन्होंने बताया कि बाजपुर रोड स्थित भाजपा के जिला कार्यालय का उद्घाटन करने के लिए 16 अक्टूबर को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी आएंगे।

मंगलवार को आयोजित प्रेसवार्ता में मुख्य वक्ता भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज पाल ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के पांच मुख्य पिलर अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, सिस्टम, डेमोग्राफी और डिमांड-सप्लाई चेन देश की आत्मनिर्भरता की बुनियाद है। अभियान के तहत भाजपा कार्यकर्ता व्यापारी प्रकोष्ठ व स्थानीय जनप्रतिनिधियों के सहयोग से दुकानों पर जाकर स्वदेशी उत्पादों का प्रचार करेंगे, स्टीकर लगाएंगे और व्यापारियों से केवल स्वदेशी उत्पाद बेचने का संकल्प पत्र भरवाएंगे। इसके अलावा प्रोफेशनल वर्ग जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, अधिवक्ता और उद्योगपतियों से संवाद कर स्टार्टअप में मेंबरशिप संकल्प करवाया जाएगा और उन्हें प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। इस मौके पर पीसीयू चेयरमैन राम मेहरोत्रा, वरिष्ठ भाजपा नेता आशीष गुप्ता, पूर्व महापौर ऊषा चौधरी, पार्षद गुरविंदर सिंह चंडोक, लविश अरोड़ा, रजत सिद्धू मौजूद रहे।

काशीपुर में प्रेस वार्ता करते भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज पाल व अन्य। ● अमृत विचार

भाजपा का विधानसभा स्तरीय सम्मेलन 17 को

खटीमा: भारतीय जनता पार्टी की बैठक में संगठन के दिशा-निर्देश पर आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान एवं अगली पीढ़ी का जीएसटी सुधार के विषय को लेकर खटीमा विधानसभा सम्मेलन 17 अक्टूबर को आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष रुचि भट्ट मुख्य वक्ता होंगी। कार्यक्रम संयोजक जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्य, विधानसभा प्रभारी प्रमोद मित्तल की देखरेख में सम्मेलन आयोजित होगा। सम्मेलन में बूथ अध्यक्ष, बूथ समिति के सदस्य, शक्ति केन्द्र संयोजक और विधानसभा में निवास करने वाले पार्टी के सभी नगर, जिला, प्रदेश कार्यकारणी पदाधिकारी, भाजपा के प्रकोष्ठ पदाधिकारी, क्षेत्र के प्रबुद्धजन, प्रमुख व्यवसायी भागीदारी करेंगे।

किच्छा में मिठाई की अवैध फैक्ट्री को किया बंद

- खाद्य विभाग की टीम ने 5 कुंतल से अधिक दूषित मिठाइयों को किया नष्ट

संवाददाता, किच्छा

अमृत विचार: दीपावली के दृष्टिगत कुमाऊं मंडल खाद्य संरक्षा उपायुक्त राजेंद्र सिंह कठायत के नेतृत्व में किच्छा में सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। चेकिंग अभियान के तहत खाद्य संरक्षा एवं औषधि प्रशासन की प्रवर्तन टीम द्वारा दो निर्माण इकाइयों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान नगर के पुराना बरेली मार्ग पर अवैध रूप से फैक्ट्री संचालित कर मिठाई का निर्माण, विक्रय, वितरण एवं संग्रह होते पाया गया। जांच के दौरान निर्माण इकाई के पास कोई भी फूड लाइसेंस नहीं मिला। टीम ने जांच के उपरांत तमाम खामियां पाए जाने पर मिठाई निर्माण की अवैध फैक्ट्री को तुरंत बंद करने के निर्देश दे दिए। टीम ने मौके से करीब 5 कुंतल से अधिक दूषित मिठाई को नष्ट कर दिया और कारोबार पर तत्काल रोक लगा दी। टीम ने मौके से चीनी, मिश्री, मोतीचूर लड्डू, रिफाइंड तेल का सैंपल कब्जे में लेकर लैब में जांच के लिए भेज दिया है। जांच रिपोर्ट मिलने के बाद संबंधित खाद्य कारोबारी के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। खाद्य विभाग की टीम ने सभी प्रतिष्ठान स्वामियों को संदिग्ध खाद्य पदार्थों की बिक्री नहीं करने के सख्त निर्देश दिए हैं। टीम ने खाद्य विक्रेताओं से खाद्य पदार्थों के क्रय विक्रय करने का दैनिक रिकॉर्ड रखने के निर्देश देते हुए जनता से अपील की है कि खाद्य एवं पेय पदार्थ को खरीदते समय निर्माण तिथि एवं उपयोग की तिथि तथा खाद्य कारोबारी का खाद्य लाइसेंस एवं पंजीकरण अवश्य देख लिया करें। इस दौरान टीम में खाद्य संरक्षा उपाध्यक्ष उपयुक्त डॉ. राजेंद्र सिंह, सहायक आयुक्त डॉ. प्रकाश फुलारा, वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रीमती अपर्णा शाह, खाद्य सुरक्षा अधिकारी आशा आर्य, राजस्व उप निरीक्षक शेखर चंद आर्य, क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी भरत सिंह राणा आदि मौजूद रहे।

किच्छा में अवैध फैक्ट्री में जांच करती प्रशासन की टीम। ● अमृत विचार

धारदार हथियार से हमला कर किया लहूलुहान

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : कोतवाली इलाके में एक युवक पर धारदार हथियार से हमला कर लहूलुहान किए जाने का मामला सामने आया है। बताया कि हमलावर बाइक व बोलेरो गाड़ी से आए थे। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जगतपुरा निवासी बसंत सिंह ने बताया कि वह नौ अक्टूबर को दोस्त राहुल के साथ रुद्रपुर से बिदुखेड़ा जा रहा था। दोपहर तीन बजे पेट्रोल पंप मोड़ के समीप अचानक बोलेरो और बाइक पर सवार छह से सात युवक आए और अभद्रता करते हुए धारदार हथियार और तमंचे की बट से हमला बोल दिया। बीच बचाव करने आए दोस्त पर भी जानलेवा हमला किया गया। आरोप था कि हमलावरों ने उसके दो मोबाइल भी तोड़ कर झाड़ियों में फेंक दिए। बताया कि हमलावर बंटी कोहली निवासी रंपुरा बस्ती, अमित गंगवार निवासी पद्मा कॉलोनी तेल मिल, बृजेश यादव निवासी बगवाड़ा, संजीत साहनी निवासी भूरारानी को वह पहचानता है। आरोप था कि हमले के दौरान अभियुक्त बार-बार यही बोल कर हमला कर रहे थे कि हमारे भाई को जेल भिजवाने वाले को जिंदा नहीं छोडेंगे। चीख पुकार की आवाज सुनकर जब भीड़ इकठ्ठा होने लगी तो हमलावर फरार हो गए। खून से लथपथ घायलों को जिला अस्पताल ले जाया गया। जहां उनकी हालत स्थिर बनी हुई है।

प्रशिक्षण शिविर में योजनाओं की जानकारी दी

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान 2025-26 के तहत पंचायत राज विभाग उत्तराखंड की ओर से क्षेत्र पंचायत प्रतिनिधियों एवं कार्मिकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू हो गया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शासन की योजनाओं की जानकारी दी जा रही है।

मंगलवार को खंडविकास कार्यालय सभागार में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख सुखमन कौर औलख, कार्यक्रम की नोडल अधिकारी अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी नंदनी तोमर एवं खंड विकास अधिकारी शेखर जोशी आदि ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस मौके पर ब्लॉक प्रमुख सुखमन कौर ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण ग्राम स्तर पर विकास कार्यों में पारदर्शिता लाने में सहायक सिद्ध होंगे। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत संचालित इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंचायत विकास योजना एवं आधारित नियोजन विषय आदि पर दी जा रही जानकारी निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगी। प्रशिक्षण प्राप्त ग्राम विकास अधिकारी हरकेश द्वारा क्षेत्र पंचायत प्रतिनिधियों एवं कार्मिकों को ग्राम विकास योजनाओं, पंचायत संचालन और जनसहभागिता की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। बताया गया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 18 अक्टूबर तक चलेगा। इस मौके पर सहायक खंड विकास अधिकारी सुरेश चंद्र पंत, ग्राम पंचायत विकास अधिकारी जसवीर सिंह, लेखाकार गणेश सिंह रावल सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र पंचायत प्रतिनिधि एवं कार्मिक शामिल हुए।

बाजपुर में पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ करतीं ब्लॉक प्रमुख सुखमन कौर औलख। ● अमृत विचार

वन टीम पर हुए हमले में तस्कर पर केस दर्ज

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: माहभर पहले वन टीम पर हुए हमले के मामले में वन विभाग ने आरोपी वन तस्कर के विरुद्ध कोतवाली में मामला दर्ज करवाया गया है।

उपवन क्षेत्राधिकारी एसओजी प्रभारी तराई केंद्रीय वन प्रभाग रुद्रपुर कैलाश चंद्र तिवारी ने पुलिस को बताया कि 10 सितंबर की सायं करीब 8.10 बजे उन्हें मुखबिर खास से सूचना मिली कि जबरान निवासी नानक सिंह उर्फ नानकू के घर में खैर की लकड़ी रखी है। सूचना पर वह वन दरोगा पूरन चंद्र पाठक, वन रक्षक शुभम शर्मा, वाहन चालक राहुल कनवाल आदि के साथ मौके पर पहुंच गए। उन्होंने बताया कि घर के बरामदे में खैर की छिली हुई लकड़ी पड़ी थी और पास में एक सिल्वर रंग की स्कार्पियो कार भी खड़ी थी। आरोप है कि जब टीम ने लकड़ी के बारे में पूछताछ की, तो नानक सिंह और उसके दो साथियों ने बलपूर्वक कार्रवाई रोकने की कोशिश की। इसी बीच नानक सिंह अंदर जाकर तमंचा ले आया और गोली मारने की धमकी देते हुए फायर करने की कोशिश की, लेकिन तमंचा नहीं चला। इसके बाद तीनों आरोपित गाली-गलौज करते हुए फरार हो गए। इतना ही नहीं घर की महिलाओं ने भी टीम को घेर लिया, जिससे खैर की लकड़ी बरामद नहीं की जा सकी।

अमृत विचार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9532374039 8077909468

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे डी.एल. की अनुज्ञप्ति संख्या U K 0 6 - 20060042646 में मेरा नाम AMIT RASHTOGI गलत दर्ज हो गया है जबकि सही वह वास्तविक नाम AMIT RASTOGI दर्ज किया जाये। **अमित रस्तोगी पुत्र श्री रामबहादुर रस्तोगी, निवासी-10, गल्ला मंडी, नानकमत्ता, जिला ऊधमसिंह नगर।**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे डी.एल. की अनुज्ञप्ति संख्या U K 0 4 20170177050 में मेरे पिताजी का नाम PREM LAL दर्ज हो गया है जबकि सही वह वास्तविक नाम PREM RAM दर्ज किया जाये। **हर्षित पुत्र श्री प्रेम राम, निवासी ज्वाहर ज्योति, दमुवांढूंगा, हल्द्वानी (नैनीताल)।**

सम्मन/नोटिस

न्यायालय तहसीलदार किच्छा जिला ऊ.सिं. नगर
वाद सं.-30/941, वर्ष-2024-25, ग्राम- खमिया नं.1
दीपक सिंह बनाम योगेश सिंह
अन्तर्गत धारा 34-35 भू. रा. अधि. 1901

एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि ग्राम खमिया नं. 1, तह. किच्छा, जिला ऊधमसिंह नगर के खसरा सं. 61, रकबा 316.28 वर्ग मी. का बैनामा दिनांक 20-10-2008 को श्री योगेश सिंह पुत्र मेहर सिंह निवासी, खमिया नं., तह. किच्छा के द्वारा रजिस्टर्ड बैनामे से श्री दीपक सिंह पुत्र राजेन्द्र सिंह, निवासी ग्राम चाटव, तह. गंगोलीहाट, जिला पिथौरागढ़ को विक्रय की गई है। बैनामे से नाम दर्ज करने हेतु वाद इस न्यायालय में विचाराधीन है। जिसमें दिनांक 18-10-2025 नियत है। यदि किसी को इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो नियत तिथि पर स्वयं या जरिए अधिवक्ता न्यायालय में उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करें। आपकी अनुपस्थिति में एक पक्षीय कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

आज्ञा से - रीडर, न्यायालय तहसीलदार

बाजपुर में जनजागरूकता रैली में शामिल आशा कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

टीबी मुक्त भारत को लेकर जागरूकता रैली निकाली

बाजपुर : नगर में मंगलवार को आशा कार्यकर्ताओं ने टीबी मुक्त भारत अभियान और किलकारी कार्यक्रम के तहत जन-जागरूकता रैली निकाली। ब्लॉक कोआर्डिनेटर बृजवाला शर्मा के नेतृत्व में निकली इस रैली में आशाओं ने हाथों में तख्तियां लेकर लोगों को टीबी से बचाव और समय पर जांच कराने का संदेश दिया। रैली श्रीरामभवन धर्मशाला से शुरू होकर मुख्य मार्ग से होते हुए मझरा प्रभु मोड़ के सामने पहुंचकर संपन्न हुई। इस दौरान आशा कार्यकर्ताओं ने नारों के माध्यम से लोगों को टीबी जैसी गंभीर बीमारी से बचने की जानकारी दी। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और समय पर उपचार की ओर प्रेरित करना था। इस मौके पर कुलविंदर कौर, विमलेश, शशिवाला, मीना दिवाकर, नैना यादव, शोभा, सत्यवती, सुरेंद्र कौर, तुलसी, हरजिंदर, नीलम, पूनम शर्मा, आशा, पूजा मिश्रा, अनारो देवी आदि मौजूद रहीं।

बैठक — मधुबन स्वायत्त सहकारिता समिति बरहैनी की वार्षिक आम सभा संपन्न हुई

आम सभा में आजीविका बढ़ाने को प्रेरित किया

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: मधुबन स्वायत्त सहकारिता समिति बरहैनी की वार्षिक आम सभा सादगीपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख सुखमन कौर औलख, कार्यक्रम की अध्यक्षा क्लस्टर अध्यक्ष उमा जोशी, खंड विकास अधिकारी शेखर जोशी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

सभा में ब्लाक मिशन मैनेजर गगनदीप कौर, एरिया कोआर्डिनेटर रिजवान अली, रीप परियोजना से उमेश छिमवाल, सुनील कुमार, ऊचाकोटी लेखराज आदि अधिकारियों ने अपने-अपने विभाग से संबंधित योजनाओं की जानकारी दी और समूह की महिलाओं को बीमा सखी के रूप में कार्य करने तथा आजीविका बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान समिति के वार्षिक लेनदेन की समीक्षा की गई। मुख्य अतिथि सुखमन कौर ने कहा कि महिलाएं जब एकजुट होकर कार्य करती हैं, तो वह समाज और परिवार दोनों की दिशा बदल सकती हैं। उन्होंने समूह की सभी महिलाओं से कहा कि आजीविका मिशन के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर समाज में नई पहचान स्थापित करें। क्लस्टर अध्यक्ष उमा जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा संचालित आत्मनिर्भर भारत मिशन और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रह रहे लोगों को आत्मनिर्भर बनाना है। कार्यक्रम में राष्ट्रपति युवा पुरस्कार विजेता जगतार सिंह बाजवा ने समूह की महिलाओं द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की सराहना की और उनके प्रयासों को अनुकरणीय बताया। इस मौके पर सचिव गीता देवी, नीमा बानी, ज्योति, अर्चना सरोज, उर्मिला कांडपाल, लता दानी, रश्मि शांति, बबीता कोरंगा, कला, निशा, उर्मिला, सुशीला, विमला, सोनी मौजूद रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ करतीं ब्लॉक प्रमुख सुखमन कौर औलख एवं अधिकारी।

ब्रीफ न्यूज

पुलिस ने वारंटी को पकड़ न्यायालय में पेश किया

खटीमा : न्यायालय सिविल जज द्वारा जारी गैर जमानती वारंट की तामील करते हुए बाजार चौकी प्रभारी किशोर पंत ने टीम के साथ कार्रवाई करते हुए डिग्री कॉलेज रोड निवासी इरफान को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया। जिसे न्यायालय के आदेशानुसार जेल भेज दिया गया है। वर्ष 2021 में इरफान को चोरी के मामले में गिरफ्तार किया था। जो जमानत पर छूटने के बाद न्यायालय में हाजिर नहीं हो रहा था।

संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हुई युवती

काशीपुर : एक युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। पुलिस ने पिता की तहरीर पर युवती की गुमशुदगी दर्ज की है। आईटीआई थाना क्षेत्र निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी 19 वर्षीय पुत्री बीती 4 अक्टूबर 2025 की शाम करीब 4 बजे घर से बिना बताए कहीं चली गई।

20 लीटर कच्ची शराब के साथ तस्कर गिरफ्तार

काशीपुर : पुलिस ने गश्त के दौरान एक शराब तस्कर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे 20 लीटर कच्ची शराब बरामद की है। पुलिस ने आरोपी का आबकारी अधिनियम में चालान किया है। कुंडेश्वरी चौकी पुलिस ने गश्त के दौरान दोहरी वकील रोड से भट्टा कॉलोनी निवासी संजीव माई को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक प्लास्टिक के कट्टे में भरी 20 लीटर कच्ची शराब बरामद की है। पुलिस ने आरोपी का आबकारी अधिनियम में चालान किया है।

बाजपुर में कच्ची शराब के साथ युवक दबोचा

बाजपुर : पुलिस चौकी बेरिया दौलत की टीम ने गश्त के दौरान अवैध शराब की तस्करी करने वाले ग्राम मडैय्या हड्डू निवासी दलजीत सिंह को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से 20 लीटर कच्ची शराब बरामद की। आरोपी के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत मामला पंजीकृत किया गया है। पुलिस क्षेत्र में अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगाने के लिए लगातार अभियान चला रही है।

नाली को लेकर मारपीट

बाजपुर : ग्राम सिहाली में सोमवार की शाम नाली को लेकर कहासुनी हो गई और इसको लेकर उनके बीच विवाद हो गया। देखते ही देखते विवाद गाली-गलौज व मारपीट में बदल गया, जिसमें 28 वर्षीय नीतू पुत्री रामस्वरूप घायल हो गई। घायल युवती को पुलिस के माध्यम से सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है।

अधिवक्ता के खाते से उड़ा दिए तीन लाख

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: काशीपुर बार एसोसिएशन के पूर्व सचिव एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अफसर अली खां के बैंक खातों से साइबर ठगों ने करीब तीन लाख रुपये उड़ा लिए। अधिवक्ता ने साइबर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

मोहल्ला अल्ली खां निवासी पूर्व बार सचिव अफसर अल्ली खां ने पुलिस को दी तहरीर में कहा है कि उनका सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, शाखा ठाकुरद्वारा में बचत खाता है। यह खाता काशीपुर शाखा के खाते से लिंक है। उन्होंने बताया कि उनके मोबाइल पर आरटीओ चालान नाम की एक फाइल प्राप्त हुई थी, जो अनजाने में इंस्टॉल हो गई। इसी के सहारे ठगों ने 28 से 30 सितंबर के बीच उनके खाते से 2 लाख रुपये, 95 हजार, 5 हजार, 99 हजार और एक हजार रुपये की रकम बारी-बारी से निकाल ली। इसी प्रकार तीन अक्टूबर को उनके पंजाब नेशनल बैंक, काशीपुर शाखा के खाते से 80 हजार, 10 हजार और 10 हजार रुपये की साइबर ठगी कर ली गई। उनके खातों से कुल तीन लाख रुपये की धोखाधड़ी हुई। साइबर ठगों ने एप के माध्यम से मोबाइल फोन हैक कर उनके बैंक खातों तक पहुंच बनाई गई। घटना का पता चलते ही उन्होंने दोनों बैंकों के टोल फ्री नंबरों पर काल कर खाते ब्लाक कराए और साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बैंक स्टेटमेंट, एसएमएस व ट्रांजेक्शन डिटेल भी उपलब्ध कराईं। पीड़ित ने पुलिस से अनुरोध किया है कि अज्ञात साइबर ठगों के खातों को ट्रेस कर उनकी संपत्ति जब्त की जाए।

तमंचा लेकर घूम रहा नशेड़ी दबोचा

रुद्रपुर : कोतवाली इलाके में तमंचा लेकर टशन दिखा रहे एक अफीमची को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है और 315 बोर का तमंचा बरामद करते हुए मुकदमा भी पंजीकृत कर लिया।

कोतवाली एसएसआई नवीन बुधानी पुलिस टीम के साथ रात्रि गश्त कर रहे थे। अचानक रोडवेज स्टेशन मार्ग पर एक युवक भागने लगा। पुलिस ने घेराबंदी कर युवक को दबोच लिया। तलाशी लेने पर 315 बोर का एक तमंचा और कारतूस बरामद किया। पूछताछ में अभियुक्त का कहना था कि वह अफीम का लती है और तमंचा दोस्तों में रौब दिखाने के लिए रखा था। बताया कि विवाद के कारण उसकी जान को खतरा बना हुआ था और वह तमंचा दिखाकर टशन बाजी भी दिखाता है। पुलिस ने तमंचा बरामद कर मुकदमा दर्ज कर लिया है।

सात तमंचे बरामद, यूपी से हथियार लाकर तराई के युवाओं के हाथों में थमा रहे थे

एसटीएफ-पुलिस ने दबोचा हथियार सप्लायर

संवाददाता,रुद्रपुर/गदरपुर

अमृत विचार : एसटीएफ और थाना गदरपुर पुलिस ने एक ऐसे हथियार सप्लायर को गिरफ्तार किया है। जो यूपी से हथियार लाकर तराई भावर के युवाओं को बेचने का धंधा करता था। पुलिस ने अभियुक्त के कब्जे से 12 और 315 बोर के सात तमंचे बरामद किए हैं। पुलिस ने अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया।

एसएसपी मणिकांत मिश्रा ने बताया कि थाना गदरपुर इलाके में एसटीएफ और पुलिस को इनपुट मिल रहा था कि जिले में हथियारों की सप्लाई हो रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए 13 अक्टूबर की रात्रि को सूचना मिली है कि एक युवक हथियारों

हथियार सप्लायर के साथ पुलिस टीम। ● अमृत विचार

की खेप लाने का प्रयास कर रहा है। जिसके आधार पर प्रभारी निरीक्षक गदरपुर जसवीर चौहान, एसटीएफ दरोगा विपिन चंद्र जोशी और कृष्ण गोपाल मठपाल की संयुक्त टीम ने नवाबगंज रोड गांव रतनपुरा मार्ग पर चेकिंग अभियान शुरू कर दिया। तभी बिलासपुर की ओर से एक बाइक सवार युवक पुलिस को देखकर भागने की कोशिश करने लगा। संदेह होने पर पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी को दबोच लिया। अभियुक्त ने अपना नाम आजाद अली निवासी गांव कनकटा गदरपुर बताया। तलाशी लेने पर अभियुक्त के कब्जे से 12 बोर के दो और 315 बोर के पांच तमंचे बरामद हुए। पूछताछ में अभियुक्त ने बताया कि वह सीमावर्ती यूपी से तमंचे खरीदकर लाता है और तराई भावर के युवाओं को महंगे दामों पर बेचता है। पूछताछ में यह भी पता चला कि अभियुक्त ने कई तमंचे सप्लाई भी कर दिए है। पुलिस ने खरीदारों को भी चिह्नित करना शुरू कर दिया है। अभियुक्त के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

रुद्रपुर के मुख्य बाजार में सिलेंडर में आग लगने के बाद की मॉकड्रिल

बाजार के दुकानदारों में मचा हड़कंप, पुलिस और दमकल विभाग की टीम पहुंची

● कहा-धैर्य से भीषण अग्निकांड को रोका जा सकता है

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : त्यौहार के वक्त मुख्य बाजार में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब अचानक गैस सिलेंडर में आग लग गई। इसकी खबर मिलते ही पुलिस और दमकल विभाग घटनास्थल पर पहुंची और आग को बुझाने की कोशिश शुरू कर दी। फायर फाइटर्स ने मॉकड्रिल के जरिए यह समझाने की कोशिश की कि धैर्य व समझदारी से भीषण अग्निकांड की घटनाओं को रोका जा सकता है।

मंगलवार की दोपहर मुख्य बाजार में भीड़ थी और व्यापारी अपना कारोबार कर रहे थे। अचानक पुलिस वाहनों के हूटर की आवाज गूंजने लगी और दमकल की गाड़ियों की आवाज भी आने लगी। यह देख व्यापारी दुकानों के बाहर निकलने लगे। कुछ देर बाद पता चला कि पुलिस व दमकल विभाग अग्निकांड हादसों के प्रति सजगता अभियान चला रहे हैं। मॉक ड्रिल के माध्यम से किस प्रकार आग पर काबू पाया जाए, व्यापारियों को समझाने की कोशिश की जा रही है। दमकल विभाग ने गैस सिलेंडर में उठ रही आग की लपटों को बुझाया और आह्वान किया कि बिना घबराए और धैर्य के साथ सूझबूझ दिखा कर अग्निकांड के बड़े हादसों को रोका जा सकता है। दीपावली के दौरान सावधानीपूर्वक पटाखे जलाने को जागरूक किया।

रुद्रपुर में मॉक ड्रिल करती अग्निशमन की टीम। ● अमृत विचार

शहर में हो चुके हैं कई अग्निकांड

रुद्रपुर : शहर ने कई अग्निकांड के खौफनाक मंजर को देखा है। कुछ साल पहले मुख्य बाजार, सब्जी मंडी हो या फिर विधवानी मार्केट का इलाका। इन स्थानों पर भीषण अग्निकांड की घटना हो चुकी है। यही कारण है कि त्योहारी सीजन में भीड़ को देखते हुए दमकल विभाग ने मॉक ड्रिल दिखाकर अपने दायित्वों का निर्वहन किया और व्यापारी नेताओं ने भी इस पहल की सराहना की है।

> दीपावली का त्यौहार प्रारंभ हो चुका है। मुख्य बाजार हो या फिर भीड़भाड़ वाला इलाका, अग्निशमन विभाग जनपद में मॉक ड्रिल के माध्यम से अग्निकांड के हादसों की रोकथाम का प्रयास कर रही है। अक्सर देखा गया है कि अग्निकांड के दौरान लोग या दुकानदार घबरा जाते हैं और बुझाने के प्रयास को छोड़कर दमकल विभाग के आने की प्रतीक्षा करते हैं जो कि भीषण अग्निकांड होने का कारण बनता है। ऐसे में धैर्य व समझदारी के साथ बुझाने का पहला प्रयास करें। इससे भीषण अग्निकांड की संभावना काफी कम हो जाती है।
> **-ईशान कटारिया,** सीएफओ अग्निशमन

हादसे में घायल महिला की मौत

रुद्रपुर : 11 अक्टूबर को हुए सड़क हादसे में घायल भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष की भाभी का

भानवती (फाइल)।

उपचार के दौरान निधन हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया।

भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष धर्म सिंह कोली की भाभी भानवती देवी रंपुरा बस्ती में परिवार के साथ रहती थीं। बताया कि 11 अक्टूबर की दोपहर को भानवती हल्द्वानी किसी काम से गई थी और वापस लौटते वक्त सवा 12 बजे बेल बाबा मंदिर के समीप कार ने टक्कर मार दी थी और गंभीर अवस्था में घायल को रुद्रपुर के प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया था। मंगलवार की सुबह उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जहां बड़ी संख्या में भाजपा नेता भी पहुंचे और पूर्व मंडल अध्यक्ष से घटना की जानकारी लेने के बाद परिवार को ढांढस बंधाया।

पूर्व पालिकाध्यक्ष ने लगाया जमीन कब्जाने का आरोप

संवाददाता, काशीपुर

● पुलिस को तहरीर सौंपकर की कार्रवाई की मांग

> पूर्व पालिकाध्यक्ष की ओर से उनकी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा करने के संबंध में कोतवाली पुलिस को तहरीर प्राप्त हुई है। पुलिस तहरीर के आधार पर मामले की जांच कर रही है।
> **- दीपक सिंह,** सीओ, काशीपुर

अमृत विचार: पूर्व पालिकाध्यक्ष ने एक प्रापर्टी डीलर पर उसकी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा करने का आरोप लगाते हुए एसएसपी को प्रार्थना सौंपकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस तहरीर के आधार पर मामले की जांच कर रही है।

लक्ष्मीपुर पट्टी रोड फ्रेंड्स कॉलोनी निवासी शमशुद्दीन ने एसएसपी को प्रार्थना पत्र सौंपा। इसमें कहा कि वह पूर्व में नगर पालिका के पालिकाध्यक्ष रह चुके हैं। बताया कि उनकी भूमि ग्राम चांदपुर तहसील काशीपुर में बैनामा क्रय की हुई है, जिसका दाखिल खारिज भी राजस्व अभिलेखों में दर्ज हो चुका है। बीते दो वर्ष से वह अपनी भूमि पर चहारदीवारी कराकर काबिज हैं। बीती नौ अक्तूबर को जानकारी मिली कि एक प्रापर्टी डीलर के कुछ गुंडे उनकी भूमि पर कब्जे का प्रयास कर रहे हैं। जानकारी होने पर वह अपने साथी मोहम्मद अशरफ सिद्दीकी एडवोकेट, हसीन खान, मुमताज उर्फ सोनू, वसीम अकरम के साथ भूमि पर पहुंचे। वहां देखा कि एक प्रॉपर्टी डीलर के सहयोगी 25-30 लोगों के साथ उनकी भूमि पर मौजूद थे। मौके पर दो जेसीबी व लेबर भी थी और निर्माण सामग्री एकत्र करके रखी हुई थी। यह लोग जबरदस्ती उनकी भूमि पर बनी चहारदीवारी को तोड़ने और जमीन पर कब्जे का प्रयास कर रहे थे। इस बात का विरोध करने पर प्रॉपर्टी डीलर व उसके साथी अभद्रता करते हुए जान से मारने की धमकी देने लगे। आरोप लगाया कि प्रापर्टी डीलर दबंग प्रवृत्ति का व्यक्ति है और भूमि पर अवैध कब्जा करने का प्रयास करता रहता है। पूर्व पालिकाध्यक्ष ने आरोपी प्रापर्टी डीलर के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई की मांग की।

40 लाख रुपये की जीएसटी वसूली

● तीन पटाखा गोदामों पर हुई कार्रवाई, टैक्स कर रहे थे चोरी, फिर होगी कार्रवाई

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : पटाखा कारोबार की आड़ में टैक्स चोरी करने पर 40 लाख का जीएसटी वसूला गया। जीएसटी की छापामार कार्रवाई के बाद पटाखा कारोबारियों में हड़कंप मच गया।

सोमवार की शाम को सचल दल के डिप्टी कमिश्नर विनय कुमार ओझा के आदेश पर जीएसटी विभाग की तीन टीमों ने गदरपुर और रुद्रपुर में पटाखों गोदामों पर छापामार कार्रवाई की। पहली टीम ने गदरपुर में छाबड़ा और दो टीमों ने सुखीजा व राठौर पटाखा गोदामों पर जब एंट्री रजिस्टर सहित दस्तावेज मांगे तो दस्तावेज पूर्ण नहीं थे। इसके आधार पर पटाखा कारोबारियों से 40 लाख की जीएसटी वसूली गई। डिप्टी कमिश्नर सचल दल विनय कुमार ओझा ने बताया कि जल्द ही फिर एक टीम बनाकर जनपद में छापामार कार्रवाई की जाएगी। नियमों का उल्लंघन करने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएंगी। किसी को भी जीएसटी नियमों से खिलवाड़ करने नहीं दिया जाएगा।

पटाखा गोदामों पर छापामार कार्रवाई करती जीएसटी की टीम। ● अमृत विचार

बिना लाइसेंस पटाखों की बिक्री नहीं करें

बाजपुर: दीपावली पर्व को देखते हुए आतिशबाजी की दुकानों की अस्थाई जगह निर्धारण एवं सुरक्षा मानकों की समीक्षा के लिए उपजिलाधिकारी डॉ.अमृता शर्मा की अध्यक्षता में मंगलवार को उनके कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। इस मौके पर एसडीएम ने कहा कि आतिशबाजी के दौरान किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचाव को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि दुकानों के निर्धारित स्थान पर वाहनों की भीड़भाड़ पर्याप्त दूरी पर रखी जाए और अग्निशमन यंत्र, बालू व पानी की व्यवस्था अनिवार्य रूप से हो। बैठक में सुरक्षा मानकों को लेकर सतर्क रहने के निर्देश दिए गए। एसडीएम ने कहा कि बिना लाइसेंस कोई भी व्यक्ति पटाखों की बिक्री न करे।

मॉल में चल रहे स्पा सेंटर पर मारा छापा

● कागज पूर्ण नहीं होने पर स्पा सेंटर को किया सील

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: शहर के एक मॉल में एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट ने मंगलवार को एक स्पा सेंटर पर छापेमारी की। टीम को सूचना मिली थी कि सेंटर में अवैध गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। छापेमारी के दौरान अनियमितता मिलने पर राजस्व की टीम की मौजूदगी में सेंटर को सील कर तीन युवतियों को रेस्क्यू किया गया।

बाजपुर रोड स्थित एक स्पा सेंटर में एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट ने स्थानीय पुलिस के साथ छापा मारा। कार्यवाही से मॉल में हड़कंप मच गया। सूचना मिली थी कि सेंटर में कुछ बाहरी राज्यों की युवतियों से अवैध गतिविधियां कराई जा रही हैं। सूचना पर कार्रवाई करते हुए टीम ने छापेमारी के दौरान वहां तीन युवतियों और एक युवक को पकड़ा। जिनसे पूछताछ की गई। टीम ने सभी के पहचान पत्र और रोजगार संबंधी दस्तावेज मांगे। प्रारंभिक जांच में युवतियों के दस्तावेज संदिग्ध पाए गए। मौके से कई आपत्तिजनक सामग्री भी बरामद हुईं, जिन्हें जांच के लिए जब्त कर लिया गया। पूछताछ में सामने आया कि युवतियां बिना किसी वैध अनुबंध के यहां कार्यरत थीं। टीम को मौके से रजिस्टर, लाइसेंस भी नहीं मिल सके। अनियमितताएं मिलने पर टीम ने एसडीएम से सेंटर को सील कराने की संस्तुति की। जिस पर राजस्व की टीम मौके पर पहुंची और पुलिस की मौजूदगी में सेंटर को सील कर दिया गया। वहीं तीनों युवतियों को सुरक्षित स्थान पर भेजा गया। कार्यवाही के दौरान मॉल परिसर में काफी देर तक भीड़ जमा रही। एएचटीयू प्रभारी बसंती आर्या ने बताया कि शहर में संचालित अन्य स्पा सेंटरों की भी जांच की जाएगी, ताकि ऐसे केंद्रों पर निगरानी रखी जा सके। इस मौके पर एसएसआई अनिल जोशी, राजस्व निरीक्षक अरुण कुमार, फूल सिंह, राजस्व उपनिरीक्षक रोहित शर्मा आदि मौजूद रहे।

काशीपुर में स्पा सेंटर को सील करती पुलिस टीम। ● अमृत विचार

लामबंद

महानगर कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं के शिष्टमंडल ने एसडीएम से मुलाकात की

मोहल्ला अल्ली खां से धारा 163 हटाने की मांग उठाई

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: महानगर कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं के एक शिष्टमंडल ने एसडीएम से मुलाकात कर मोहल्ला अल्ली खां, बांसफोड़ान और थाना साबिक क्षेत्र से धारा 163 हटाने की मांग की है।

मंगलवार को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महामंत्री अनुपम शर्मा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने एसडीएम अभय प्रताप सिंह को एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा कि 21 सितंबर 2025 को हुई आकस्मिक घटना के बाद प्रशासन द्वारा क्षेत्र में धारा 163 लागू की गई थी। इसके तहत शाम 7 बजे के बाद दुकानों को बंद करवा दिया जाता है और लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध रहता है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इससे उन्हें दैनिक आवश्यक वस्तुओं, दवाइयों, दूध व अन्य जरूरतों की पूर्ति में भारी कठिनाई हो रही है। कांग्रेसी प्रतिनिधियों ने कहा कि दीपावली पर्व नजदीक है, ऐसे में छोटे व्यापारी, फुटकर कारोबारी और आम लोग इस प्रतिबंध से बुरी तरह प्रभावित हैं। उन्होंने बताया कि क्षेत्र का माहौल अब पूरी तरह शांत और सौहार्दपूर्ण है, इसलिए प्रशासन को जनता की सुविधा के दृष्टिगत धारा 163 को तत्काल हटाना चाहिए। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि प्रतिबंधों के कारण कई परिवारों को स्वास्थ्य और मानसिक तनाव का सामना करना पड़ रहा है।

उन्होंने प्रशासन से आपसी प्रेम, भाईचारे को ध्यान में रखते हुए शीघ्र निर्णय लेने की मांग की। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष मुशर्रफ हुसैन, उत्तराखंड महिला कांग्रेस कमेटी की वरिष्ठ उपाध्यक्ष अलका पाल, प्रदेश सचिव जितेंद्र सरस्वती, मंसूर अली मंसूरी, गौरव चौधरी, सारीम सैफी, पार्षद मोहम्मद आरिफ सैफी, भगवान सिंह आदि मौजूद रहे।

काशीपुर में एसडीएम को ज्ञापन सौंपते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

किराएदार ने दुकान स्वामी को पीटा

सितारगंज : दुकान खाली करने की बात पर भड़के किराएदार ने दुकान स्वामी और उसके भाई के साथ मारपीट कर उन्हें घायल कर दिया। हमले में मकान मालिक के भाई का पैर भी टूट गया। इधर पुलिस ने चार के विरुद्ध प्राथमिकी पंजीकृत कर ली है। वार्ड नंबर आठ निवासी असलम हुसैन ने बताया कि उन्होंने अपनी दुकान वार्ड संख्या आठ निवासी महमूद हुसैन को किराये पर दे रखी है। आरोप है कि महमूद हुसैन व उसके पुत्र जाबिर, आमिर और मुजम्मिल हुसैन उनके घर के आवागमन मार्ग पर अपनी गाड़ी खड़ी कर देते हैं, जिससे उन्हें आने-जाने में दिक्कत होती है। इसको लेकर जब असलम ने उन्होंने दुकान खाली करने की बात कही तो महमूद हुसैन व उसके पुत्र एकाएक उन पर हमलावर हो गए।

मैदान में उतरे ब्लॉक प्रमुख के पति जितेंद्र

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : पूर्व विधायक राजेश शुक्ला के समर्थकों द्वारा हाथापाई

जितेंद्र गौतम।

करने और 30 लाख रुपये हड़पने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। पूर्व विधायक के समर्थन में उतरे ब्लॉक प्रमुख के पति जितेंद्र कुमार गौतम ने पलटवार करते हुए किच्छा विधायक तिलक राज बेहड़ पर आरोप लगाए हैं।

प्रेसवार्ता में गौतम ने कहा कि पूर्व विधायक शुक्ला को बदनाम करने के उद्देश्य से विधायक बेहड़ के इशारे पर बीडीसी सदस्य के पति ने हाथापाई और 30 लाख रुपये हड़पने का झूठा खेल रचा है। जबकि शुक्ला ने निस्वार्थ भाव से बीडीसी मेंबर रुचि पाल को चुनाव लड़ा कर विजय भी दिलाई। बावजूद इसके दो माह का समय बीत जाने के बाद अचानक बीडीसी मेंबर पति मन्नू पाल ने झूठी कहानी बनाई। जबकि सत्यता यह है कि पूर्व विधायक के पास 25 सदस्यों का समर्थन था। ऐसे में 30 लाख रुपये क्यों दिए गए थे। वहां छह सदस्यों को भड़काने और ब्लॉक प्रमुख के दूसरे दावेदार से भी पैसा लिया था।

दावा किया कि यदि दो माह की कॉल डिटेल निकाल ली जाएं तो बीडीसी सदस्य पति मन्नू पाल की हकीकत सामने आ जाएगी।

अमृत विचार

हल्द्वानी , बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में जूनियर में अक्षरा, सीनियर में सूरत प्रथम

एनसीईआरटी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में खटीमा के 110 बच्चों ने प्रतिभाग किया

संवाददाता, खटीमा

खटीमा में आयोजित बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में बच्चों के मॉडलों का अवलोकन करते शिक्षक। ● अमृत विचार

अमृत विचार: डिजिटल लाइब्रेरी थारू इंटर कॉलेज कैंपस में प्रभारी खंड शिक्षा अधिकारी/प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार शर्मा की अध्यक्षता में विकास खंड स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

कार्यक्रम समन्वयक निर्मल कुमार न्योलिया ने बताया कि एनसीईआरटी द्वारा मुख्य विषय "विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लिए स्टेम" के अंतर्गत सात उप विषयों में खटीमा के 110 बच्चों ने प्रतिभाग किया।

बच्चों के प्रदर्शन का मूल्यांकन प्राचार्य प्रमोद कुमार पांडे, अरविंद चौधरी, पवन कुमार, नरेंद्र सिंह रौतेला, रावेंद्र कुमार, होशिला प्रसाद, अदिति वर्मा, शिवालिक चिल्ड्रन साइंस फाउंडेशन के सुमित पांडे, विनय जोशी, हर्षित सामंत, समीर सिंह, खुशबू गुप्ता, अंजलि मुरारी, गरिमा उपाध्याय तथा "सहयोग फाउंडेशन" के विपुल भट्ट द्वारा किया गया। जूनियर स्तर में "सतत कृषि" के अंतर्गत सेंट पैट्रिक इंटर कॉलेज पालीगंज की अक्षरा और सीनियर वर्ग में राजकीय इंटर कॉलेज सैंजना के सूरत सागर प्रथम रहे। वहीं "अपशिष्ट प्रबंधन और प्लास्टिक के विकल्प" में जूनियर स्तर पर राउमावि संतना की विशाखा विश्वास, सीनियर वर्ग में डायनेस्टी मॉडर्न गुरुकुल एकेडमी इंटर कॉलेज के अंकित भट्ट प्रथम स्थान पर रहे।

"हरित ऊर्जा"उप विषय के जूनियर स्तर में सेंट पैट्रिक इंटर कॉलेज पॉलीगंज के रोमन राजा और सीनियर वर्ग में डायनेस्टी के मयंक चंद, "उभरती प्रौद्योगिकियां उप विषय में निर्मला इंटर कॉलेज नौसर की अंशिका मौर्य और बालिका इंटर कॉलेज खटीमा की रहनुमा प्रथम रहीं।

"मनोरंजन गणितीय मॉडलिंग" उप विषय में शहीद विक्रम सिंह राणा राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मोहम्मदपुर भूड़िया के समर्थ कुमार और डायनेस्टी की अंशिका जोशी प्रथम रहे। "स्वास्थ्य और स्वच्छता" उप विषय पर सेंट पैट्रिक इंटर कॉलेज की कृतिका और आचार्य नरेंद्र देव की काजल खत्री, "जल संरक्षण और प्रबंधन" उप विषय पर राणा प्रताप इंटर कॉलेज की राधा अग्रवाल और सेंट पैट्रिक इंटर कॉलेज के मोहम्मद सैफ प्रथम रहे। आयोजन समिति में अजय अवस्थी, मनोज गुणवंत, हरीश लाल आर्य, रत्नाकर पांडे, मनीषा कल्पासी, योगेंद्र सिंह, निर्मल सिंह, हेमलता पाठक आदि सम्मिलित रहे।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में भिड़ंत

गदरपुर, अमृत विचार: जमीनी विवाद को लेकर दो पक्ष आमने-सामने आ गए और देखते ही देखते नौबत मारपीट तक जा पहुंची। सड़क पर हुए विवाद के चलते जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने स्थिति को संभालते हुए यातायात को सुचारू कराया। मंगलवार की देर शाम भैंसिया मोड़ के पास उस समय अफरा तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया, जब जमीन के विवाद को लेकर दो पक्षों में भिड़ंत हो गई। जब तक आसपास के लोग कुछ समझ पाते नौबत मारपीट तक जा पहुंची। दोनों पक्ष विवादित भूमि पर अपना अपना दावा जता रहे थे। भारी टकराव की स्थिति को देखते हुए तहसीलदार लीना चंद्रा के निर्देश पर महिला हल्का लेखपाल ज्योति भी पहुंच गईं। लेकिन तब तक मामला शांत हो चुका था। सूचना पर थानाध्यक्ष जसवीर सिंह चौहान ने भारी पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रण में किया और यातायात को भी सुचारू कराया।

दोबारा टकराव की आशंका

गदरपुर : जमीनी विवाद को लेकर जो दोनों पक्ष आमने सामने आए हैं, वह दोनों ही भाजपा से जुड़े हुए हैं। जबकि लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ है कि दोनों पक्ष भाजपा के अलग-अलग खेमों से जुड़े होने के चलते दोबारा टकराव होने की संभावना बनी हुई है। जिसको लेकर पुलिस भी अलर्ट मोड पर है।

खटीमा में आयोजित फुटबॉल का फाइनल जीतने वाली टीम के साथ अतिथि। ● अमृत विचार

देव सिंह मेमोरियल तृतीय फुटबॉल टूर्नामेंट डायमंड क्लब ने जीता

संवाददाता, खटीमा

- संजय ने गोल कर हैट्रिक लगाई चौथा गोल मन्नत ने किया
- कार्बेट एफसी रामनगर को 4-1 से हराया

अमृत विचार: स्वर्गीय देव सिंह मेमोरियल तृतीय फुटबॉल टूर्नामेंट का फाइनल मैच डायमंड क्लब खटीमा ने 4-1 से जीत लिया है। डायमंड क्लब के संजय ने तीन गोल कर हैट्रिक लगाई।

टूर्नामेंट का फाइनल मैच डायमंड क्लब खटीमा और कार्बेट एफसी रामनगर के बीच खेला गया। जिसमें डायमंड क्लब की ओर से पहला, दूसरा और तीसरा गोल संजय ने गोल कर हैट्रिक लगाई जबकि चौथा गोल मन्नत ने किया। मैच में कॉर्बेट एफसी रामनगर की तरफ से एकमात्र गोल हुआ और डायमंड फुटबॉल क्लब ने फाइनल मुकाबला 4-1 से जीत लिया। रेफरी की भूमिका सुजीत, विशाल बत्रा और शुभम कन्याल ने निभाया। जबकि मैच का आंखों देखा हाल रंजीत मेहरा ने सुनाया।

इस दौरान केआईटीएम के कमल सिंह बिष्ट, रविंद्र मेहर, कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी, गोविंद सिंह मेहता, राहुल भंडारी, जहीर अब्बास, भोपाल सिंह नगरकोटी, रामा चंद रमेश रौतेला, सूरज सिंह धामी हरीश रुमाल, योगेश भंडारी, राजेंद्र सिंह पोखरिया, ललित सिंह धामी, उमेद सिंह मेहता, मनोज बसेड़ा, प्रवीण भंडारी, कमल सामंत, आशु बिष्ट, पीयूष बोरा, प्रेम सिंह पोखरिया, गणेश धामी, रमेश खनका, राहुल भंडारी, चंद्रशेखर भट्ट, सुरेश चंद आदि मौजूद थे।

बाजपुर में निजी हॉस्पिटल बंद करवाते सीएमएस डॉ .पीडी गुप्ता। ● अमृत विचार

निजी चिकित्सालय को बंद कराया

बाजपुर : नगर के पांडेय रोड स्थित एक निजी चिकित्सालय पर कार्रवाई करते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीम ने चिकित्सीय कार्य को बंद करवा दिया। जानकारी के अनुसार स्थानीय प्रशासन को शिकायत मिली थी कि उक्त चिकित्सालय में इलाज में अनियमितताएं बरती जा रही हैं, जिसके चलते मंगलवार को एसडीएम डॉ .अमृता शर्मा के दिशा-निर्देशों पर शिकायत की जांच करने पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम को मौके पर कोई चिकित्सक नहीं मिला। टीम ने क्लीनिक में उपलब्ध उपकरणों और रजिस्टर की जांच की तथा संबंधित व्यक्ति को नोटिस जारी करने की बात कही। सीएमएस डॉ. पीडी गुप्ता ने बताया कि छापेमारी के दौरान कोई भी चिकित्सक एवं चिकित्सीय कार्य होता नहीं पाया गया है। फिलहाल चिकित्सालय में किसी भी तरह के चिकित्सीय कार्य पर पाबंदी लगा दी है। टीम में सीएमएस डॉ .पीडी गुप्ता के साथ ही आशीष, जानकी शर्मा, रमेश आदि स्वास्थ्य कर्मी शामिल रहे।

देवकला, कुटरा में 2.89 हजार का बोनस बांटा

संवाददाता, खटीमा

खटीमा में देवकला समिति के दुग्ध उत्पादक को बोनस वितरित करते अतिथि। ● अमृत विचार

अमृत विचार: दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति द्वारा देवकला, कुटरा एवं थारू भूड़िया में दुग्ध संघ की संचालक मंडल सदस्या भागीरथी देवी की उपस्थिति में बोनस वितरण किया गया। जिसमें तीनों समितियों के 253 दुग्ध उत्पादकों को कुल 2,88,979 रुपये का बोनस वितरण किया गया।

कार्यक्रम में कुटरा समिति के उत्पादकों में प्रथम रही दीपा गोस्वामी को 2,304, द्वितीय रहीं शांति जोशी को 1,957 और तृतीय रही भागीरथी जोशी को 1,908 रुपये का बोनस दिया गया। देवकला समिति से प्रथम रहे जगदीश रौतेला को 7,205 रुपये, द्वितीय देवराज रौतेला को 6 ,403 रुपये और तृतीय रहे कल्याण चंद को 3,715 रुपये बोनस दिया गया। इसी प्रकार थारू भुड़िया में प्रथम रही निर्मला जोशी को 6,511 रुपये, द्वितीय रही गोदावरी देवी को 2,732 और तृतीय रही जशोदा देवी 2,574 रुपये बोनस दिया गया। दुग्ध संघ के प्रधान प्रबंधक राजेश मेहता ने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने समितियों के सचिवों को आर्थिक सहायता दिए जाने बावत संस्था की ओर से सचिव बीमा योजना एवं उनके ईपीएफ के बारे में जानकारी प्रदान की गई। जसवीर सिंह चौहान द्वारा उक्त तीनों समितियों की प्रगति रिपोर्ट का विवरण प्रस्तुत करते हुए समय-समय पर समितियों में गोष्ठी के माध्यम से पशुपालन को बढ़ावा दिए जाने की जानकारी दी। संचालन मनोहर सिंह कोइराली ने किया। इस मौके पर क्षेत्र पर्यवेक्षक पुष्पा पांडे, समिति सचिव कमला त्रिपाठी, मनोज कुमार, राजेन्द्र प्रसाद, दुग्ध उत्पादक राजेन्द्र मेहरा, पूरन सिंह, चन्द्रशेखर भट्ट, ईश्वरी दत्त पांडे, संतोष जोशी आदि उपस्थित रहे।

पारंपरिक व्यंजनों की प्रदर्शनी ने मन मोहा

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग ने मंगलवार को ''गढ़ भोज महोत्सव 2025'' के तहत उत्तराखंड के पारंपरिक व्यंजनों की मनमोहक प्रदर्शनी का सफल आयोजन किया।

मंगलवार को कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. सुमिता श्रीवास्तव रहीं। प्रो. श्रीवास्तव ने उत्तराखंड की समृद्ध पाक-परंपरा के महत्व पर प्रकाश डाला और छात्रों का उत्साहवर्धन किया। गृह विज्ञान विभाग की छात्राओं ने इस अवसर पर राज्य के लुप्त होते जा रहे पारंपरिक व्यंजनों को प्रदर्शित किया। प्रदर्शनी में मुख्य रूप से घुघुते, मडुवे की रोटी, भट्ट की दाल, रागी के लड्डू, झंगोरे की खीर, बाजरे के आटे के खस्ते, मक्के की रोटी व साग, पहाड़ी खीरे का रायता, चोलाई के लड्डू, आलू के गुटके जैसे अन्य व्यंजन भी शामिल रहे, जो उत्तराखंड की पौष्टिक आहार शैली को दर्शाते हैं। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन गृह विज्ञान विभाग की प्रभारी डॉ. रीना चौरसिया ने किया। इस अवसर पर प्रोफेसर जानकी सुयाल, प्रो. किरण कुमार पंत, प्रो. मीना शर्मा, प्रो. ममतेश कुमारी, प्रो. रूपा आर्य, प्रो. रीता देवी आदि मौजूद रहे। प्रदर्शनी को सफल बनाने में अक्षिता सिंह, तानिया राणा, अलका, सलोनी, नवनीत कौर, कोमल आदि मौजूद रहे।

सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत जवानों ने ली प्रतिज्ञा

संवाददाता, सितारगंज

सितारगंज में शपथ लेते एसएसबी के जवान। ● अमृत विचार

अमृत विचार: 57 वाहिनी सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) सितारगंज में सीपीआर (कार्डियो-पल्मोनरी रिससिटेशन) जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ कार्यवाहक कमांडेंट मनोज कुमार की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर चिकित्सीय कर्मी एवं जवान बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम 13 से 17 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। शुभारंभ दिवस पर जवानों ने सीपीआर प्रतिज्ञा ली। प्रतिज्ञा के दौरान जवानों ने समय पर सीपीआर के महत्व को समझने, सही तकनीक सीखने, नियमित अभ्यास करने और आपातकालीन परिस्थितियों में साहसपूर्वक सहायता प्रदान करने का संकल्प लिया। जवानों ने यह भी वचन दिया कि वे परिवार, मित्रों, सहकर्मियों और समुदाय के लोगों को सीपीआर की जानकारी देकर उन्हें जागरूक करेंगे जिससे अधिक से अधिक लोग जीवनरक्षक तकनीक से परिचित हो सकें। कार्यक्रम में उप कमांडेंट श्री दीपक सिंह जायड़ा, सहायक कमांडेंट (संचार) श्री अरविंद कुमार, निरीक्षक प्रकाश चंद जोशी, उप निरीक्षक सुनील सिंह बद्राल, अमित कुमार, आवेश कुमार विकल आदि मौजूद रहे।

भाजपा प्रदेश महामंत्री कुंदन का स्वागत

भवाली : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री कुंदन परिहार का पहली बार भवाली आगमन पर कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। अपने संबोधन में परिहार ने कहा कि भाजपा का असली बल कार्यकर्ता हैं। उन्होंने कहा कार्यकर्ता ही संगठन की शक्ति और आत्मा हैं। परिहार ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि सभी मिलकर पार्टी व प्रधामंत्री नरेंद्र मोदी के स्वदेशी अभियान की विचारधारा को जनता तक पहुंचाए। कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व वाली सरकार लगातार जनहित के निर्णय ले रही है जो विकास के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष हिमांशु बिष्ट, महिला मोर्चा प्रदेश महामंत्री भावना मेहरा, जिला उपाध्यक्ष प्रगति जैन, प्रकाश आर्या, पूर्व पालिकाध्यक्ष संजय वर्मा, शिवांशु जोशी, कंचन साह, प्रेम सिंह नेगी, शुभम कुमार, अमित पांडेय, मोहित कुमार, अंशुमान सिंह दफोटी, हिमांशु रावत, आयुष कुमार, कमला आर्या मौजूद रहे।

दिवंगत आईपीएस अधिकारी को दी श्रद्धांजलि

संवाददाता, गदरपुर

दिवंगत आईपीएस अधिकारी को श्रद्धांजलि देते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

अमृत विचार: हरियाणा पुलिस के होनहार आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार के आकस्मिक निधन पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने मोमबत्ती जलाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। दिवंगत आईपीएस अधिकारी ने अपने सर्विस रिवॉल्वर से खुदकुशी कर ली थी। जिसको लेकर हरियाणा में भी भारी विरोध प्रदर्शन चल रहा है।

मंगलवार की देर शाम वरिष्ठ कांग्रेसी नेता राजेंद्र पाल सिंह के नेतृत्व में दर्जनों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने कंबोज धर्मशाला में मोमबत्ती जलाकर हरियाणा के होनहार व दिवंगत आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार को श्रद्धांजलि अर्पित की। आपको बताते चले कि कुछ दिन पूर्व दिवंगत आईपीएस अधिकारी ने खुद को अपने सर्विस रिवॉल्वर से गोली मारकर खुदकुशी कर ली थी। आरोप है कि मृतक आईपीएस अधिकारी को पुलिस के सीनियर अधिकारी प्रताड़ित कर रहे थे। आईपीएस अधिकारी की मौत के बाद उनकी आईएएस पत्नी ने उनके तीन पन्नों के सुसाइड नोट को मीडिया में रिलीज करते हुए हरियाणा पुलिस के दो वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों पर उन्हें प्रताड़ित करने का आरोप लगाते हुए उसे ही मौत की वजह बताया। जिसको लेकर हरियाणा में भारी विरोध प्रदर्शन चल रहा है। श्रद्धांजलि देने वालों में कांग्रेस नेता राजेंद्र पाल सिंह, शैलेंद्र शर्मा, शराफत मंसूरी, राजेश बाबा सहित काफी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पहल उच्च शिक्षा प्राप्त कर चार भाई बहनों ने आरंभ किया स्वरोजगार, 120 युवाओं को दे रहे रोजगार

नौकरी को दरकिनार कर स्वरोजगार को दी तरजीह

संवाददाता शक्तिफार्म

मार्केटिंग मैनेजर व मैनेजिंग डायरेक्टर के साथ युवक-युवतियां। ● अमृत विचार

अमृत विचार : उच्च शिक्षा प्राप्त कर देव नगर निवासी चार भाई बहनों ने नौकरी को दरकिनार कर, स्वरोजगार को तरजीह दी। मेहनत एवं लगन के साथ आज चारों भाई बहन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे बहनोई, खुद तो आत्मनिर्भर हैं हीं, वहीं क्षेत्र के 120 शिक्षित युवक एवं युवतियों को भी रोजगार मुहैया कराया।

देवनगर निवासी समर देवनाथ के पुत्र सूरज देवनाथ एवं संतोष देवनाथ ने एमबीए की डिग्री हासिल की, वहीं पुत्री सुष्मिता देवनाथ केमिकल इंजीनियरिंग एवं सरिता देवनाथ एएनएम नर्सिंग की डिग्री हासिल की। सूरज देवनाथ के बहनोई सुरेश विश्वास भी एमबीए की डिग्री हासिल कर चुके हैं। चारों भाई बहनों एवं बहनोई को अच्छी नौकरी का भी अवसर मिला परंतु विगत 35 वर्षों से इलेक्ट्रॉनिक के क्षेत्र में कार्यरत पिता, समर देवनाथ से प्रेरणा लेकर चारों भाई बहनों एवं बहनोई ने अपना ही स्टार्टअप आरंभ करने एवं स्थानीय युवाओं को उसके साथ जोड़कर, उन्हें रोजगार मुहैया कराने की ठान ली। उच्च शिक्षा प्राप्त चारों भाई बहनों एवं बहनोई ने सर्वप्रथम वर्ष 2019 को सरिता ट्रेडर्स के नाम से स्टार्टअप आरंभ किया। इसके पश्चात उन्होंने "इनफाइनाइट सोलर सॉल्यूशन" (एलएलपी) के नाम से कंपनी आरंभ की। आज कड़ी एवं मेहनत के लगन से क्षेत्र के 120 शिक्षित युवक एवं युवतियों को अपने साथ जोड़कर उन्हें भी रोजगार मुहैया करा रहे हैं। कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर सूरज देवनाथ ने कहा कि कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए बहनोई कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर सुरेश विश्वास उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर सूरज देवनाथ एवं मैनेजिंग डायरेक्टर सुरेश विश्वास ने कहा कि उनकी कंपनी "इनफाइनाइट सोलर सॉल्यूशन"(एलएलपी) क्षेत्र में सोलर ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही है। अब स्थानीय स्तर पर अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार प्रदान करने के मिशन पर कार्यरत है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा की गई इस पहल से पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में भी एक बड़ा कदम होगा।

साइंस चैम्पियनशिप में नोजगे स्कूल के बच्चों ने मारी बाजी

संवाददाता, खटीमा

साइंस चैम्पियनशिप में प्रथम स्थान हासिल करने वाले नोज़गे पब्लिक स्कूल के बच्चे।

अमृत विचार: शिवालिक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग देहरादून में आयोजित साइंस चैम्पियनशिप 4.0 और आइडियोथन चैंपियनशिप में उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के 116 स्कूलों के बच्चों ने प्रतिभाग किया।

साइंस चैम्पियनशिप में लक्ष्य श्रीवास्तव, लकी बसेड़ा, अभिनव मौर्या, नितेश भंडारी और गौरव सिंह के ''ई-वेस्ट'' द्वारा बनाए हुए रोबोट को प्रथम स्थान मिला। ''आइडियोथन'' में छात्रा आयरा अल्वी के हेल्दी मिठास के आइडिया को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। विजयी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह सहित 15 हजार रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता के लिए तैयार करने में इन्द्र चन्द कालिंदी, मंजू रावत, काजल महरा और अभिषेक भटनागर ने सहयोग दिया। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर विद्यालय प्रबन्ध निदेशिका सुरेंद्र कौर, प्रधानाचार्य आरिज अल्वी ने बच्चों को बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

ब्रीफ न्यूज

बिछुड़े मूक बालक को पिता से मिलवाया

देहरादून : कोलकाता से केदारनाथ मंदिर के दर्शनों को आए एक परिवार का मूक, बधिर बालक मंगलवार को गुम हो गया जिसकी गुमशुदगी की सूचना मिलने के कुछ समय बाद ही पुलिस ने उसे खोजकर परिजनों के हवाले कर दिया। श्री केदारनाथ यात्रा मार्ग के निरीक्षक राजीव चौहान ने बताया कि कोलकाता से श्री केदार धाम पहुंचे श्रद्धालु गोपाल नन्दन ने पुलिस सहायता केन्द्र को सूचित किया कि उनका पांच वर्षीय बेटा अभिजीत नन्दन, जो कि बोलने, सुनने में असमर्थ है, वह यहां पहुंचने के बाद बिछड़ गया है। उन्होंने अपने स्तर से भी ढूंढने का प्रयास किया परन्तु वह अपने बच्चे को नहीं ढूंढ पाया है। पुलिस ने बालक को खोजकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

डीएम विनोद गोस्वामी को दी विदाई

पिथौरागढ़ : कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी के स्थानांतरण पर उनके उत्कृष्ट प्रशासनिक नेतृत्व, कुशल कार्यशैली एवं समर्पित सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम से अंत में जिलाधिकारी को पुलिस विभाग द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी देकर विदा किया गया। समारोह के दौरान गोस्वामी ने जनपद पिथौरागढ़ में अपने कार्यकाल के दौरान विभिन्न पदों पर एवं विशेषकर जिलाधिकारी के रूप में विगत 13 माह में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों और अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम में डीएम ने कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की प्रसिद्ध कविता 'जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला' के माध्यम से भावपूर्ण समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी योगेन्द्र सिंह, समस्त उपजिलाधिकारी, वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी, कलेक्ट्रेट परिवार के सदस्य एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने फूंका सरकार का पुतला

पिथौरागढ़ : नैनीताल में नाबालिग के अपहरण के आरोप में भाजयुमो के पूर्व जिला महामंत्री की गिरफ्तारी से कांग्रेस में आक्रोश है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन करते हुए सरकार का पुतला फूंका। कार्यकर्ताओं ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था चौपट हो गई है। प्रदर्शन करने वालों में पूर्व जिला अध्यक्ष मुकेश पंत,दीपक लुंठी, अभिषेक बोरा, नवीन कापड़ी, राहुल लुंठी, कोमल शाही, नितीश सागर, अमित कुमार, भूपेश आदि मौजूद रहे।

व्यापारियों पर हमला करने के आरोपी धरे

सोमवार रात बाटा चौक में व्यापारियों पर चाकू से किया था हमला, तीन किए गिरफ्तार, चार पर मुकदमा

अल्मोड़ा पुलिस की गिरफ्त में व्यापारी भाइयों पर हमला करने के आरोपी। ● अमृत विचार

एसएसपी को ज्ञापन सौंपते देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

संवाददाता, अल्मोड़ा

अमृत विचार: अल्मोड़ा में दो व्यापारी भाइयों पर चाकू से एकाएक हमला कर घायल करने वाले तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

दरअसल, बीते सोमवार देर शाम नगर के बाटा चौक निवासी बुक सेलर संचालक दीप चंद्र जोशी का एक पड़ोसी युवक से दुकान के सामने फड़ लगाने को लेकर विवाद हुआ। विवाद कुछ ही देर में देखते ही देखते हाथपाई में बदल गया। इस बीच आरोप है कि पड़ोसी युवक ने व्यापारी दीप चंद्र जोशी पर चाकू से हमला कर दिया। आरोप है कि बीच बचाव में आए भाई जगदीश चंद्र जोशी पर भी आरोपियों ने हमला कर दिया। इस घटना में व्यापारी दीप चंद्र जोशी और उनके भाई बुरी तरह घायल हो गए। अन्य लोगों ने किसी तरह हमलावरों से दोनों व्यापारियों की जान बचाई और उन्हें जिला अस्पताल लेकर गए। जहां दीप चंद्र जोशी के बाजू और पीठ पर पांच से अधिक टांके लग। जबकि व्यापारी जगदीश जोशी बुरी तरह घायल हुए है। इधर, मंगलवार को सीमा जोशी निवासी तल्ला गली जाखनदेवी ने पुलिस में तहरीर सौंपी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने विकास पवार, ध्रुव पवार और आशुतोष पवार के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है। कोतवाल योगेश चंद्र उपाध्याय ने बताया आरोपी आशुतोष पवार पर इससे पहले भी कई मुकदमे दर्ज हैं। मामले की जांच की जा रही है।

व्यापारियों ने कड़ी कार्रवाई की उठाई मांग

अल्मोड़ा : देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल ने व्यापारियों पर हमले की कड़ी निंदा की है। मंगलवार को मामले को लेकर एसएसपी देवेंद्र पींचा से मुलाकात की और ज्ञापन सौंपा। इस दौरान व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष मनोज सिंह पवार ने कहा कि इस तरह की घटना को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने अराजक तत्वों के खिलाफ कठोर से कठोर कानूनी कार्रवाई की मांग की। चेतावनी दी कि यदि मामले में किसी भी तरह की हीलाहवाली की गई तो मजबूरन होकर देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल को पुलिस प्रशासन के खिलाफ धरना-प्रदर्शन करने को मजबूर होगा। यहां मुलाकात करने वालों में नगर अध्यक्ष संजय साह, महिला जिला उपाध्यक्ष व पार्षद वंदना वर्मा, नगर महासचिव दीप चंद्र जोशी, जिला संगठन महामंत्री नीरज थापा, जिला संयुक्त महामंत्री कमल बिष्ट, जिला उपाध्यक्ष हिमांशु बिष्ट, निकेश उपाध्याय, सुधीर गुप्ता आदि व्यापारी मौजूद रहे।

गश्त बढ़ाने की मांग

अल्मोड़ा में व्यापारियों में हमले की घटना के बाद देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल मुखर हो गया है। व्यापारियों ने कहा कि घटना से अल्मोड़ा नगर के व्यापारी एवं आम जनमानस असुरक्षित महसूस कर रहा है। उन्होंने आगामी दीपावली पर्व के दृष्टिगत नगर क्षेत्र में पुलिस गश्त को और अधिक बढ़ाए जाने की मांग उठाई। ताकि व्यापारी एवं आम जनता अपने को सुरक्षित महसूस कर सके।

ग्राम प्रधान संगठन को अमान्य करने की मांग

- ताकुला के ग्राम प्रधानों ने मुख्य विकास अधिकारी को सौंपा ज्ञापन
- कुछ प्रधानों पर मिलीभगत से प्रधान संगठन के गठन का लगाया आरोप

संवाददाता, अल्मोड़ा

अमृत विचार: विकासखंड ताकुला के ग्राम प्रधान संगठन को अमान्य घोषित करने की मांग को लेकर पंचायत जनप्रतिनिधि मुखर हो गए है। मंगलवार को नाराज प्रधानों ने सीडीओ से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। जल्द नव निर्वाचित प्रधान संगठन को अमान्य करने की मांग उठाई।

ज्ञापन में प्रधानों ने कहा कि विकासखंड के कुछ प्रधानों की मिलीभगत से प्रधान संगठन का गठन कर दिया गया। जबकि अन्य प्रधानों को मामले को लेकर कोई भी सूचना नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि यह उत्तराखंड पंचायती राज अधिनियम के तहत निर्मित नियमों के अनुरूप नहीं है। प्रधानों ने सीडीओ से मामले में नव निर्वाचित प्रधान संगठन को अमान्य घोषित करने और कार्रवाई की मांग उठाई। मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी।

यहां ज्ञापन सौंपने वालों में प्रधान दीपक सुयाल, शीला आर्या, प्रियंका सुयाल, विनीता आर्या, गिरीश लाल, राजेश लोहनी, पूजा भाकुनी, ज्योति डंगवाल, बालम सिंह, भगवत राम, बिरेंद्र बिष्ट, हेम चंद्र लोहनी, भावना भाकुनी, तारा नयाल आदि मौजूद रहे।

अल्मोड़ा में सीडीओ को ज्ञापन सौंपते ग्राम प्रधान। ● अमृत विचार

छापेमारी कर खाद्य पदार्थों के नौ सैंपल लिए, जांच को भेजे

संवाददाता, अल्मोड़ा

अल्मोड़ा में छापेमारी अभियान चलाती खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम। ● अमृत विचार

अमृत विचार: दीपावली पर्व को देखते हुए खाद्य व औषधि प्रशासन विभाग ने छापेमारी अभियान शुरू कर दिया है। मंगलवार को विभागीय अधिकारियों ने जिले के कई इलाकों में छापेमारी की। इस दौरान दुकानों से खाद्य पदार्थों के नौ नमूने जांच को भेजे।

दीपावली पर्व के नजदीक आते ही खाद्य व औषधि विभाग सक्रिय हो गया है। मंगलवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारी ललित मोहन पांडे के नेतृत्व में टीम ने जिले के सल्ट, भिकियासैण, चौखुटिया, रानीखेत और अल्मोड़ा में चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान टीम ने मावा, चॉकलेट, मिठाई, घी, तेल समेत खाद्य पदार्थों के नौ नमूने जांच को लिए। उन्होंने व्यापारियों से मिलावटी और एक्सपायरी सामान नहीं बेचने की अपील की। वहीं, खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के अन्तर्गत 21 खाद्य व्यापारियों को नोटिस दिये गए।

चेतावनी दी कि खाद्य पदार्थों में मिलावट खोरी करते पकड़े जाने पर विभाग की ओर से सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत छापेमारी रोजाना जारी रहेगी। यहां अभियान में खाद्य सुरक्षा अधिकारी विपिन कुमार, अनुसेवक मोहन सिंह लटवाल, ईश्वर सिंह नेगी मौजूद रहे।

पर्वतीय क्षेत्रों से डीडीए समाप्त करने की मांग

अल्मोड़ा, अमृत विचार: जिला विकास प्राधिकरण के विरोध में मंगलवार को सर्वदलीय संघर्ष समिति ने धरना दिया। इस दौरान शासन प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर जल्द डीडीए को समाप्त करने की मांग उठाई। मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी।

नगर के गांधी पार्क में आयोजित धरना स्थल पर वक्ताओं ने कहा कि पिछले आठ साल से भी अधिक समय से समिति जिला विकास प्राधिकरण के विरोध में प्रदर्शन कर रही है, लेकिन फिर भी सरकार की ओर से डीडीए हटाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। डीडीए के पहाड़ की भौगोलिक परिस्थिति के अनुरूप नहीं होने से इसके कारण लोगों को तमाम समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। सदस्यों ने सरकार से डीडीए हटाने की मांग की।

सलमान ने जीती बुलेट मोटरसाइकिल

संवाददाता, टनकपुर

सीओ वंदना वर्मा को सम्मानित करते लायंस क्लब अध्यक्ष अनुराग अग्रवाल।

अमृत विचार : लायंस क्लब द्वारा आयोजित 24वें भव्य दीपावली मेले के तीसरे दिन दिल्ली के टीवी कलाकारों द्वारा मनमोहक प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि सीओ वंदना वर्मा द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। उन्होंने क्षेत्र की जनता को कानून व्यवस्था बनाने के लिए पुलिस को सहयोग देने का विशेष आह्वान किया एवं समस्त नागरिकों को दीपावली की शुभकामनाएं दी।

लायंस क्लब अध्यक्ष अनुराग अग्रवाल एवं लायन लेडी मनी छतवाल द्वारा सीओ को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। लायंस क्लब के दीपावली मेले के चेयरमैन लायन रचित मेहरोत्रा ने मेले के सफल आयोजन के लिए सभी का आभार जताया। दर्शकों द्वारा मेले में स्वादिष्ट व्यंजनों एवं झूलों का आनन्द लिया गया।

यहां स्वास्तिक अस्पताल खटीमा से डॉ. विवेक अग्रवाल, बतरा हेल्थ केयर खटीमा से डॉ. मनोज बत्रा, राजस्थान मारबल से राजेंद्र चौधरी, महेश सिंह, अंकित पाण्डे, ब्लू माउन्टेन की प्रधानाचार्य आभा चन्द, किच्छा के मनोज गोयल आदि को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। साइबर सेल के प्रभारी कुशवाहा ने लोगों को साइबर अपराध से बचने के सुझाव दिया। लकी ड्रॉ में प्रथम पुरस्कार बुलेट मोटर साइकिल बनबसा के सलमान, द्वितीय पुरस्कार इलेक्ट्रिक स्कूटी मोहम्मद खुर्शीद, तृतीय पुरस्कार रेफ्रिजरेटर कुणाल राठौर के नाम खुला। कार्यक्रम में वैभव अग्रवाल, संजय अग्रवाल, दीपक जैन, संजय छतवाल, विनय अग्रवाल, आलोक, क्रांति मोहन सक्सेना, गौरव, अर्पित आदि रहे।

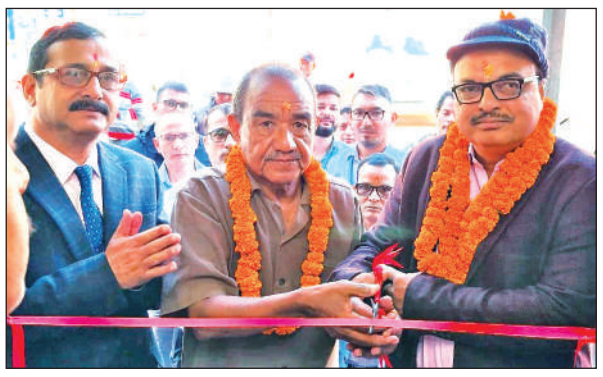

धारचूला में बैंक शाखा का शुभारंभ करते बैंक अध्यक्ष और अन्य। ● अमृत विचार

धारचूला में अल्मोड़ा अर्बन बैंक की शाखा खुली

अल्मोड़ा/पिथौरागढ़, अमृत विचार : अर्बन बैंक को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड की 64 वीं शाखा का धारचूला में शुभारंभ हुआ है। शाखा का उद्घाटन करते हुए बैंक अध्यक्ष महेश चंद्र जोशी द्वारा बैंक की प्रगति की प्रशंसा की। कहा कि थल में बैंक की शाखा खुल जाने से क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित होंगे। वहीं, बैंक के महाप्रबंधक बीएस मेहता द्वारा सभी जनता से बैंक के सेवाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया गया। उन्होंने बताया कि बैंक का कुल कार्य व्यवसाय लगभग 600 करोड़ है। इसके लिए उन्होंने सभी ग्राहकों का आभार व्यक्त किया गया। यहां अशोक नबियाल, व्यापार मंडल अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह थापा, राजेंद्र सिंह गर्ब्याल, त्रिलोक सिंह गर्ब्याल, शंकुतला आगरी, शाखा प्रमुख गिरीश चंद्र पांडेय आदि मौजूद रहे।

स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता दें

संवाददाता, अल्मोड़ा

अल्मोड़ा में आयोजित सम्मेलन के दौरान मौजूद भाजपा कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

अमृत विचार: भाजपा कार्यालय में मंगलवार को आत्मनिर्भर भारत संकल्प सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में स्थानीय व्यवसायों, नवाचारों और उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया। वहीं, कार्यकर्ताओं और जनता से आह्वान किया कि वे दैनिक जीवन में स्वदेशी का उपयोग कर देश को मजबूती की दिशा में ले जाएं।

सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य वक्ता प्रदेश महामंत्री कुंदन परिहार ने किया। उन्होंने कहा कि हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी के नारे को अपनाते हुए प्रत्येक नागरिक को त्योहारी सीजन में स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देनी चाहिए। कहा कि भारत की आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक भी होनी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। संयोजक ललित लटवाल ने बताया कि अभियान के तहत व्यापारी प्रकोष्ठ और स्थानीय जनप्रतिनिधियों के सहयोग से दुकानदारों, उद्यमियों और प्रोफेशनल वर्ग (डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, उद्योगपति, अधिवक्ता आदि) के बीच स्वदेशी उत्पादों के प्रचार-प्रसार को संवाद अभियान चलाया जाएगा। यहां जिलाध्यक्ष महेश नयाल, महामंत्री दर्शन रावत, प्रकाश भट्ट, पूर्व विस उपाध्यक्ष रघुनाथ सिंह चौहान, विधायक कैलाश शर्मा, महापौर अजय वर्मा, कुंदन लटवाल, विनीत बिष्ट, रवि रौतेला, गिरीश खोलिया, गोविंद पिलख्वाल, किरन पंत्र, मनोज जोशी, सुनील बिष्ट, संदीप श्रीवास्तव, संजय बिष्ट, संजय डालाकोटी, नरेंद्र आगरी, मनीष जोशी, मदन आदि मौजूद रहे।

21 आवेदकों के ऋण को बैंक की संस्तुति

संवाददाता, टनकपुर

अमृत विचार : जनपद चम्पावत में पर्यटन आधारित स्वरोजगार को नई गति प्रदान करते हुए मंगलवार को जिलाधिकारी मनीष कुमार की अध्यक्षता में वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना एवं दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास (होमस्टे) विकास योजना की जिला स्तरीय चयन समिति की बैठक विकास भवन सभागार में संपन्न हुई।

बैठक में पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन देने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से, समिति ने योग्य आवेदकों का व्यक्तिगत साक्षात्कार लिया। गहन विचार-विमर्श और साक्षात्कार प्रक्रिया के बाद समिति ने कुल 21 आवेदकों के प्रस्तावों पर मुहर लगाते हुए उन्हें बैंक ऋण हेतु संस्तुति प्रदान की। डीएम ने कहा कि यह कदम चम्पावत में पर्यटन गतिविधियों को नई दिशा देगा और युवाओं तथा ग्रामीणों को स्वरोजगार से जोड़ने में सहायक होगा। उन्होंने जिला पर्यटन अधिकारी को निर्देशित किया कि वे संस्तुति आवेदनों पर शीघ्रता और प्राथमिकता के आधार पर कार्यवाही करें, ताकि लाभार्थियों को समय पर ऋण प्राप्त हो सके और वे बिना किसी देरी के अपने उद्यम शुरू कर सकें। बैठक में सीडीओ डॉ. जीएस खाती, लता बिष्ट, प्रांशु मैठाणी, जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड स्वाति कार्की, पंकज तिवारी सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

सूर्पनखा-लक्ष्मण संवाद का मंचन

बनबसा, अमृत विचार : मां पूर्णागिरी आदर्श रामलीला पचपकरिया बमनपुरी रामलीला मंचन के षष्टम दिवस सूर्पनखा नासिका विच्छेदन, खर दूषण वध, सीता हरण, राम विलाप तक की लीला का मंचन किया गया।

रामलीला मंचन का शुभारंभ मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी की पूर्व प्रदेश मंत्री हेमा जोशी, पूर्व जिपं सदस्य एवम रामलीला कमेटी बनबसा की अध्यक्ष बिमला सजवान, मंडल अध्यक्ष भाजपा बनबसा कमलेश भट्ट, इंटक के प्रदेश अध्यक्ष बिनोद उप्रेती ने किया। 'सूर्पनखा लक्ष्मण से कहती हैं प्रभु मुझे वर लियो मैं हूं निकी बान। एक तो मैं बाली में बाली मैं भोली, दूजो भाई दश सीस। प्रभु जी मुझे वर लियो'। व्यास आचार्य सुमित कृष्ण तिवारी ने लीला का सुंदर वर्णन किया गया।

आरटीआई के प्रति किया जागरूक

संवाददाता, बनबसा

छात्र-छात्राओं को आरटीआई की जानकारी देते पीएलवी अर्जुन सिंह। ● अमृत विचार

अमृत विचार : लोकतंत्र की बुनियाद 'सूचना के अधिकार के प्रति जागरुकता को समर्पित 'राष्ट्रीय सूचना का अधिकार सप्ताह' के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय बनबसा में एक भव्य और अत्यंत महत्वपूर्ण विधिक जागरूकता कार्यशाला का सफल आयोजन हुआ।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ.) आनंद प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की राष्ट्रव्यापी मुहिम के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और महाविद्यालय के शैक्षणिक समुदाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण चम्पावत के पीएलवी अर्जुन सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। उन्होंने इस मौके पर कहा कि आरटीआई को 'नागरिकों के हाथ में दिया गया सबसे बड़ा संवैधानिक हथियार' बताया और सरकारी कामकाज में पारदर्शिता की अपरिहार्यता पर बल दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आनंद प्रकाश सिंह ने आरटीआई अधिनियम की महत्ता को शिक्षा और शोध के परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए कहा, सूचना शक्ति है और आरटीआई इस शक्ति को छात्रों के अनुसंधान और राष्ट्र निर्माण में उपयोग करने का सीधा मार्ग है। यह कार्यक्रम केवल जानकारी नहीं, बल्कि नागरिक सशक्तिकरण का बीज बो रहा है। इस मौके पर पीएलबी प्रकाश चंद, दीपा देवी, हरिप्रिया जोशी, पूजा जोशी, विवेक अग्रवाल, देव सिंह ने आरटीआई आवेदन दाखिल करने के सरल तरीके, प्रथम व द्वितीय अपील की प्रक्रिया, और अधिनियम के तहत विभिन्न अपवादों पर विस्तृत जानकारी दी।

लोकल से ग्लोबल यात्रा में सभी का योगदान जरूरी

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार: भाजपा लोकल से ग्लोबल बनने की यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान सुनिश्चित करने के लिए आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के दूसरे चरण में पहुंच गई है जिसमें आत्मनिर्भर भारत संकल्प रथ और पदयात्रा, घर-घर संपर्क, महिला युवा उद्यमी सम्मेलन, स्वदेशी मेला, सेमिनार एवं विभिन्न प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम जनसहभागिता के व्यापक स्वरूप मंडल स्तर तक संपन्न किए जाएंगे।

उत्तराखंड मीडिया प्रमुख मनवीर सिंह चौहान ने मंगलवार को बताया कि अभियान के क्रम में 15 अक्टूबर तक सभी विधानसभा स्तर पर सम्मेलन संपन्न होंगे, जिसमें जीएसटी बचत महोत्सव, आत्मनिर्भर भारत सम्मेलन के साथ, मोदी सरकार की उपलब्धियां योजनाओं पर विस्तार से चर्चा होगी। इन तमाम कार्यक्रमों में समाज के प्रोफेशनल्स और व्यापारी संगठनों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित कर, सभी से स्वदेशी संकल्प दिलवा, उसके प्रपत्र को भी भरवाया जाएगा। चौहान ने बताया कि 15 अक्टूबर से 15 नवंबर तक मंडल सम्मेलन में स्थानीय कारीगरों और उद्यमियों को आमंत्रित कर उनके उत्पादों को बढ़ावा दिया जाएगा। 16 से 30 नवंबर तक महिला एवं युवा सम्मेलन होंगे जिसमें महिला एवं युवा समूह को जोड़कर उन्हें योजनाओं की जानकारी से सशक्त बनने को प्रेरित किया जाएगा।

थप्पड़ का बदला लेने के लिए की थी दोस्त की हत्या

हरिद्वार: बहादराबाद थाना क्षेत्र में सोमवार को रुपयों के लेनदेन को लेकर हुए विवाद में हुई युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने उसके दोस्त रोहित पुत्र मांगेराम निवासी ग्राम बहादराबाद को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने घर में घुसकर युवक पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किए थे। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। वहीं, एम्स ले जाते समय उसकी मौत हो गई थी।

पूछताछ में आरोपी ने बताया कि मृतक सौरभ के साथ 1200 रुपये को लेकर हाथापाई हो गई थी। जिसमे मृतक सौरभ ने उसको थप्पड़ मार दिया। सौरभ से बदला लेने की नियत से चाकू लेकर सौरभ के घर गया और सौरभ पर चाकू से कई बार वार किए।

सशस्त्र सीमा बल मुख्यालय में शपथ लेते कर्मी। ● अमृत विचार

एसएसबी मुख्यालय में चला जागरुकता सप्ताह

रानीखेत, अमृत विचार : भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में अमित कुमार, महानिरीक्षक सीमान्त मुख्यालय सशस्त्र सीमा बल रानीखेत के मार्गदर्शन सीमांत मुख्यालय रानीखेत में 13 से 17 अक्टूबर तक राष्ट्रीय स्तर पर कार्डियो-पुल्मनेरी रिससिटैशन सीपीआर जागरुकता सप्ताह मनाया जा रहा है। इसी क्रम में शओबी सिंह, उपमहानिरीक्षक (चिकित्सा) की अगुआई में 14 अक्टूबर को बल में कार्यरत कर्मियों को शपथ दिलाई गई। सीमांत परिसर में एक कार्यशाला आयोजित कर बल कर्मियों को सीपीआर देने की विधि एवं सावधानियों से जवानों को परिचित कराकर प्रशिक्षण भी दिया गया। कार्यक्रम में परीक्षित बेहेरा उप महानिरीक्षक डीबी उप महानिरीक्षक, देबासिस पाल कमांडेंट, अनिल कुमार जोशी उप कमांडेंट प्रभाकर उप कमांडेंट व अधिकारीगण, अधीनस्थ अधिकारी व बल कार्मिक शामिल रहे।

अमृत विचार

बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

सपने वह नहीं होते, जो हम सोते में देखते हैं। सपने वह होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।

–एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

इस नोबेल से सबक

इस वर्ष का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार जिन प्रख्यात अर्थशास्त्रियों को दिया गया है, उनके शोध ने यह स्पष्ट किया है कि इनोवेशन अथवा नवाचार तथा क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की जीवनरेखा हैं। ये सिद्धांत बताते हैं कि आर्थिक विकास केवल पूंजी या श्रम के विस्तार से नहीं, बल्कि नए विचारों, तकनीकी नवाचारों और उद्यमशीलता से संचालित होता है। 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' की अवधारणा नई नहीं है। जोसेफ शुंपीटर इसे पहले ही स्थापित कर चुके हैं, लेकिन तीनों अर्थशास्त्रियों ने आधुनिक संदर्भ में शोध के द्वारा इस अवधारणा को वैज्ञानिक एवं तार्किक आधार दिया। किएटिव डिस्ट्रक्शन या रचनात्मक विनाश का मतलब है, विकास की प्रक्रिया में जो नई तकनीक, नए उत्पाद और नए व्यापार मॉडल रचे जाते हैं, वे पुरानी तकनीक, उत्पाद और व्यापार प्रारूप का विनाश करते है, उन्हें विस्थापित करते हैं, लेकिन साथ ही वे नई संभावनाओं का निर्माण भी करते हैं। बेशक, प्रक्रिया में पुरानी नौकरियां और उद्योग नष्ट होते हैं, लेकिन यही विनाश सृजन का मार्ग खोलता है।

आज तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया में यह सिद्धांत बहुत प्रासंगिक है। आफिशियल इंटेलिजेंस, हरित ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और डिजिटल वित्त इत्यादि नई तकनीक पुराने औद्योगिक ढांचे को बदल रही हैं, जिससे पारंपरिक नौकरियां जा रही हैं, पर इससे नए रोजगार, नए कौशल और नए उद्योग भी जन्मते हैं। वाकई औद्योगिक क्रांति और बाद के तकनीकी युग में ज्ञान के प्रसार और नवाचार ने उत्पादकता को कई गुना बढ़ा दिया है। साफ है कि समाज में ज्ञान संस्कृति यानी प्रयोग, अनुसंधान की प्रवृत्ति ही दीर्घकालिक विकास की कुंजी है। जब नवाचार की प्रतिस्पर्धा सतत आर्थिक विकास को गति देती है तब सरकारी नीतियां नवाचार को प्रोत्साहित करती हैं, जैसे शिक्षा, अनुसंधान निवेश, स्टार्टअप संस्कृति या खुला बाजार। इससे अर्थव्यवस्था अपने आप में ही सुधार करने लग जाती है।

भारत जैसे विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए इस शोध में कई नीतिगत सबक छिपे हैं। सबसे पहला, नवाचार को सिर्फ वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, इसे व्यवसाय, कृषि, शिक्षा और शासन की प्रत्येक परत में समाहित किया जाना चाहिए। दूसरा, सरकार को ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो उद्यमिता को बढ़ावा दें- जैसे कर प्रोत्साहन, सरल नियम और असफलता को दंडित करने के बजाय सीखने का अवसर मानना। भारत में स्टार्टअप क्रांति, डिजिटल इंडिया और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन जैसी योजनाएं इसी दिशा की शुरुआत हैं, पर इन्हें ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की ओर रूपांतरित करने की जरूरत है। तकनीकी बदलावों से विस्थापित श्रमिकों के पुनः कौशल-प्रशिक्षण की नीति भी उतनी ही आवश्यक है, ताकि 'विनाश' का पक्ष 'सृजन' में सहज रूप से बदल सके। असल में विकास का अर्थ केवल बढ़ते आंकड़ों में नहीं, बल्कि नए विचारों की गति और उसे अपनाने में छिपा है। भारत को यदि तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था बनना है, तो उसे नवाचार को नीति और संस्कृति, दोनों का मजबूत केंद्र बनाना होगा। देश के लिए 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' यही सबक समीचीन होगा।

प्रसंगवश

कलाम ने कहा, चेक भुनाएं वरना वापस लें सामान

आज 15 अक्टूबर को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे कलाम की जयंती है। वह ऐसे व्यक्ति थे, जो जहां भी रहे, वहां अपनी अमिट छाप छोड़ी। पहले उनसे जुड़े एक किस्से की बात करते हैं- एक बार डॉ. कलाम तमिलनाडु के एक कार्यक्रम में पहुंचे। वह एक कंपनी का प्रोग्राम था। कंपनी ग्राइंडर मशीन बनाया करती थी। उन्होंने औपचारिकतावश अपने सामान का डेमो कलाम साहब को दिखाया। डॉ. कलाम को एक ग्राइंडर पसंद आ गया। उन्होंने उसे खरीदने की इच्छा जाहिर की। कंपनी ने तुरंत ही एक शानदार ग्राइंडर पैक करा कर उन्हें गिफ्ट दे दिया। उन्होंने कहा कि वह इसे मुफ्त में नहीं लेना चाहते, बल्कि इसे खरीदना चाहते हैं। कलाम साहब गिफ्ट में ग्राइंडर लेने के लिए किसी भी हाल में राजी नहीं हुए। डॉ. कलाम ने कंपनी को ग्राइंडर की कीमत 4850 रुपये का चेक दे दिया।

डॉ. नंद किशोर साह

लखनऊ

कंपनी ने इसे अपना सौभाग्य मानते हुए उस चेक को शानदार फ्रेम में करा कर अपने ऑफिस में लगवा लिया। उन्होंने सोचा होगा कि ऐसा शायद ही कोई होगा, जिसके पास कलाम साहब का चेक होगा। यह उनके लिए एक कीमती तोहफा था। दो महीने गुजरने के बाद भी जब चेक जमा नहीं हुआ तो एक दिन कलाम साहब के ऑफिस से कंपनी के पास फोन आया और इन्क्वायरी की गई कि अब तक चेक क्यों जमा नहीं किया गया है। कंपनी ने सच-सच सारी बात बता दी। कलाम साहब की तरफ से कंपनी से कहा गया कि या तो वह चेक को कैश कराएं या फिर अपना ग्राइंडर वापस मंगा लें।

अबुल पकीर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम, जिन्हें डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नाम से जाना जाता है, भारत के एक महान वैज्ञानिक, राजनेता और देश के पूर्व राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। उनके पिता जैनुलआब्दीन एक साधारण स्कूल शिक्षक थे और उनकी माता आशियम्मा एक गृहिणी थीं। कलाम के परिवार ने उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की। कलाम ने अपनी स्कूली शिक्षा रामेश्वरम से पूरी की और बाद में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में पढ़ाई की। डॉ. कलाम का सपना भारतीय वायु सेना में लड़ाकू पायलट बनने का था, लेकिन दुर्भाग्यवश यह सपना पूरा नहीं हो सका। उन्होंने प्रवेश परीक्षा में नौवां स्थान प्राप्त किया था, जबकि भारतीय वायु सेना ने केवल शीर्ष 8 उम्मीदवारों का चयन किया था। कलाम ने हार नहीं मानी और अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की।

डॉ. कलाम ने करियर की शुरुआत भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में एक वैज्ञानिक के रूप में की। उन्होंने भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में, उन्होंने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में काम किया और भारत के मिसाइल कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. कलाम को भारत के मिसाइल मैन के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में भारत ने 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण किया। 2002 में, कलाम साहब को भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। उन्होंने छात्रों और युवाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. कलाम एक अच्छे लेखक और वक्ता थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'विंग्स ऑफ फायर' और 'इग्नाइटेड माइंड्स' प्रमुख हैं।

भू-राजनीतिः बदल रहे हैं दोस्त और दुश्मन के रिश्ते

दिग्विजय सिंह

कानपुर

ज्योपॉलिटिक्स तेजी से बदल रही है। दोस्त और दुश्मन के रिश्ते भी बदल रहे हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सेनाएं आमने-सामने हैं तो बगराम एयरबेस के मुद्दे पर भारत-पाक साथ हैं।

तहरीके तालिबान पाकिस्तान के बहाने पाकिस्तान ने अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एयर स्ट्राइक कर युद्ध का एक नया मोर्चा खोल लिया। पाकिस्तानी एयर स्ट्राइक के जवाब में अफगानी सैनिकों द्वारा किए गए हमले में पाकिस्तान के चार दर्जन से अधिक सैनिकों की मौत हुई और सात सैनिक बंधक बना लिए गए। अफगानी सैनिकों ने कई पाकिस्तानी सुरक्षा चौकियों पर कब्जा कर लिया। कतर के दबाव में फिलहाल दोनों तरफ से बंदूकें तो थम गई हैं, लेकिन जो हालात हैं, उससे नहीं लगता कि यह शांति स्थायी है। कभी भी किसी भी समय दोनों तरफ से हमले हो सकते हैं। इस संघर्ष के बाद हर किसी की निगाह सऊदी अरब पर है, क्योंकि हाल ही में पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच सुरक्षा समझौता हुआ है, जिसके तहत एक देश पर हमला दोनों देशों पर माना जाएगा। ऐसे में अब सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान की सुरक्षा के लिए सऊदी अरब तालिबान से मोर्चा लेगा। वैसे सऊदी की तरफ से अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

बगराम एयरबेस के बहाने अफगानिस्तान में फिर से जड़ें जमाने की कोशिश में जुटे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को पाकिस्तान ने हाल ही में बड़ा झटका दिया था। भारत, रूस, चीन तो पहले से ही नहीं चाहते कि अमेरिका पुनः अफगानिस्तान में अपने कदम रखे, लेकिन पाकिस्तान ने भी इन देशों के सुर में सुर मिलाकर अमेरिका को सकते में डाल दिया था। अब अफगानिस्तान से पाकिस्तान की ठन गई है, तो अमेरिका ने भी चुप्पी साध ली है। बगराम के मुद्दे पर अमेरिका के विरोध में पाकिस्तान के कदम को रूस से रिश्ते को प्रगाढ़ करने और चीन को खुश करने के लिए लिए उठाया गया कदम माना जा रहा है। अमेरिका के साथ उसकी बढ़ती दोस्ती से चीन खफा है।

मंगलवार को अफगानिस्तान पर मॉस्को फॉर्मेट के बाद जारी बयान में अमेरिका का नाम लिए बिना ही भारत समेत 10 प्रभावशाली देशों ने अफगानिस्तान और अन्य पड़ोसी देशों में किसी दूसरे देश के सैन्य ढांचे को अस्वीकार कर दिया। इस फार्मेट पर भारत के साथ ही पाकिस्तान ने भी हमला किया है। पाकिस्तान के इस कदम से अमेरिका को बड़ा झटका लगा है। अगर बगराम एयरबेस पर अमेरिका कदम रखता है, तो इसका सबसे ज्यादा नुकसान रूस, चीन और ईरान को होगा। वह यहां से जहां चीन के परमाणु ठिकानों पर निगाह रख सकेगा, वहीं आसानी से ईरान पर हमला भी कर सकेगा।

अफगानिस्तान के बगराम एयरबेस पर दो दशक से अधिक समय तक अमेरिका का नियंत्रण रहा है। अगस्त 2021 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की मंजूरी के बाद अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी हुई थी। इस दौरान अमेरिका ने इस एयरबेस को लावारिस छोड़ दिया था। खरबों रुपये के अत्याधुनिक हथियार, लड़ाकू विमान, तोप आदि अमेरिकी सैनिक यहीं छोड़ गए थे। अब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाहते हैं कि यह एयरबेस अमेरिका के नियंत्रण में आ जाए। इसके लिए वे लगातार अलग-अलग मंचों पर अपनी इच्छा जाहिर कर चुके हैं, हालांकि अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान ने इसका विरोध किया है।

बगराम से महज दो हजार किलोमीटर दूरी पर संवेदनशील चीनी परमाणु केंद्र है। यह केंद्र लोप नूर के पास है। कोको नूर परमाणु केंद्र भी इसके काफी नजदीक है। अमेरिका इन केंद्रों पर बारीकी से नजर रखना चाहता है। चीन और तालिबान की नजदीकी किसी से छिपी नहीं है। अफगानिस्तान में लिथियम, तांबा, लोहा, सोना और यूरेनियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में हैं। चीन प्रशासन तालिबान के साथ मिलकर इसका दोहन करना चाहता है, इसीलिए चीन ने काबुल के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास शुरू किया है। अमेरिका यहां से रूस के मध्य एशियाई इलाकों तक सैन्य नजर रख सकता है। उत्तर में ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान, पश्चिम में ईरान, दक्षिण में पाकिस्तान और पूर्व में चीन है। पर वह बगराम से आसानी से निगरानी कर सकता है। रूस से भी अमेरिका का तनाव चल रहा है। राजधानी मास्को में मंगलवार को हुए कार्यक्रम में 10 देशों ने अमेरिका के इस कदम का विरोध किया है।

खास बात यह रही कि ऑपरेशन सिंदूर में करारी हार के बाद बार-बार हमले की गीदड़ भभकी देने वाला पाकिस्तान, भारत के साथ इस मुद्दे पर खड़ा नजर आया। पाकिस्तान लगातार अमेरिका से व्यापारिक और रक्षा सौदे करने में जुटा है। इससे चीन नाराज है। मॉस्को में आयोजित सातवें 'मॉस्को फॉर्मेट' सम्मेलन में भारत ने बगराम एयरबेस का नाम नहीं लिया पर कहा कि अफगानिस्तान की संप्रभुता और स्थिरता सबसे पहले है। खास बात यह रही कि इस बैठक में तालिबान की तरफ से विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी भी शामिल हुए। भारत का अफगानिस्तान के समर्थन में खड़ा होना दोनों देशों के रिश्तों के लिए शुभ संकेत है। आमिर खान मुत्ताकी ने भारत के विरुद्ध किसी भी देश को अफगानिस्तान की धरती का उपयोग न होने का भरोसा दिया है, तो भारत ने भी अपने राजनयिक संबंध को पूर्ण रूप से बहाल करते हुए काबुल में दूतावास खोलने की घोषणा कर दी है।

उधर, अगर अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच यह संघर्ष युद्ध में बदलता है, तो चीन के रुख पर भी हर किसी की निगाह होगी। चीन ने दोनों देशों में भारी भरकम निवेश कर रखा है। सऊदी अरब का क्या रुख होगा यह भी खाड़ी देश जानना चाहते हैं। वैसे सऊदी अरब कभी नहीं चाहेगा कि उसके तालिबान से रिश्ते खराब हों, पर सवाल यह है कि अगर वह पाकिस्तान के समर्थन में नहीं आता है, तो फिर समझौते का क्या होगा जो हाल ही में दोनों देशों ने किया है।

आमने

दुर्गापुर मेडिकल छात्रा से दुष्कर्म मामला चौंकाने वाला है। हमारी सरकार ऐसी घटनाओं को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करती। वारदात में शामिल तीन आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। निजी कॉलेजों को परिसर के भीतर और आसपास सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

–ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री पश्चिम बंगाल

सामने

ममता बनर्जी एक बार फिर झूठा बयान जारी कर रही हैं, क्योंकि घटना परिसर के अंदर नहीं, कॉलेज के बाहर हुई है। यह प्रशासन की पूर्ण विफलता है। इस सरकार में जांच में दक्षता की कमी है, जो इन बलात्कारियों को प्रोत्साहित कर रही है।

–सुकांत मजूमदार केंद्रीय मंत्री

निकोबार द्वीप परियोजना और उठते सवाल

प्रमोद भार्गव

वरिष्ठ पत्रकार

'महान निकोबार द्वीप परियोजना' के तहत 75 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने जनजातियों के अस्तित्व को लेकर कुछ सवाल उठाए हैं।

'महान निकोबार द्वीप परियोजना' पर कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने नाराजगी जताते हुए अंग्रेजी अखबार में लेख लिखा है। उसमें उन्होंने कहा है कि शोंपेन और निकोबारी जनजातियों का अस्तित्व इस परियोजना के चलते दांव पर है। भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक विषिश्ट पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश की अनुमति नहीं दे सकती। हमें न्याय के इस उपहास और राष्ट्रीय मूल्यों के साथ इस विश्वासघात के विरुद्ध अपनी आवाज उठानी चाहिए। इसके पहले राहुल गांधी ने भी जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम को लिखे पत्र में इस परियोजना पर आपत्ति जताई थी।

दूरांचल में समुद्र तटीय क्षेत्रों में भारत विकास की दृष्टि से पीछे रहा है। उन तटीय क्षेत्रों पर भी हमने ध्यान नहीं दिया, जो आर्थिक और चीन जैसे धोखेबाज देश से चुनौती के लिए सामरिक दृष्टि से अहम हो सकते हैं। निकोबार अर्थात अंडमान-निकोबार द्वीप समूह इस नाते अछूता है। इस क्षेत्र को प्रसिद्ध सेल्यूलर जेल की वजह से जानते हैं, जो अब राष्ट्रीय स्मारक है। दूसरे, उन जनजातियों के लिए जानते हैं, जो आज भी भारत की मुख्यधारा का हिस्सा नहीं बन पाई हैं। नतीजतन अपनी परंपरागत प्राकृतिक अवस्था में रहकर प्रकृति के सानिध्य में ही गुजर-बसर कर रही हैं। अब इस क्षेत्र की तस्वीर बदलने जा रही है। सिंगापुर की तर्ज पर निकोबार के तट का विकास, केंद्र सरकार बड़ी मात्रा में निवेश करके 'महान निकोबार द्वीप परियोजना' (जीएनआई) के अंतर्गत कर रही है। 75 हजार करोड़ की इस बृहद परियोजना के तहत कई परियोजनाओं को अंजाम तक पहुंचाने की तैयारी है, हालांकि परियोजना के अमल से बड़े स्तर पर पर्यावरण को नुकसान भी होगा।

निकोबार द्वीप समूह 10 हजार 44 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है। बंगाल की खाड़ी में पोत परिवहन को नया आयाम देते हुए 10 हजार करोड़ रुपये की लागत से एक पोतांतरण बंदरगाह (ट्रांसशिपमेंट पोर्ट) का निर्माण करने की योजना प्रस्तावित है। यह बंदरगाह विकास से जुड़ी गतिविधियों के बड़े केंद्र के रूप में विकसित होगा। इस बंदरगाह को समुद्री जल मार्ग की प्रमुख गतिविधियों के केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। वैसे भी यह क्षेत्र दुनिया के कई पोतांतरण बंदरगाहों की तुलना में काफी प्रतिस्पर्धा दूरी पर स्थित है। बदलती जरूरतों के परिप्रेक्ष्य में पूरी दुनिया यह मानकर चल रही है कि जिस देश में हवाई अड्डों और बंदरगाहों का नेटवर्क और कनेक्टिविटी जितनी बेहतर होगी, 21वी सदी के व्यापार में वही देश अग्रणी रहेंगे। ऐसे में इस दूरांचल में ढांचागत सुविधाएं बढ़ेंगी तो अंचल का विकास तो होगा ही, अन्य भारतीयों से समरसता भी बढ़ेगी। बड़ी नदियों से मछली पकड़कर गुजारा करने वाले भी करीब तीन करोड़ मछुआरे हैं। अंडमान-निकोबार क्षेत्र में तटवर्ती मछुआरों को इस क्षेत्र के विकास का सीधा लाभ मिलेगा। मछली और सीवीड का कारोबार बढ़ेगा, जिससे इस समुदाय की समृद्धि बढ़ेगी।

महान अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का निकोबार क्षेत्र आरक्षित जैवमंडल (बायोस्फीयर) क्षेत्र में आता है। इसे 2013 में विशेष जैवमंडल का दर्जा दिया गया था। भारत में कुल 18 जैवमंडल क्षेत्र हैं, उनमें से एक निकोबार जनजातीय (आदिवासी) आरक्षित वन-भूमि की श्रेणी में है। इस समुद्री क्षेत्र में विशेष प्रजाति के लैदरबैक कछुए, खारे पानी में रहने वाले मगरमच्छ, निकोबारी केकड़े खाने वाले मकाक और प्रवासी पक्षी शामिल हैं, जिनका इस बहुआयामी विकास परियोजना से प्रभावित होना तय है। निर्माणाधीन पोतांतरण टर्मिनल, ऊर्जा संयंत्र, हवाई अड्डा और आवासीय भवन भी बनाए जा रहे हैं। उत्तरी और मध्य अंडमान के बीच सड़क सुविधा को बेहतर बनाने के लिए दो बड़े पुल निर्माणाधीन हैं और यहां के राष्ट्रीय राजमार्ग का चौड़ीकरण किया जा रहा है। इस सभी परियोजनाओं के लिए जो भूमियां अधिसूचित की गई हैं, उन पर खड़े 8,52,000 पेड़ों को भी काटा जाना है।

इस कारण पर्यावरणविद् यह आशंका जता रहे हैं कि इससे यहां के प्राचीन वर्षा वनों को भारी क्षति होगी। इन्हें हानि होगी तो कई दुर्लभ प्राणी व वनस्पतियों की प्रजातियां और इस भू-भाग का मानसून भी प्रभावित होगा। यही नहीं निकोबार द्वीप समूह में गिनती के रह गए जो जनजातीय समूह आदिम अवस्था में रहते हैं, उनका नैसर्गिक जीवन भी प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। इनमें शोंपेन और निकोबारी वनवासी जनजातियां शामिल हैं। इनकी संख्या करीब 1761 है।

निकोबार में एक विशेष प्रजाति का नहीं उड़ सकने वाला पक्षी मेगापॉड का भी घर है। इनके कुल 51 घोंसले हैं, जिनमें से 30 पूरी तरह नष्ट कर दिए जाएंगे। दरअसल, यह विकास गलाथि खाड़ी और कैंपबेल खाड़ी राष्ट्रीय उद्यानों की दस किमी परिधि में होना है, जो पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है, हालांकि भारतीय प्राणी सर्वेक्षण और अंडमान-निकोबार प्रशासन के वन एवं पर्यावरण विभाग ने दावा किया है कि परियोजना से वन और प्राणियों को नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। मैंग्रोव वृक्षों के संरक्षण और दस हेक्टेयर में फैली मूंगा चट्टानों की 20,668 बस्तियों में से 16,150 बस्तियों की सुरक्षा मूल स्थान से खिसकाकर की जा रही है।

सोशल फोरम

चिड़ियों का प्रोटेस्ट

देश के एक विख्यात और वरिष्ठ पत्रकार सईद नकवी का मानना है की गाजा और इजरायल शांति समझौते की सबसे बड़ी वजह यूरोप और पूरे विश्व में (भारत को छोड़ कर) युद्ध को रोकने और शांति को स्थापित करने के लिए चले विशाल जन आंदोलन हैं। करोड़ों लोग प्रदर्शन करते सड़कों पर उतर आए थे और सरकारों को अपना अस्तित्व खतरे में नजर आ रहा था।

असगर वजाहत

चर्चित साहित्यकार

लोकतंत्र में जनमत से बड़ी कोई शक्ति नहीं है, और जनमत बनाने तथा लोगों तक जानकारी पहुंचाने का सबसे बड़ा माध्यम मीडिया/सोशल मीडिया है, लेकिन दुख की बात है कि हमारे कुछ बुद्धिजीवी सोशल मीडिया को महत्व नहीं देते।

बोलने का असर सिर्फ इंसानी समाज पर ही नहीं बल्कि जानवरों और चिड़ियों पर भी पड़ता है।

एक सच्ची घटना बताता हूं, जिस पर मैंने एक छोटी कहानी भी लिखी है।

दूसरी मंजिल पर मेरा फ्लैट था। वहां से एक पेड़ पर लगा चिड़िया का घोंसला दिखाई देता था। चिड़िया ने अंडे दिए थे।

एक दिन मैंने देखा कि एक बिल्ली पेड़ पर चढ़ रही है। निश्चित रूप से उसका इरादा चिड़िया के अंडे खाना था।

चिड़िया ने यह देख लिया और वह बिल्ली के ऊपर उड़ कर ची-ची करने लगी।

थोड़ी देर में दो-चार चिड़िया वहां और आ गईं और वह भी बिल्ली के सिर पर मंडरा कर ची-ची करने लगीं। बिल्ली उनकी परवाह के बिना पेड़ पर चढ़ती रही, लेकिन धीरे-धीरे चिड़ियों की तादाद और आवाज इतनी तेज हो गई कि बिल्ली रुक गई और नीचे उतरने लगी।

बोलिए, लिखिए और बताइए, नहीं तो आप गूंगे, बहरे और अंधे हो जाएंगे।

-फेसबुक वाल से

सामयिकी

'सोने के पिंजरे में कैद' राज्यपाल की पीड़ा

पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कल जयपुर में एक पुस्तक विमोचन समारोह के दौरान जो कहा, वह केवल एक बुजुर्ग नेता का आत्म संवाद मात्र नहीं है, बल्कि इससे एक राज्यपाल के रूप में तमाम तामझाम के बीच रहकर भी अकेलापन महसूस कर रहे नेता का दर्द झलकता है। उन्होंने कहा कि हमारी पहचान पद से नहीं, जनता के बीच रहने वाले कार्यकर्ता के रूप में होनी चाहिए। पद आज है, कल चला जाएगा, लेकिन कार्यकर्ता की पहचान कोई नहीं मिटा सकता। मैं महामहिम बन गया तो क्या जनता से दूर हो जाऊं। कार्यकाल खत्म होते ही मैं फिर से कार्यकर्ता हो जाऊंगा। सबको लगता है कि राज्यपाल बनकर मेरे मजे हैं, लेकिन मुझे तो सोने के पिंजरे में कैद कर दिया गया है।

अमरपाल सिंह वर्मा

स्वतंत्र पत्रकार

राज्यपाल कटारिया का यह कथन केवल किसी व्यक्ति की निजी व्यथा नहीं है, बल्कि यह उस पूरे दौर की आत्म स्वीकृति है, जिसने राजनीति को सेवा से सत्ता में और जन संवाद को जन प्रबंधन में बदलते हुए देखा है। इस वक्तव्य में उस व्यक्ति का दर्द है, जिसने एक शिक्षक के रूप में, स्वयंसेवक के रूप में, कार्यकर्ता, विधायक और मंत्री के रूप में, यानी जिंदगी के हर पड़ाव पर जनता से सीधा रिश्ता बनाया। उन्होंने वह दौर देखा है, जब राजनीति में प्रवेश का अर्थ पद प्राप्ति की लालसा न होकर जनसेवा का संकल्प होता था, जब नेताओं के दरवाजे बिना किसी अपॉइंटमेंट के खुले रहते थे।

जयपुर में कटारिया जब कह रहे थे कि पद आज है, कल चला जाएगा, तो वे हमें उस मूलभूत सच्चाई की याद दिला रहे थे कि सत्ता अस्थायी होती है, पर सेवा स्थायी, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि मौजूदा राजनीति इस सत्य को भुला बैठी है। अब पद ही पहचान बन गया है और जनता से रिश्ता केवल औपचारिकता का प्रतीक बनकर रह गया है। नेताओं और जनता के बीच संवाद का जो पुल कभी लोकतंत्र की जान हुआ करता था, वह अब सुरक्षा घेरे, नौकरशाही की परतों और ट्रांसफर-पोस्टिंग की फाइलों में टूट चुका है। राजनीति की भाषा में 'सेवा' का स्थान 'प्रबंधन' ने ले लिया है।

कटारिया ने भाषण के दौरान पूछा, "मैं महामहिम बन गया तो क्या जनता से दूर हो जाऊं? उनका यह सवाल केवल एक वाक्य नहीं बल्कि उस असहजता का प्रतीक है, जो हर सच्चे कार्यकर्ता के भीतर तब जन्म लेती है, जब उसे सत्ता के ऊंचे पदों पर आसीन कर दिया जाता है। पद की गरिमा और मर्यादा जरूरी है, लेकिन जब यह आम आदमी से संवाद में बाधक बन जाती है, तो लोकतंत्र की आत्मा घुटने लगती है।"

कटारिया जिस सोने के पिंजरे की बात करते हैं, वह 'सोने का पिंजरा' वास्तव में उस स्थिति का परिचायक है, जिसमें बाहरी वैभव है, लेकिन भीतर सन्नाटा पसरा है। उसमें चमक है, लेकिन प्राणवायु नहीं। मर्यादा है, पर जीवंतता का नितांत अभाव है। कटारिया की यह पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं है। यह नेताओं की उस पीढ़ी की पीड़ा है, जिसने राजनीति को हमेशा सेवा समझा, धंधा नहीं बनाया। यह पीढ़ी मानती थी कि नेता जनता से ताकत लेता है, लेकिन जनता पर शक्ति नहीं दिखाता। नेताओं की यह पीढ़ी दरी बिछाने में शर्म नहीं करती थी, लेकिन लोकतंत्र की आत्मा को जीवित रखती थी। पर अब दौर बदल चुका है। किसी भी दल को देख लीजिए, आज उसका कार्यकर्ता व्यवस्था के किनारों पर खड़ा उपेक्षित महसूस कर रहा है, इसीलिए दलगत राजनीति भी अब जनता के बीच से नहीं, सत्ता के गलियारों से संचालित होती दिखाई देती है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं मकान नं.197/1, समता आश्रम गली, रामपुर रोड, हल्द्वानी, जिला नैनीताल, उत्तराखंड-263139 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक - अमित शर्मा*** 05946292618 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UTTHIN/2021/79698, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नैनीताल होगा)।

कला और सौंदर्य की मिसाल है ओरछा का किला

हर किले का अपना अलग रूप और सौंदर्य होता है। यह अपने अंदर सिर्फ इतिहास ही नहीं समेटे रहते हैं, बल्कि इसमें कला के भी दीदार होते हैं। इन कलाकृतियों का सौंदर्य ही अनोखा नहीं है, बल्कि इसका भी अपना इतिहास और परंपरा है। ओरछा का किला भी कुछ ऐसा ही है। अपने अंदर बहुत नायाब सौंदर्य समेटे हुए। मध्य प्रदेश के ओरछा को भगवान राम की नगरी कहा जाता है। यहां के राजा राम हैं। इसलिए राम राजा मंदिर में प्रभु को सुबह शाम गार्ड ऑफ ऑनर देने की परंपरा है। ओरछा का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रही है। आज भी यहां के किले को देखने और राजा राम के दर्शन को भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं। यहां के किले आज भी अपने गौरवशाली इतिहास की कहानी कहते हैं।

उमंग अग्रवाल
कानपुर

16 वीं शताब्दी में बसा ओरछा शहर

ओरछा शहर की स्थापना 16वीं शताब्दी में हुई थी। बुंदेला महाराजा रुद्र प्रताप सिंह ने इस शहर की नींव 1501 में रखी थी। महाराजा रुद्र प्रताप सिंह ने महल का निर्माण शुरू कराया था, लेकिन यह उनके जीवन काल में पूरी तरह बनकर तैयार नहीं हो पाया। उनके बेटे भारतीचंद ने राजा महल का निर्माण पूरा कराने की कोशिश की पर वे भी इसमें सफल नहीं हुए। बाद में उनके बेटे मधुकर शाह ने महल को पूर्ण निर्माण 1531 में करवाया। महल के अंदर बुंदेली चित्रकारी के अद्भुत और नायाब नमूने देखने को मिलते हैं। कमरों में रामायण से संबंधित चित्र हर किसी को आकर्षित करते हैं।

नृत्यांगना के नाम पर भी एक महल

महाराज रुद्रप्रताप सिंह के वंशज राजा इंद्रसेन ने उस समय की मशहूर नृत्यांगना राय प्रवीण के सम्मान में एक महल की स्थापना कराई थी। इस महल को राय प्रवीण महल के नाम से लोग जानते हैं। यहां उकेरी गईं नृत्य की मुद्राएं यह दर्शाती हैं कि राजा नृत्य और संगीत को कितना बढ़ावा देते थे। बताते हैं कि शहंशाह अकबर को जब पता चला, तो उन्होंने राय प्रवीण और उनके गुरु केशवदास को दिल्ली स्थित महल बुलाया। जब राय प्रवीण ने देखा कि शहंशाह अकबर को उनके प्रति आसक्ति हो रही है, तो उन्होंने सांकेतिक रूप से गीत के जरिए उन्हें बताया कि मैं किसी और की प्रिय हूं। इसलिए उनका उपयोग करना आपकी गरिमा के अनुकूल नहीं होगा। इसके बाद शहंशाह अकबर ने राय प्रवीण को पूरे सम्मान के साथ ओरछा भेज दिया था।

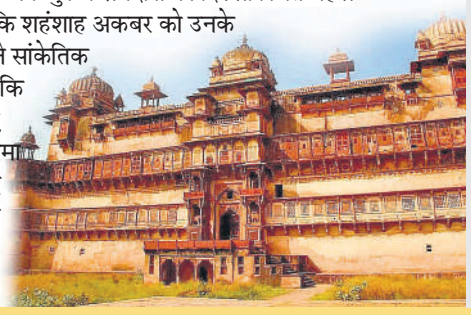

यहां जहांगीर भी एक रात ठहरे

ओरछा के किले पर मुगलों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। 1605 से लेकर 1627 तक बीरसिंह देव यहां के राजा थे। राजा बीर सिंह देव और मुगल बादशाह जहांगीर के बीच गहरी दोस्ती थी। महाराज ने अपने दोस्त जहांगीर के लिए महल की स्थापना कराई थी। इस महल में जहांगीर भी रुके। इसकी कलाकारी और भव्यता देखते ही बनती है। बीर सिंह के बेटे जुझार सिंह और जहांगीर के बेटे शाहजहां के बीच जब मनमुटाव हुआ तो शाहजहां ने जुझार सिंह से दिखावटी रिश्ता बनाया। जुझार सिंह और उनके छोटे भाई हरदौल सिंह के बीच दरार डाल दी। जुझार सिंह ने शाहजहां के कहने पर ही अपनी पत्नी से हरदौल की हत्या करा दी थी। रानी ने खीर में जहर डालकर हरदौल को खिला दिया था। कहा जाता है कि हरदौल अपनी भाभी से बहुत प्रेम करता था, लेकिन पति के कहने पर महारानी ने अपने देवर को मौत की नींद सुला दिया।

राजा बीर सिंह ने दतिया में बनवाया महल

दतिया जिले में स्थित सतखंडा महल पहाड़ पर स्थित है। यह महल राजपूत वास्तुकला और मुगल वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। ओरछा के राजा बीर सिंह देव द्वारा स्थापति किए गए 52 महलों में से एक है। सतखंडा महल अपनी अद्भुत कला के लिए प्रसिद्ध है। इस महल में 440 कमरे हैं। 1620 में ओरछा के राजा बीर सिंह ने इस महल की स्थापना की थी। इस सात मंजिला महल के निर्माण में न तो लकड़ी और न ही लोहे का इस्तेमाल किया गया है। यह सिर्फ पत्थर और ईटों से बनाया गया है। मजबूती का प्रमाण यही है कि यह 1620 से आज तक खड़ा है और पर्यटकों को लुभा रहा है। इस सात मंजिला खूबसूरत इमारत को केवल एक रात में रुकने के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है। राजा बीर सिंहदेव को दतिया जिला उपहार में मिला था।

कहानियों के देश में रंगकर्म

हम कहानियों का देश हैं। हम हमेशा से कहानियां सुनते-सुनाते आए हैं। दादी-नानी की कहानियां, या फिर गांव की चौपाल पर बैठकर बड़े-बूढ़ों की कहानियां। कोई तमाशा आया तो हमने उसमें भी कहानी सुनी। हर बरस होने वाली रामलीलाओं में हमने राम-रावण की कहानी सुनी।

हमारे देश में बरसों से कहानियां कही और सुनी जा रही हैं। गली-मोहल्लों, चौबारों और चौपालों से होती हुई ये कहानियां मंच तक आईं। संगीत, प्रकाश, वस्त्र-परिधान, उच्च अभिनय और उत्कृष्ट निर्देशनों से जब ये कहानियां सजाई गईं तो जैसे जादू हो गया। लोगों के दिल-दिमाग पर जैसे कोई नशा तारी हो गया। कोई चमत्कार जैसे किसी को बांध लेता है, उसी तरह रंगमंच ने अपने दर्शकों, अपने चाहने वालों को बांध लिया। एक लंबी परंपरा चल पड़ी।

लव तोमर
रंगकर्मी

एक दौर में, जब सिनेमा उतना हावी नहीं था, लोगों के पास मनोरंजन के साधन के रूप में केवल रंगमंच या मंच पर प्रदर्शित होने वाली कलाएं ही थीं। तब हम वे कहानियां कह रहे थे जो लोगों की कहानियां थीं। लोग उनसे जुड़ते थे। वे अपने आपको उन नाट्य-प्रदर्शनों में खोजते थे और खोज लेने पर उनसे जुड़कर हंसते थे, रोते थे, साथ में गाते थे।

समय बदला। दर्शक और निर्देशक, एक ही तरह के काम बनाकर और देखकर ऊबने लगे। तब जरूरत महसूस हुई नए प्रयोगों की, जो समय की मांग को देखते हुए बड़े अभिनेताओं और निर्देशकों द्वारा किए भी गए। कुछ सफल हुए, कुछ असफल भी। एक संतुलन चाहिए था, जिसमें नई कहानियों या फिर पुराने नाटकों पर नए प्रयोग किए जाते, लेकिन प्रयोगों की अंधाधुंध दौड़ ने संतुलन बिगाड़ दिया। कहानियां नाटकों से इस तरह गायब हो गईं जैसे कभी थीं ही नहीं। बचे रह गए केवल खोखले प्रयोग, अवसादों से भरे अभिनय, शून्य में देर तक बिना भाव या बेहोशी से ताकते हुए अभिनेता, ऊल-जलूल आवाजें, चीख-चिल्लाहट।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि निर्देशकों की 'कुछ नया करने', 'कुछ अलग करने' की हवस ने कहानियों को कहीं बहुत पीछे छोड़ दिया है। प्रयोग, जो रंगमंच के लिए वरदान की तरह प्रकट हुए थे, धीरे-धीरे कब श्राप में बदल गए, यह न तो दर्शक भांप पा रहे हैं, न निर्देशक, लेकिन इनका असर दिख रहा है-नाटकों के प्रदर्शनों में दर्शकों की लगातार गिरती संख्या इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। ऑडिटोरियमों (नाट्यगृहों) में अब आपको दर्शक के रूप में ज्यादातर या तो आलोचक दिखाई देंगे, या फिर रंगकर्मी और कुछ दर्शक। इन 'महान प्रयोगों' वाले नाटकों में यदि आपको कुछ समझ न आए, तो गलती नाटक की नहीं, आपकी है। जैसा कि हरिशंकर परसाई जी ने कहा है- "जो समझ न आए, वो और पवित्र होता है।"

अब अपने मन के अवसादों और असुरक्षाओं को निर्देशकों और अभिनेताओं ने मिलकर मंच पर परोसना शुरू कर दिया है। इस सबमें से लेखक और उसकी लिखी गई कहानी को नाटक के लिए अब न तो ज़रूरी समझा जाता है, न ही कोई उसकी बात करता है। हिंदी रंगमंच में उच्च-स्तरीय नाटकों की कमी का मुख्य कारण लेखकों की लगातार होती उपेक्षा भी है।

आधुनिक समय में, जब स्क्रीन मनोरंजन इतना अधिक बढ़ गया है, तब यह कहा जा सकता है कि रंगमंच और लाइव आर्ट्स का भविष्य उज्ज्वल है, ख़ासकर नाटकों का, क्योंकि एक समय के बाद लोगों को स्क्रीन से ऊब होगी, रोज बनते सिनेमा से ऊब होगी, रील्स और यूट्यूब वीडियो से ऊब होगी। तब मानव-मन लौटेगा वापस उस खोज में, जहां वह खोजेगा इंसान का इंसान से सीधा कलात्मक संपर्क।

तब हमें कहानियों की ज़रूरत होगी। हमें जरूरत होगी प्रयोगों के साथ फिर से कहानियां कहने की। हमें समझना होगा कि दर्शक अपने अभिनेता के साथ रोना, हंसना, प्रेम करना, किसी सुंदर कहानी का किरदार बनकर खुद को भूल जाना चाहता है। नाटक देखते हुए वह डेढ़ से दो घंटे अपनी दुनिया से परे कहीं चले जाना चाहता है। वह तैयार है आपके साथ यात्रा करने को, लेकिन क्या हम तैयार हैं? यदि उत्तर 'न' में है, तो हमें तैयारियां करनी होंगी, इससे पहले कि देर हो जाए।

रंगकर्म को लेकर देश, शहर, राज्य में यदा-कदा कुछ-न-कुछ कार्यक्रम होते रहते हैं, जिनका उद्देश्य या तो दिखावा होता है, जिससे सरकारी मदद लेकर रंगकर्म के नाम पर किया जाए, या फिर आत्म केंद्रित होकर खुद ही खुद को प्रसन्न करने का आडंबर।

समय आ गया है कि हम इस जड़ता को तोड़ें। रंगकर्म को नई ऊर्जा देने के लिए ज़्यादा से ज्यादा युवाओं को इसमें शामिल किया जाए। उन्हें बागडोर दी जाए, मौका दिया जाए, स्थान और सम्मान दिया जाए। नई पीढ़ी न केवल नई दृष्टि लेकर आती है, बल्कि वह उन प्रश्नों के स्थायी समाधान की भी संभावना रखती है, जो बरसों से रंगकर्म को घेरे हुए हैं। जैसे जीविका, संरचना और सामाजिक प्रासंगिकता के प्रश्न।

भारत त्योहारों का देश है। त्योहार मतलब उल्लास। इस उल्लास में कला का बड़ा ही महत्व था। किसी भी त्योहार को ले लीजिए, उसमें आपको हर स्तर पर कला का समावेश मिलेगा। कहीं घर और जमीन पर सुंदर रंगोली और कलाकृतियां उकेरी जाती हैं तो दीपावली जैसे त्योहारों में भी दीवारों की रंगाई-पुताई कर उस पर सुंदर चित्र उकेरे जाते थे। जमीन पर रंगोली बनाई जाती थी। तमाम तरह आकार-प्रकार के दीये बनाए जाते थे। अहम यह था कि इन सारे ही कामों में सभी की सहभागिता होती थी। लोगों को रोजगार मिलता था। त्योहारों की अर्थ व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि सभी के घर दीपावली की खुशहाली बराबर से रहती थी। दौर बदल गया है। पुराना कहकर नई जनरेशन ने परंपराओं और मान्यताओं को किनारे कर दिया है।

ऋतु चौधरी
लेखिका

आधुनिकता लील गई कला और धरोहर

कभी दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि पूरे जीवन का उत्सव हुआ करती थी। त्योहार आते ही घरों में हर्ष की लहर दौड़ जाती थी। बच्चे से लेकर बड़ों तक सब किसी न किसी तैयारी में जुट जाते थे। घरों की दीवारें, आंगन, गलियां सब अपनेपन की महक से भर उठती थीं। वह समय था जब त्योहार खरीदे नहीं जाते थे, बल्कि जीए जाते थे।

घर-आंगन की रौनक और मिट्टी की खुशबू

दीपावली से महीनों पहले ही घरों की लिपाई-पुताई शुरू हो जाती थी। दीवारें गोबर, लाल मिट्टी, गेरू और चुने से रंगी जाती थीं। महिलाएं अपने हाथों से आंगन में रंग-बिरंगे चित्र बनाती थीं। कहीं कमल खिला होता, कहीं मोर नाचता, तो कहीं पत्तियों और बेलों की लहराती सजावट होती। इन कलात्मक रचनाओं के लिए कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं था, न ही कोई 'आर्ट क्लास'। यह कला तो मां से बेटी और भाभी से ननद तक, स्नेह और अनुभव के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती थी। हर घर में कला थी, हर दीवार में स्नेह।

बाजार ने खत्म की कला की जीवंतता

बाजार त्योहारों पर हावी हो गए हैं। इसमें कला कब मर गई पता भी नहीं चला। बाजार ने हमारी परंपराओं को धीरे-धीरे निगल लिया। अब त्योहारों की तैयारी दुकानों और ऑनलाइन स्टोर्स पर पूरी होती है। न घर की लिपाई-पुताई के रंग हैं, न मिट्टी की खुशबू। बाजारीकरण ने उत्सवों को उत्पाद बना दिया है। दीये अब प्लास्टिक या बिजली के हो गए हैं, मिठाइयां डिब्बों में पैक होकर आती हैं। घरों में रौनक अब रोशनी की नहीं, एलईडी की चमक की हो गई है।

कुम्हारों का मौसम और दीयों की लौ

गांवों में कुम्हारिन नानी महीनों पहले से मिट्टी जमा करती थीं। उनके हाथों से गढ़े सैकड़ों दीये घर-घर की रौनक बनते थे। बाजारों और हाटों में दीयों की पंक्तियां सजी होती थीं। मिट्टी के ये दीपक न केवल घर को रोशन करते थे, बल्कि श्रम, परंपरा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी थे। दीवाली से पहले के दिन कुम्हारों, रंगसाजों और बनिया के लिए उत्सव जैसे होते थे। हर कोई किसी न किसी रूप में त्योहार का हिस्सा था। कोई दीप बनाता, कोई मिठाई, कोई सजावट।

मां अन्नपूर्णा की चतुराई और सहेजने की परंपरा

उस समय घरों में गाय-भैंसें होती थीं, दूध की कोई कमी नहीं। पर त्योहारों के खर्चे का हिसाब बड़ी चतुराई से घर की महिलाएं संभालती थीं। वे रोजमर्रा के उपयोग से थोड़ा दूध बचा लेतीं, दही और मावा तैयार करतीं और त्योहार के दिन वही स्वादिष्ट पकवान बनते। जलेबी, गुझिया, मठरी, चिरौंजी का हलवा और खुरमा। स्त्रियां केवल घर की रसोइया नहीं थीं, वे तो संस्कृति की संरक्षिका थीं। उनका हर काम परिवार के सुख और उत्सव से जुड़ा था। सच ही कहा गया है। मां अन्नपूर्णा की उपाधि यूं ही नहीं दी गई।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	82,029.98	25,145.50
गिरावट	297.07	81.85
प्रतिशत में	0.36	0.32

सोना 1,30,000 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,85,000 प्रति किलो

अमृत विचार

हल्द्वानी, बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

एलजी के शेयर 48% बढ़त के साथ बंद

नई दिल्ली। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया लिमिटेड के शेयर ने मंगलवार को बाजार में शानदार शुरुआत की और 1,140 रुपये प्रति के निर्गम मूल्य के मुकाबले 48 प्रतिशत से अधिक बढ़त के साथ बंद हुआ। बीएसई पर शेयर 50.43 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,715 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में, यह 52.31 प्रतिशत उछलकर 1,736.40 रुपये पर पहुंच गया। कारोबार के अंत में 48.19 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,689.40 रुपये पर बंद हुआ। एनएसई पर शेयर ने 50 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,710.10 रुपये शुरुआत की। अंत में 48.23 प्रतिशत चढ़कर 1,689.90 रुपये पर बंद हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन सुबह के कारोबार में 1,14,671.81 करोड़ रुपये रहा। दिन में मात्रा के संदर्भ में बीएसई पर कंपनी के 78.56 लाख शेयर और एनएसई पर 687.94 लाख शेयर का कारोबार हुआ।

फिक्की के अगले अध्यक्ष होंगे अनंत गोयनका

नई दिल्ली। उद्योग मंडल फिक्की ने मंगलवार को आरपीजी समूह के वाइस चेयरमैन अनंत गोयनका को 2025-26 के लिए अध्यक्ष बनाने की घोषणा की। फिक्की ने कहा कि फिलहाल संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोयनका अगले महीने के अंत में होने वाली वार्षिक आम बैठक के बाद हर्षवर्धन अग्रवाल की जगह अध्यक्ष पद संभालेंगे। आरपीजी समूह पांच अरब डॉलर का विविधीकृत समूह है। इसका कारोबार टायर, बुनियादी ढांचा, औषधि, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में फैला हुआ है। वह इसके पहले प्रमुख टायर विनिर्माता सिएट के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (एमडी एवं सीईओ) रह चुके हैं।

सीतारमण किसान केंद्रों का करेंगी उद्घाटन

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मंगलवार से कर्नाटक के चार दिवसीय दौरे पर हैं। वह किसान प्रशिक्षण केंद्रों और कृषि प्रसंस्करण के लिए साझा सुविधा केंद्रों का उद्घाटन करेंगी। सीतारमण के कार्यालय ने एक्स पर लिखा कि अपनी यात्रा के दौरान, मंत्री उन युवाओं से भी बातचीत करेंगी जो पीएम इंटर्नशिप योजना (पीएमआईएस) के तहत शामिल हुए हैं। राज्यसभा में कर्नाटक का प्रतिनिधित्व करने वाली सीतारमण चिलवाडगी गांव में मुरमुरे की एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम) इकाई का भी दौरा करेंगी।

मांग बढ़ने से बढ़ा रत्न-आभूषण का निर्यात

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद सितंबर में निर्यात 6.5% बढ़कर 2.9 अरब डॉलर पर पहुंचा

मुंबई, एजेंसी

रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) ने मंगलवार को कहा कि त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम में मांग बढ़ने से वैश्विक चुनौतियों के बावजूद सितंबर में कुल रत्न एवं आभूषण निर्यात 6.55 प्रतिशत बढ़कर 2,914.29 करोड़ डॉलर (25,737.50 करोड़ रुपये) का हो गया।

जीजेईपीसी ने कहा कि सितंबर, 2024 में रत्न एवं आभूषण निर्यात 2,735.26 करोड़ डॉलर (22,925.81 करोड़ रुपये) का रहा था। वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में, कुल रत्न एवं आभूषण निर्यात में 3.66% की वृद्धि देखी गई और यह पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि के 13.60 अरब डॉलर की तुलना में 14.09 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

जीजेईपीसी के चेयरमैन किरीट भंसाली ने कहा कि इस वित्त वर्ष की पहली छमाही में उद्योग में सुधार के उत्साहजनक संकेत दिखाई दे रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात, हांगकांग और ब्रिटेन जैसे प्रमुख बाजारों में रत्न एवं आभूषण उत्पादों की मांग मजबूत हुई है और निर्यात में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। प्रवासी भारतीयों के बीच आगामी त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम के साथ-साथ वैश्विक बाजारों में छुट्टियों के मौसम की मांग से आने वाली तिमाही

में इस सकारात्मक गति के बने रहने की उम्मीद है। जीजेईपीसी के अनुसार, भारतीय रत्न एवं आभूषण निर्यात के लिए एक प्रमुख गंतव्य - अमेरिका - को शुल्क संबंधी कारकों के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2025 की अप्रैल-सितंबर अवधि के लिए, अमेरिका को कुल निर्यात 40.28%घटकर 277 करोड़ 6.6 लाख डॉलर रह गया, जबकि तराशे और पॉलिश किए हुए हीरों का निर्यात 53.62% घटकर 117 करोड़ 50.9 लाख डॉलर रह गया।

भंसाली ने कहा कि जीजेईपीसी सरकार के साथ निकट समन्वय में है क्योंकि अमेरिकी बाजार को आपूर्ति करने वाले निर्यातक और निर्माता मौजूदा शुल्क स्थिति के कारण काफी तनाव का सामना कर रहे हैं। हम इस क्षेत्र को स्थिर करने के लिए राहत-उन्मुख उपायों की वकालत करने के लिए सरकार के साथ सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं।

मोबाइल फोन निर्यात 95% चढ़कर 1.8 अरब डॉलर पर

नई दिल्ली। देश का मोबाइल फोन निर्यात सितंबर में सालाना आधार पर 95% चढ़कर 1.8 अरब डॉलर से अधिक हो गया। उद्योग निकाय आईसीईए ने मंगलवार को अनुमानित आंकड़ों के आधार पर यह जानकारी दी। 'इंडिया सेल्युलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन' (आईसीईए) ने कहा कि अगस्त एवं सितंबर महीने उत्पादन समायोजन और मौसमी आपूर्ति चक्र के कारण पारंपरिक रूप से निर्यात के लिहाज से सुस्त माने जाते हैं। लेकिन इस बार का मजबूत प्रदर्शन देश में विकसित हुए मजबूत मोबाइल फोन विनिर्माण पारिस्थितिकी को दर्शाता है। संघ ने कहा कि अप्रैल-सितंबर के दौरान मोबाइल फोन निर्यात अनुमानित रूप से 13.5 अरब डॉलर रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 8.5 अरब डॉलर था। यह 60% से अधिक की वृद्धि है। यह दर्शाता है कि भारत का मोबाइल फोन निर्माण क्षेत्र निरंतर पैमाना, दक्षता एवं विश्वसनीयता के तीन स्तंभों पर टिके हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार है। अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रिया, नीदरलैंड और ब्रिटेन को भारत में निर्मित मोबाइल फोन का प्रमुख रूप से निर्यात होता है। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में अमेरिका को 9.4 अरब डॉलर का फोन निर्यात होने का अनुमान है, जो पिछले साल इसी अवधि में 3.1 अरब डॉलर था। इसमें सालाना आधार पर 200% की वृद्धि दर्ज की गई। कुल फोन निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी लगभग 70 प्रतिशत रही जबकि पिछले साल यह 37 प्रतिशत थी। आईसीईए ने वित्त वर्ष 2025-26 में भारत के मोबाइल फोन निर्यात के 35 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान जताया है।

एमईडीएफ में भुगतान के बाद जमे मांस के निर्यात की अनुमति

ठंडा और जमे हुए मांस उत्पादों के निर्यात को वाणिज्य मंत्रालय की इकाई एपीडा द्वारा प्रबंधित मांस निर्यात विकास कोष (एमईडीएफ) में भुगतान के बाद ही अनुमति दी जाएगी। यह निर्णय 29 अक्टूबर, 2025 से लागू होगा। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) देश के कृषि और संबद्ध उत्पाद निर्यात से संबंधित मुद्दों की देखता है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने कहा कि ठंडे और जमे हुए मांस उत्पादों के निर्यात की अनुमति, केवल एपीडा द्वारा संचालित मांस निर्यात विकास कोष (एमईडीएफ) में धन भेजने पर ही दी जाएगी। पशु उत्पादों का निर्यात भारतीय कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। पशु उत्पादों के निर्यात में भैंस का मांस, भेड़/बकरी का मांस, पॉल्ट्री उत्पाद, पशु आवरण, दूध और दुग्ध उत्पाद और शहद शामिल हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में देश का पशु उत्पादों का निर्यात 4.5 अरब डॉलर का हुआ था।

भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान मुद्राकोष ने बढ़ाकर किया 6.6%

नई दिल्ली, एजेंसी

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने मंगलवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाकर 6.6% कर दिया। इससे पहले इसके 6.4% रहने का अनुमान लगाया था।

पहली तिमाही में मजबूत आर्थिक वृद्धि के साथ यह अनुमान बढ़ाया गया है, जो अमेरिकी शुल्क के प्रभाव को सीमित करेगा। हालांकि, मुद्राकोष (आईएमएफ) ने अपनी ताजा विश्व आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में 2026-27 के लिए वृद्धि दर के अनुमान को 0.2% घटाकर 6.2% कर दिया है। रिपोर्ट में कहा गया कि जुलाई के विश्व आर्थिक परिदृश्य की अद्यतन रिपोर्ट की तुलना में, 2025 के लिए वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाया गया है। इसमें पहली तिमाही की मजबूत वृद्धि जुलाई से भारत से आयात पर अमेरिकी शुल्क दर में वृद्धि की भरपाई से कहीं अधिक है। इसके साथ 2026 के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को कम किया गया है।

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने इससे पहले 6.4 प्रतिशत रहने का लगाया था अनुमान

उल्लेखनीय है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर अप्रैल-जून में 7.8 प्रतिशत रही, जो पांच तिमाहियों में सबसे अधिक है। इस महीने की शुरुआत में विश्व बैंक ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर का अनुमान 6.3 से बढ़ाकर 6.5% किया था। साथ ही कहा था कि देश सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। आईएमएफ ने जुलाई में भारत की आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को संशोधित कर 2025 और 2026 दोनों के लिए 6.4 प्रतिशत कर दिया था।

परमाणु ऊर्जा में वृद्धि को कानून में बदलाव

नई दिल्ली, एजेंसी

सरकार की समिति ने 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए विधायी संशोधनों से लेकर देश में यूरेनियम उत्पादन बढ़ाने समेत कई उपायों की सिफारिश की है। ये उपाय न केवल परमाणु क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करेंगे, बल्कि ऐसी परियोजनाओं की स्थापना के लिए आवश्यक मंजूरी में तेजी लाने में भी मदद करेंगे।

विद्युत मंत्रालय ने फरवरी में '2047 तक 100 गीगावाट परमाणु क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक समिति का गठन किया था।

- यूरेनियम उत्पादन बढ़ाने समेत कई उपायों की सिफारिश

समिति ने 2047 तक 100 गीगावाट का लक्ष्य हासिल करने के लिए सभी पहलुओं पर कई दौर की चर्चा की है और लक्ष्य के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करने के साथ उन्हें कम करने के लिए आवश्यक उपायों की सिफारिश की है। देश में वर्तमान में स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 8.88 गीगावाट है।

समिति का अनुमान है कि 100 गीगावाट क्षमता प्राप्त करने के लिए 19 लाख करोड़ रुपये के निवेश की जरूरत होगी। परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 और परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010 (सीएलएनडीए) में संशोधन, आवश्यक निजी पूंजी लाने और आपूर्तिकर्ताओं एवं संभावित निवेशकों की जोखिम धारणा को कम करने के लिए आवश्यक होंगे। परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 वर्तमान में परमाणु परियोजनाओं में निजी क्षेत्र और यहां तक कि राज्य सरकारों की भागीदारी की भी अनुमति नहीं देता है।

कीमतों में नरमी से थोक महंगाई घटकर 0.13 प्रतिशत

नई दिल्ली, एजेंसी

खाद्य पदार्थों, ईंधन एवं विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों में नरमी के बीच सितंबर में थोक मुद्रास्फीति (महंगाई) घटकर 0.13% रह गई। मंगलवार को जारी सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी दी गई। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति पिछले साल अगस्त में 0.52% और सितंबर में 1.91% थी।

आंकड़ों के अनुसार, खाद्य वस्तुओं की कीमतें सितंबर में 5.22% कम हुईं जबकि अगस्त में यह आंकड़ा 3.06% था। सब्जियों की कीमतों में भी गिरावट देखी गई। सब्जियों की कीमत सितंबर में 24.41% घटी जबकि अगस्त में यह 14.18% कम हुई थी। विनिर्मित उत्पादों के मामले में महंगाई अगस्त के 2.55% के मुकाबले घटकर 2.33% रह गई। ईंधन और बिजली की कीमतें सितंबर

में 2.58% कम हुईं जबकि पिछले महीने इनमें 3.17% गिरावट आई थी।

वित्तीय सेवा कंपनी बार्कलेज इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री आस्था गुडवानी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर वस्तुओं की कीमतों में सामान्य रूप से कमी के कारण थोक महंगाई के लंबे समय तक कम बने रहने की उम्मीद है। इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च के एसोसिएट निदेशक पारस जसराय ने कहा कि सितंबर, 2025 में मुख्य मुद्रास्फीति बढ़कर 31 महीने के उच्चस्तर 1.9% पर पहुंच गई। इसकी वजह सालाना आधार पर आभूषणों की कीमतों में 34.1% की रिकॉर्ड वृद्धि रही।

पीएचडीसीसीआई के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं महासचिव रंजीत मेहता ने कहा कि थोक कीमतों में कमी की मुख्य वजह खाद्य एवं ऊर्जा की कम लागत, मजबूत कृषि उत्पादन और वैश्विक स्तर पर जिंस की स्थिर कीमतें रहीं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) खुदरा मुद्रास्फीति पर नजर रखता है। केंद्रीय बैंक ने इस महीने की शुरुआत में नीतिगत दरों को 5.5% पर अपरिवर्तित रखा था। सोमवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर आठ साल के निचले स्तर 1.5% पर आ गई।

राष्ट्रीय

मंगोलिया के विकास में भारत दृढ़ साझेदार : मोदी

मंगोलिया के राष्ट्रपति उखना भारत की चार दिवसीय यात्रा पर, भारत मंगोलिया के लोगों को मुफ्त ई-वीजा कराएगा उपलब्ध

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगोलिया के राष्ट्रपति हुरेलसुख उखना के साथ व्यापक वार्ता के बाद मंगलवार को कहा कि मंगोलिया के विकास में भारत एक विश्वसनीय साझेदार रहा है और दोनों देश एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। उखना सोमवार को भारत की चार दिवसीय यात्रा पर नई दिल्ली पहुंचे। राष्ट्रपति के रूप में यह उनकी पहली भारत यात्रा है।

उखना के साथ बातचीत के बाद मोदी ने कहा कि भारत मंगोलिया के लोगों को मुफ्त ई-वीजा उपलब्ध कराएगा। उन्होंने कहा कि भारत की 1.7 अरब अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता से कार्यान्वित तेल रिफाइनरी परियोजना मंगोलिया की

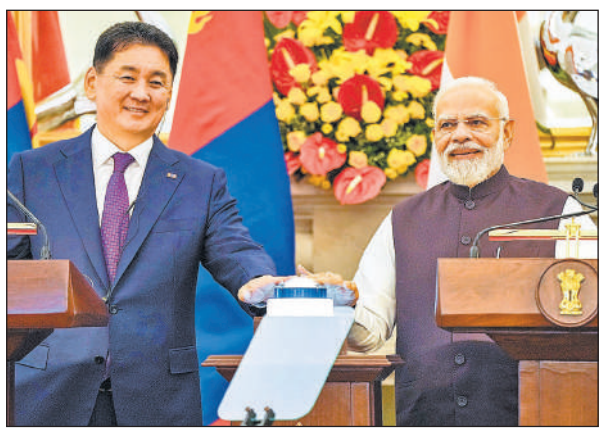

नई दिल्ली में हैदराबाद हाउस में संयुक्त प्रेस वार्ता के दौरान मंगोलियाई राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

ऊर्जा सुरक्षा को नई मजबूती प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि यह भारत की विश्व में सबसे बड़ी विकास साझेदारी परियोजना है और 2500 से भी अधिक भारतीय पेशेवर मंगोलिया के साथियों के साथ मिलकर इस परियोजना को साकार कर रहें हैं। मोदी ने कहा कि हम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर घनिष्ठ साझेदार के रूप में खड़े हैं और एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। मंगोलिया के राष्ट्रपति ने स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में भारत की अग्रणी भूमिका की सराहना की तथा विशेष रूप से नई दिल्ली के नेतृत्व वाले अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का उल्लेख किया। अपने मीडिया वक्तव्य में मोदी ने यह भी कहा कि भारत और मंगोलिया के बीच संबंध महज कूटनीतिक संबंध से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि सदियों से दोनों देश बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से बंधे हुए हैं, यही कारण है कि हमें आध्यात्मिक सहोदर भी कहा जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उखना के साथ हुई बातचीत में दोनों देशों के बीच इस परंपरा और ऐतिहासिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

10 लाख प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण शीघ्र

मोदी ने कहा कि मुझे यह बताते हुए खुशी है कि अगले वर्ष भगवान बुद्ध के दो महान शिष्यों सारिपुत्र और मौद्गल्या-यन के पवित्र अवशेषों को भारत से मंगोलिया भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत 'गंदन' बौद्ध मठ में एक संस्कृत शिक्षक भी भेजेगा, ताकि वहां के बौद्ध ग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया जा सके और प्राचीन ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमने 10 लाख प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण की परियोजना को भी शीघ्र ही शुरू करने का निर्णय लिया है। मंगोलिया में बौद्ध धर्म के लिए नालंदा विश्वविद्यालय की अहम भूमिका रही है।

सोनम वांगचुक को एकांत कारावास में नहीं रखा गया है : जोधपुर जेल अधीक्षक

नई दिल्ली, एजेंसी

जोधपुर केंद्रीय कारागार अधीक्षक ने उच्चतम न्यायालय को अवगत कराया कि रासुका के तहत हिरासत में लिये गए जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को एकांत कारावास में नहीं रखा गया है और उन्हें आगंतुकों से मिलने सहित वे सभी अधिकार प्राप्त हैं, जो एक कैदी को मिलते हैं।

वांगचुक राजस्थान की जोधपुर जेल में बंद हैं। जेल अधीक्षक ने शीर्ष अदालत में दाखिल एक हलफनामे में कहा कि वांगचुक किसी भी पुरानी बीमारी से पीड़ित नहीं हैं और चिकित्सकीय और शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं। हलफनामे में कहा गया है कि बंदी को जनरल वार्ड में 20 गुणा 20 फुट के एक मानक बैरक में रखा गया था, जहां वह आज तक बंद हैं और फिलहाल वह इस

- उच्चतम न्यायालय को बताया कि वांगचुक को आगंतुकों से मिलने सहित सभी अधिकार प्राप्त

जेल बैरक में अकेले रह रहे हैं। यह हलफनामा वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. अंगमो की ओर से उच्चतम न्यायालय में दायर की गई उस याचिका के जवाब में दाखिल किया गया है, जिसमें उन्होंने रासुका के तहत अपने पति की हिरासत को चुनौती दी है और उनकी तत्काल रिहाई की मांग की है। जेल अधीक्षक ने बताया कि वांगचुक पूरी तरह से स्वस्थ हैं और हिरासत के बाद से हर दिन सामान्य आहार ले रहे हैं। हलफनामे में कहा गया है कि यह रेखांकित करना आवश्यक है कि राजस्थान कारागार नियमावली, 2022 के नियम 538 के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम, 1980 के तहत बंदियों को मामले के तथ्यों से परिचित स्थानीय पुलिसकर्मी की उपस्थिति के बिना अपने मुलाकातियों से बातचीत करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को राज्य का दर्जा दिये जाने और इसे छठी अनुसूची में शामिल किये जाने की मांग को लेकर हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों के दो दिन बाद वांगचुक को 26 सितंबर को रासुका के तहत हिरासत में लिया गया था। इस हिंसक प्रदर्शन में चार लोगों की मौत हो गयी और 90 घायल हो गये थे। सरकार ने उन पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया है।

यूपीएससी की अंतरिम उत्तर कुंजी संबंधी बदलाव को सुप्रीम मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसी

- पीठ ने लाखों उम्मीदवारों को राहत देते हुए परीक्षाओं में पारदर्शिता का मार्ग किया प्रशस्त

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा के तुरंत बाद अंतरिम उत्तर कुंजी प्रकाशित करने की संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की नीति में बदलाव को मंगलवार को मंजूरी दे दी। न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अतुल एस चंदुरकर की पीठ ने लाखों उम्मीदवारों को बड़ी राहत देते हुए भविष्य की परीक्षाओं में पारदर्शिता बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया।

पीठ याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायालयों के माध्यम से पिछली शिकायतों के समाधान की मांग करने की भी अनुमति दी। शीर्ष अदालत ने उत्तर कुंजी जारी करने की संघ लोक सेवा आयोग की कथित अपारदर्शी नीति को चुनौती देने वाली कई याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह अनुमति दी। शीर्ष अदालत ने न्यायमित्र वरिष्ठ अधिवक्ता जयदीप गुप्ता और एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड प्रांजल किशोर की उनके व्यापक नोट के लिए भी सराहना की, जिसमें प्रारंभिक परीक्षा के बाद उत्तर कुंजी तुरंत जारी करने की सिफारिश की गई थी। इस सिफारिश ने यूपीएससी को हिमांशु एवं अन्य बनाम भारत संघ के मुख्य मामले में दायर अपने प्रति-हलफनामे में इस मांग को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। आयोग ने नया ढांचा अपनाया है जिसके तहत आपत्तियों के लिए अंतरिम कुंजियां प्रारंभिक परीक्षा के तुरंत बाद, जबकि अंतिम कुंजियां सभी स्तर के परिणामों के बाद जारी होंगी।

अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई 12 नवंबर को

- अग्रिम जमानत के लिए सत्र न्यायालय का रुख किए बिना वादियों द्वारा सीधे उच्च न्यायालय जाने का मामला

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि वह 12 नवंबर को उस मामले की सुनवाई करेगा, जिसमें अग्रिम जमानत के लिए सत्र न्यायालय का रुख किए बिना वादियों द्वारा सीधे उच्च न्यायालय जाने का मुद्दा उठाया गया था। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ को बताया गया कि केरल में अग्रिम जमानत के 80 प्रतिशत मामले पहले वहां के उच्च न्यायालय में आते हैं।

आठ सितंबर को शीर्ष अदालत ने कहा था कि यद्यपि उच्च न्यायालय और सत्र न्यायालय को गिरफ्तारी-पूर्व जमानत की याचिका पर विचार करने का समवर्ती क्षेत्राधिकार प्रदान किया गया है, लेकिन न्यायालयों के पदानुक्रम की मांग है कि इस तरह के उपाय का अनुरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को सीधे उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए।

अडाणी को संपत्तियां बेचने के लिए सहारा की याचिका पर केंद्र और सेबी से उच्चतम न्यायालय ने मांगा जवाब

उच्चतम न्यायालय ने सहारा इंडिया कमर्शियल कॉरपोरेशन लिमिटेड की उस याचिका पर केंद्र, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और अन्य हितधारकों से जवाब मांगा, जिसमें कंपनी ने अडाणी प्रॉपर्टीज प्राइवेट लिमिटेड को 88 प्रमुख संपत्तियां बेचने की अनुमति मांगी है। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति सूर्यकांत और एमएम सुंदरेश की विशेष पीठ ने सहारा समूह के धन अदायगी दायित्वों से संबंधित लंबे समय से चल रहे मामलों में सहारा इंडिया कमर्शियल कॉरपोरेशन लिमिटेड (एसआईसीसीएल) के अंतरिम आवेदन पर सुनवाई की। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की दलीलों पर गौर करते हुए पीठ ने आदेश दिया कि केंद्रीय वित्त और सहकारिता मंत्रालयों को वर्तमान कार्यवाही में पक्ष बनाया जाए और 17 नवंबर तक याचिका पर उनका जवाब मांगा। पीठ ने न्यायमित्र और वरिष्ठ अधिवक्ता शेखर नफड़े से सहारा फर्म के अदाणी समूह की कंपनी को बेची जाने वाली प्रस्तावित 88 संपत्तियों का विवरण तैयार करने को कहा।

शीर्ष अदालत ने केरल उच्च न्यायालय की उस प्रथा पर ध्यान दिया था, जिसमें वादी द्वारा सत्र न्यायालय में जाए बिना अग्रिम जमानत आवेदनों पर सीधे विचार किया जाता है। मंगलवार को पीठ ने वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा की दलीलें सुनीं, जो इस मामले में न्यायमित्र के रूप में इसकी सहायता कर रहे हैं। मामले में पेश हुए वकीलों में से एक ने कहा कि केरल में लगभग 80 प्रतिशत अग्रिम जमानत याचिकाएं पहले उच्च न्यायालय में आती हैं। सुनवाई के दौरान लूथरा ने न्याय तक पहुंच के पहलू का उल्लेख किया। पीठ ने कहा कि अब हम हर जगह ई-फाइलिंग की ओर बढ़ रहे हैं।

ईसाई स्कूल मुस्लिम को हिजाब के साथ में अनुमति दे : केरल सरकार

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

- प्रधानाचार्य-प्रबंधन को निर्देशित किया कि वे छात्रा की मानसिक परेशानियों का भी समाधान करें

केरल के सामान्य शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी ने मंगलवार को कोच्चि में ईसाई संस्थान की ओर से संचालित एक निजी स्कूल को निर्देश दिया कि वह वहां पढ़ने वाली एक मुस्लिम लड़की को हिजाब पहनकर शिक्षा जारी रखने की अनुमति दे। मंत्री ने स्कूल के प्रधानाचार्य और प्रबंधन को निर्देश दिया कि वे छात्रा और उसके अभिभावकों को संस्थान में 'हिजाब' पहनने के कारण होने वाली मानसिक परेशानी का भी समाधान करें।

शिवनकुट्टी के कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में कहा गया कि उन्हें बुधवार तक इस संबंध में एक रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया गया है। शिवनकुट्टी ने बयान में जोर देकर कहा कि धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को कायम रखने वाले केरल में किसी भी छात्रा के सामने ऐसी कठिनाई पेश नहीं आनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि किसी भी शैक्षणिक संस्थान को संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। मंत्री का यह निर्देश एर्णाकुलम के शिक्षा उपनिदेशक द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के बाद आया, जिसमें कहा गया था कि स्कूल प्राधिकारियों की ओर से गंभीर चूक हुई है। उप निदेशक ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि छात्रा को हिजाब की वजह से कक्षा में बैठने नहीं देना गंभीर कदाचार और शिक्षा के अधिकार अधिनियम का उल्लंघन है।

ब्रिटेन ने वीजा आवेदकों के लिए अंग्रेजी की परीक्षा की और कठिन

लंदन। ब्रिटेन की सरकार ने भारत सहित दूसरे देशों के वीजा आवेदकों के लिए अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा को मंगलवार को और कठिन बनाने की शर्तें पेश कीं। ब्रिटेन में बढ़ते आव्रजन पर बड़ी कार्रवाई के तहत संसद में यह प्रस्ताव रखा गया।

ब्रिटेन का गृह विभाग अंग्रेजी भाषा की यह नई परीक्षा आयोजित की जाएगी। आठ जनवरी, 2026 से सभी कुशल श्रमिकों के लिए आगामी वीजा आवेदन प्रक्रिया के हिस्से के रूप में परिणामों का सत्यापन किया जाएगा। वीजा आवेदक का अंग्रेजी बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने का

- **बढ़ते आव्रजन पर व्यापक कार्रवाई के लिए संसद में रखा गया प्रस्ताव**

स्तर ए-लेवल अथवा 12वीं कक्षा के समकक्ष होना चाहिए, जिसे लेवल बी2 कहा जाता है। गृह विभाग का मानना है कि इससे तय होगा कि वीजा आवेदक ब्रिटेन के जीवन में घुलमिल सकेंगे। गृहमंत्री शबाना महमूद ने कहा, इस देश ने हमेशा उन लोगों का स्वागत किया है जो यहां आकर देश के विकास में योगदान देते हैं, लेकिन प्रवासियों का हमारी भाषा सीखे बिना यहां आना, हमारे राष्ट्रीय जीवन में योगदान देने में असमर्थ होना अस्वीकार्य है।

मारिया को नोबेल देने से नाराज वेनेजुएला ने नार्वे दूतावास पर ताला लगाया

नार्वे और ऑस्ट्रेलिया में अपने दूतावास पहले ही किए बंद, देश की सरकार की नाक में दम करती रही हैं विपक्ष की नेता माचादो

काराकस, एजेंसी

देश की विपक्षी नेता मारिया कोरिना माचादो को 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार देने से नाराज वेनेजुएला सरकार ने नार्वे के दूतावास पर ताला लगा दिया है। वेनेजुएला में नोबेल समिति के फैसले की ही कड़ी आलोचना का ज्वार थम नहीं रहा है। कहा जा रहा है कि माचादो देश में सत्ता पलटने के लिए विदेशी सैन्य हस्तक्षेप की मांग करती रही हैं और खुद भी तख्तापलट के प्रयासों में भागीदार रही हैं।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने माचादो को धुर दक्षिणपंथी नेता बताते हुए कहा कि वह देश में बाहरी हस्तक्षेप की मांग करती रही हैं, जबकि लोग इसे अस्वीकार कर चुके हैं। हाल के जनमत सर्वेक्षणों से पता चला है कि 90 प्रतिशत से अधिक वेनेजुएलावासी देश के खिलाफ किसी भी बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं। वेनेजुएला के विदेश मंत्रालय ने सोमवार को संसाधनों के रणनीतिक पुनर्वितरण का हवाला देते हुए नॉर्वे और ऑस्ट्रेलिया में अपने दूतावासों को बंद करने की घोषणा कर दी थी।

सामाजिक अधिकार के लिए काम करने वाले कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने माचादो को पुरस्कार देने की घोषणा के बाद से ही इस फैसले की निंदा की और निराशा जताते हुए हुए कहा शांति के पुरस्कार को आधुनिक उपनिवेशवाद के साधन के रूप में बदल दिया गया है। डोमनिकन राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के एक गठबंधन ने संयुक्त रूप से इस फैसले की आलोचना करते हुए कहा, किसी ऐसे व्यक्ति को नोबेल शांति पुरस्कार देना जिसने खुले तौर पर अमेरिकी और इजराइली सैन्य हस्तक्षेप का आह्वान किया है, उस शांतिवादी भावना का अपमान है जिसने अल्फ्रेड नोबेल को प्रेरित किया था।

देश में तख्तापलट की वकालत करती रही हैं मारिया

माचादो 2002 के तख्तापलट में भाग लेकर चर्चा में आई थीं। तब तत्कालीन राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज़ को कुछ समय के लिए सत्ता से बेदखल कर दिया गया था। वह 2014 की ला सालिडा सड़क हिंसा में भी शामिल रही थीं, जिसमें दर्जनों लोग मारे गए थे। माचादो वेनेजुएला पर अमेरिका के आर्थिक प्रतिबंधों का समर्थन करने के साथ इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से वेनेजुएला में सत्ता पलटने के लिए सैन्य सहयोग भी मांग चुकी हैं।

रूबियो ने किया था नोबेल पुरस्कार के लिए समर्थन

नोबेल पुरस्कार के लिए माचादो का समर्थन अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने किया था, जो वेनेजुएला के प्रति वर्तमान अमेरिकी नीतियों के कट्टर समर्थक रहे हैं। माचादो नोबेल मिलने के बाद कई बार उसे ट्रंप को समर्पित करने की घोषणा कर चुकी हैं। अमेरिका ने मादक पदार्थ विरोधी अभियान के नाम पर कैरेबियन सागर में वेनेजुएला क्षेत्र के किनारे बड़े पैमाने पर सैन्य तैनाती कर रखी है। अमेरिकी सेना ने सितंबर से अब तक कम से कम चार नावों पर बमबारी की है, जिसमें कुल मिलाकर 20 से ज्यादा नागरिक मारे गए हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

स्पेसएक्स ने स्टारशिप रॉकेट की 11वीं परीक्षण उड़ान शुरू की

वाशिंगटन। स्पेसएक्स ने सोमवार को अपने एक और विशाल स्टारशिप रॉकेट को परीक्षण उड़ान पर भेजा, जो पिछली बार की तरह इस बार भी सफलतापूर्वक दुनिया के आधे हिस्से में पहुंचा और साथ ही नकली उपग्रहों को भी प्रक्षेपित किया। स्टारशिप अब तक का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली रॉकेट है और यह टेक्सास के दक्षिणी सिरे से शाम को गर्जना के साथ उड़ा। उड़ान के बाद इससे बूस्टर अलग हो गया और यह मेक्सिको की खाड़ी में योजनाबद्ध तरीके से पहुंचा। अंतरिक्ष यान हिंद महासागर में उतरने से पहले अंतरिक्ष में उड़ता रहा। स्पेसएक्स के डैन ह्यूट ने घोषणा की 'धरती पर वापसी पर स्वागत है स्टारशिप । क्या दिन है।' यह स्टारशिप की 11वीं परीक्षण उड़ान थी।

चीन कर रहा है अपने चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण

बीजिंग। चीन चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण कर रहा है और साथ ही समुद्री परीक्षण पूरा होने के बाद 'फुजियान' नामक तीसरे विमानवाहक पोत को सेवा में शामिल करने की तैयारी में है। हांगकांग आधारित 'साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट' ने मंगलवार को विमानवाहक पोत के उपग्रह से लिए गए चित्र पोस्ट करते हुए कहा कि चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण कार्य लियाओनिंग प्रांत के डालियान स्थित एक शिपयार्ड में प्रगति पर है। चीनी सैन्य प्रवक्ता झांग शियाओगांग ने पिछले महीने कहा था कि तीसरा विमानवाहक पोत 'फुजियान' जल्द ही नौसेना में शामिल कर लिया जाएगा। चीन के तीनों ही विमानवाहक पोत पारंपरिक ऊर्जा से संचालित हैं।

रूस के आर्कान्जेस्क क्षेत्र में मिला 340 कैरेट का बड़ा हीरा

मॉस्को। रूस के आर्कान्जेस्क क्षेत्र में एक भंडार से 340 कैरेट का एक उच्च गुणवत्ता वाला हीरा मिला है। गवर्नर अलेक्जेंडर त्सिबुल्स्की ने कहा कि यह हीरा आधुनिक रूस में खोजे गए पांच सबसे बड़े हीरों में से एक है और यह स्थानीय वी. ग्रिब भंडार के औद्योगिक विकास के दौरान मिला। यह अब तक का सबसे बड़ा हीरा है। गवर्नर के अनुसार, यह रत्न न केवल अपने असाधारण आकार के लिए, बल्कि अपनी गुणवत्ता और बाजार के दामों के लिए भी खास है। उन्होंने कहा, ऐसे सभी प्राकृतिक हीरों की तादाद दो प्रतिशत से अधिक नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एकजुट वैश्विक दृष्टिकोण जरूरी

संयुक्त राष्ट्र सैन्य योगदानकर्ता देशों के सैन्य प्रमुखों के सम्मेलन में बोले सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी

नई दिल्ली, एजेंसी

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य की अभूतपूर्व चुनौतियों से निपटने के लिए शांति स्थापना मिशनों में एकजुटता और वैश्विक दृष्टिकोण का आह्वान किया। जनरल द्विवेदी ने मंगलवार को यहां संयुक्त राष्ट्र सैन्य योगदानकर्ता देशों (यूएनटीसीसी) के सैन्य प्रमुखों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आज दुनिया एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है जहां 56 से अधिक संघर्ष चल रहे हैं और इनमें लगभग 90 देश शामिल हैं।

सेना प्रमुख ने कहा, विघटनकारी तकनीकों का प्रसार, गैरसरकारी तत्वों का बढ़ता प्रभाव, हाइब्रिड युद्ध और दुष्प्रचार के प्रकोप ने संघर्ष की पारंपरिक सीमाओं को धुंधला कर दिया है। उन्होंने कहा, बदलती भूराजनीतिक स्थिति उस आम सहमति की भावना को कमजोर कर रही हैं जो संयुक्त राष्ट्र की एकजुट कार्रवाई का आधार है। ऐसी वास्तविकताएं अधिक लचीली, त्वरित और एकीकृत प्रतिक्रियाओं की मांग करती हैं जो केवल शांति रक्षक ही मिलकर कर सकते हैं।

- **कहा- 56 से ज्यादा संघर्षों में उलझे हैं 90 देश, संवेदनशील मोड़ पर खड़ी है दुनिया**

सेना प्रमुख ने कहा कि ये उभरते ख़तरे बदलती भूराजनीतिक स्थितियों से और भी जटिल हो गए हैं, जो पारंपरिक रूप से एकजुट संयुक्त राष्ट्र कार्रवाई की नींव रखने वाली आम सहमति की भावना को लगातार कमज़ोर कर रहे हैं। वैश्विक शांति स्थापना प्रयासों के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा, शांति स्थापना में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक के रूप में भारत ने संयुक्त राष्ट्र के कुल 71 शांति अभियानों में से 51 अभियानों में लगभग तीन लाख पुरुषों और महिलाओं को भेजा है। इनमें कोरिया (1950) और कांगो (1960) में हमारी शुरुआती तैनाती से लेकर अभी चल रहे 11 मिशनों में से 9 में हमारी सेना तैनात है।

यूएनटीसीसी के सम्मेलन में 32 देशों के सैन्य प्रमुखों के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह।

सम्मेलन में शामिल है 32 देशों का शीर्ष सैन्य नेतृत्व

सम्मेलन में 32 देशों का वरिष्ठ सैन्य नेतृत्व हिस्सा ले रहा है। इनमें अल्जीरिया, आर्मेनिया, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, घाना, भूटान, ब्राज़ील, बुरुंडी, कंबोडिया, मिस्र, इथियोपिया, फिजी, फ्रांस, इटली, कज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, मेडागास्कर, मलेशिया, मंगोलिया, मोरक्को, नेपाल, नाइजीरिया, पोलैंड, रवांडा, श्रीलंका, सेनेगल, तंजानिया, थाईलैंड, युगांडा, केन्या, उरुग्वे, वियतनाम शामिल हैं। सम्मेलन में साझा क्षमता निर्माण के लिए रक्षा प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही हैं।

राजनाथ ने कहा- खुलेआम वैश्विक नियमों का उल्लंघन कर रहे कुछ देश

नई दिल्ली। सम्मेलन में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि कुछ देश अंतरराष्ट्रीय नियमों का खुलेआम उल्लंघन कर रहे हैं जबकि कई अन्य देश अगली सदी में वर्चस्व स्थापित करने के लिए अपने खुद के मानदंड बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भारत पुरानी पड़ चुकी अंतरराष्ट्रीय संरचनाओं में सुधार की वकालत करते हुए अंतरराष्ट्रीय नियम-आधारित व्यवस्था को कायम रखने में मजबूती से खड़ा है। रक्षा मंत्री ने उन देशों का नाम नहीं लिया जो वैश्विक मानदंडों का उल्लंघन कर रहे हैं या अपने नए मानदंड बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हम आज की चुनौतियों का सामना पुराने बहुपक्षीय ढांचों से नहीं कर सकते। व्यापक सुधारों के बिना संयुक्त राष्ट्र विश्वास के संकट का सामना कर रहा है।

जेलेंस्की-ट्रंप की मुलाकात से पहले रूस का यूक्रेन में अस्पताल पर हमला

कीव, एजेंसी

रूसी सेना ने यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव पर रातभर शक्तिशाली ग्लाइड बम और ड्रोन से हमला किया, जिसमें एक अस्पताल को निशाना बनाया गया। इसमें सात लोग घायल हो गए।

यह हमला ऐसे समय हुआ है जब यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की वाशिंगटन जाने तथा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से और अधिक अमेरिकी सैन्य मदद मांगने की तैयारी कर रहे हैं। क्षेत्रीय प्रमुख ओलेह सिनीहुबोव ने कहा कि यूक्रेन के खारकीव पर हुए हमले में शहर का मुख्य अस्पताल प्रभावित हुआ, जिससे 50 मरीजों को निकालना पड़ा। जेलेंस्की ने कहा कि हमले का मुख्य लक्ष्य ऊर्जा प्रतिष्ठान थे। जेलेंस्की ने टेलीग्राम पर कहा, हर दिन, हर रात रूस बिजली संयंत्रों, बिजली लाइनों और हमारी प्राकृतिक गैस सुविधाओं पर हमला करता है।

यूक्रेनी नेता ने विभिन्न देशों से आग्रह किया कि वे रूस के लंबी दूरी के हमलों को रोकने में मदद करें और इसके लिए वे यूक्रेन को अधिक वायु रक्षा प्रणालियां उपलब्ध कराएं। जेलेंस्की ने कहा, हम अमेरिका और यूरोप, जी-7 तथा उन सभी साझेदारों की कार्रवाई पर भरोसा कर रहे हैं, जिनके पास ये प्रणालियां हैं और जो हमारे लोगों की सुरक्षा के लिए इन्हें उपलब्ध करा सकते हैं। दुनिया को मॉस्को को वास्तविक वार्ता के लिए मेज पर बैठने के लिए मजबूर करना होगा। लेकिन यूक्रेन को विदेशी सैन्य सहायता के नवीनतम आंकड़ों से पता चला है कि हाल ही में सहायता में भारी गिरावट आई है।

- **खारकीव शहर पर रात भर बरसाए शक्तिशाली ग्लाइड बम, ड्रोन से किया हमला, अस्पताल से निकाले गए मरीज**

यूनाइटेड अगेंस्ट न्यूक्लियर ईरान की ओर से यूक्रेन से प्राप्त ईरानी शाहिद-136 ड्रोन को मंगलवार को लंदन की संसद में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रदर्शित किया गया। यह वही हथियार है जिसका इस्तेमाल रूस ने यूक्रेन के खिलाफ विनाशकारी प्रभाव के लिए किया है।

यूक्रेन को मिलने वाली सहायता पर नजर रखने वाले जर्मनी के कील इंस्टीट्यूट ने बताया कि जुलाई और अगस्त में सैन्य सहायता में वर्ष की पहली छमाही की तुलना में 43 प्रतिशत गिरावट आई है। जेलेंस्की शुक्रवार को वाशिंगटन में ट्रंप से मिलने वाले हैं। वार्ता के केंद्र में यूक्रेन को अमेरिका द्वारा लंबी दूरी तक मार करने वाले अत्याधुनिक अस्त्र उपलब्ध कराने पर चर्चा होने की उम्मीद है।

गाजा युद्धविराम पर बंधकों के शवों को लेकर अनिश्चितता का साया बरकरार

हमास ने लौटाए सिर्फ चार शव, 24 अभी भी उसी के कब्जे में

तेल अवीव, एजेंसी

इजराइल-हमास युद्ध में मंगलवार को भी संघर्ष विराम कायम रहा, हालांकि कई जटिल मुद्दे अनसुलझे होने के कारण इस पर अनिश्चितताओं का दौर जारी है। सबसे बड़ा प्रश्न यह उठ रहा है कि हमास 28 बंधकों के शव इजराइल को कब लौटाएगा, साथ ही उससे रिहा किए गए बंधकों और कैदियों की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में भी सवाल पूछे जा रहे हैं।

मृत बंधकों में से चार के शव ही सोमवार को इजराइली अधिकारियों को सौंपे गए जो युद्धविराम समझौते के पहले चरण का हिस्सा है। मंगलवार को इनमें से दो की पहचान इजराइल के गाइ इलूज और नेपाल के छात्र बिपिन जोशी के तौर पर की गई। सात अक्टूबर, 2023 को हमास के हमले के दौरान दोनों को अगवा किया गया था। इजराइल ने कहा कि इलूज की मौत उपचार के बिना बंदी बनाने के दौरान हुए घावों के कारण हुई, जबकि जोशी की युद्ध के पहले महीनों में हत्या कर दी गई थी। मुक्त किए गए बंधकों का मंगलवार को इलाज किया गया। इलाज कुछ सप्ताह जारी रहने का अनुमान है।

इजराइल की कैद से रिहा किए गए फिलिस्तीनियों का गाजा में हुआ जोरदार स्वागत।

इजराइल ने सारे शव लौटाने के लिए दिया शाम तक का वक्त

यरूशलम। इजराइल ने मंगलवार को हमास की ओर से अपने सभी 28 बंधकों के शव न सौंपे जाने से गहरी निराशा जताई और आगे किसी भी प्रगति के लिए शाम तक की समयसीमा तय की है। शीर्ष इजराइली अधिकारियों ने हमास पर जानबूझकर वादे से पीछे हटने का भी आरोप लगाया है। इजराइल का मानना है कि हमास पहले से ही कुछ शवों को अपने पास रखे हुए है और संभवत: उसके अधिकारियों पर दबाव बनाने के लिए उन्हें सौंपने से इन्कार कर रहा है। एक मध्यस्थ देश के अरब राजनयिक ने हिब्रू मीडिया एजेंसियों को बताया कि मध्यस्थ इस मुद्दे पर काम कर रहे हैं और उन्हें नहीं लगता कि गाजा समझौता खतरे में है। सोमवार को हमास ने चार बंधकों के शव सौंपे थे, 24 उसी के कब्जे में हैं।

मेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट, राष्ट्रपति देश छोड़कर भागे

एंटानानारिवो, एजेंसी

हिंद महासागर में स्थित द्वीपीय राष्ट्र मेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट हो गया है। सशस्त्र बल यहां सत्ता संभाल रहे हैं। मेडागास्कर में एक विशिष्ट सैन्य इकाई के कर्नल ने मंगलवार को यह जानकारी सार्वजनिक की।

उनकी यह घोषणा संसद द्वारा राष्ट्रपति एंड्री राजोएलिना के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पर मतदान के तुरंत बाद आई है। राष्ट्रपति राजोएलिना सैनिकों के विद्रोह के कारण देश छोड़कर भाग गए हैं। कर्नल माइकल रैंड्रियनिरिना ने कहा कि सेना एक परिषद बनाएगी जिसमें सेना और अर्द्धसैनिक कानून प्रवर्तन बल के अधिकारी शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि एक नागरिक सरकार का शीघ्र गठन करने के लिए एक प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाएगा। इससे पहले राष्ट्रपति राजोएलिना सात वर्षों से सत्ता पर काबिज थे जिनके कार्यकाल का अब अंत होना माना जा रहा है।

युवा कर रहे थे देश भर में सरकार विरोधी प्रदर्शन सेना की एक इकाई ने भी लिया था हिस्सा

इससे पहले एक विशिष्ट सैन्य इकाई ने सप्ताहांत में युवाओं के नेतृत्व वाले सरकार विरोधी प्रदर्शनों में भाग लिया था और उनसे पद छोड़ने का आह्वान किया था। राष्ट्रपति ने सोमवार रात सोशल मीडिया पर प्रसारित एक भाषण में कहा कि उन्होंने अपनी जान के डर से देश छोड़ दिया है। तख्तापलट की कोशिशों के बीच मंगलवार को राजोइलिना ने देश की संसद के निचले सदन को भंग करने की घोषणा भी की। उनका ठिकाना बताया जा रहा है। युवा प्रदर्शनकारियों ने 25 सितंबर को पानी और बिजली की कमी के खिलाफ प्रदर्शन शुरू किया। कुछ प्रदर्शन हिंसक हो गए और जल्द ही राष्ट्रपति के इस्तीफे की मांग तक पहुंच गए। छह अक्टूबर को देश भर में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए थे।

बांग्लादेश में कारखाने और गोदाम में आग से 16 की मौत

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में मंगलवार को कपड़े के कारखाने और रसायन के एक गोदाम में आग लगने से कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि कपड़ा कारखाने के बगल में स्थित रसायन गोदाम में भीषण आग लग गई। बाद में कपड़ा कारखाने से 16 शव बरामद किए गए। उन्होंने बताया कि ऐसा संदेह है कि आग रसायन गोदाम में लगी और अनवर फैशन गारमेंट्स कारखाना तथा शाह आलम रसायन गोदाम तक फैल गई।

बातचीत ठप, अमेरिका में लंबे समय तक शटडाउन रहने की आशंकाएं बढ़ीं

वाशिंगटन। रिपब्लिकन पार्टी से स्पीकर माइक जॉनसन ने सोमवार को कहा कि संघीय सरकार का 'शटडाउन' (सरकारी वित्तपोषण रुकने से कामकाज ठप होना) अब तक का सबसे लंबा 'शटडाउन' हो सकता है। जॉनसन ने कहा कि जब तक डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसद स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित अपनी मांगों को नहीं छोड़ते और इसे पुनः शुरू नहीं करते, तब तक वह उनके साथ बातचीत नहीं करेंगे।

'शटडाउन' के 13वें दिन कैपिटल में

- **स्पीकर माइक जॉनसन ने कहा- अमेरिकी इतिहास में हो सकता है सबसे लंबा शटडाउन**

स्पीकर ने कहा कि उन्हें ट्रंप प्रशासन द्वारा बर्खास्त किए जा रहे हजारों संघीय कर्मचारियों के विवरण की जानकारी नहीं है। यह एक बेहद असामान्य सामूहिक छंटनी है जिसे व्यापक रूप से सरकार के दायरे को सीमित करने के लिए 'शटडाउन' का लाभ उठाने के तरीके के रूप में देखा जा रहा है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 15 अक्टूबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-कृष्ण पक्ष, नवमी 10.33 तक तत्पश्चात दशमी।

आज का पंचांग

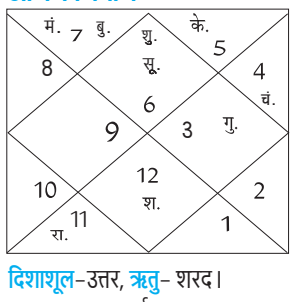

दिशाशूल-उत्तर, ऋतु- शरद।
चन्द्रबल-वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- पुष्य 12.00 तक तत्पश्चात अश्लेषा।

मेष — आज आप वैचारिक रूप से थोड़ा कमजोर महसूस करेंगे। गुप्त शत्रु आपको आपके शुभचिंतकों के प्रति भड़काने का प्रयास कर सकते हैं। अनावश्यक कार्यों में धन बर्बाद हो सकता है। माता के प्रति अपना व्यवहार अच्छा रखें।

वृष — आज शुभ समाचार मिलने से पूरा दिन बहुत ही अच्छा रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। मित्रों के साथ करियर को लेकर चर्चा करेंगे। काम की अधिकता के बावजूद नौकरी में शानदार प्रदर्शन करेंगे। जीवनसाथी आपकी भावनाओं को समझेगा।

मिथुन — आज परिवार के छोटे सदस्यों की प्रसन्नता देखकर आप भी खुश रहेंगे। व्यापार की चुनौतियों का समाधान निकाल लेंगे। आज आप धन कमाने के अलग-अलग तरीकों पर विचार कर सकते हैं। दांपत्य संबंध बहुत ही अच्छे रहेंगे। गले में खराश जैसी समस्या हो सकती है।

कर्क — आज घर में धार्मिक आयोजन होने से आप सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे। आज आप अच्छे मूड में रहेंगे। सिद्धांतों के बजाय व्यवहारिक तरीके से समस्याओं का समाधान करें। विद्यार्थियों को पढ़ाई में आ रही परेशानियां दूर होंगी।

सिंह — आज प्रतिक्रियावादी होने के बजाय ज्यादातर शान्त रहें। घर की देखरेख को आज समय देना पसंद करेंगे। आज रोगियों को सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नकारात्मक लोग आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते

कन्या — आज करियर के तरक्की के बेहतरीन अवसर आपको मिल सकते हैं। काफी समय से लंबित कार्य अब शुरू होने के अच्छे योग हैं। आपकी आमदनी में वृद्धि होगी। आपको अच्छे कार्यों के कारण पुरस्कार मिल सकता है। दांपत्य संबंध काफी रोमान्टिक हो सकते हैं।

तुला — आज आप शांति से अपना दिन बिताना चाहेंगे। आर्थिक दृष्टिकोण से समय बहुत ही अच्छा है। धर्म-कर्म के प्रति आपकी आस्था बढ़ेगी। पारिवारिक उत्तरदायित्व का भली-भांति निर्वाह करेंगे। जॉब में आपको नया काम सौंपा जा सकता है।

वृश्चिक — आज कारोबारी यात्रा के लिए जा सकते हैं। वाद-विवाद से आपको बचना चाहिए। कई दिनों बाद प्रेमीजन से मुलाकात होगी। उच्च शिक्षा में बेहतरीन परिणाम मिलेंगे। मित्रों के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके विचारों को समाज में प्रमुखता मिलेगी।

धनु — आज जिसका हित करने का प्रयास करेंगे हो सकता है वही आपको धोखा दे दे। भूमि-संपत्ति विवादों को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। परिवार में थोड़ी अशांति रहेगी। किसी से आज बड़ा लेन-देन न करें। हृदय रोगियों को दवाइयों और दिनचर्या का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

मकर — आज दांपत्य संबंध काफी रोमान्टिक रहेंगे। आय में वृद्धि होने से आपका आत्मविश्वास भी बढ़ा हुआ रहेगा। मित्रों के साथ आनंद का समय बितायेंगे। सरकारी नौकरी कर रहे लोगों को प्रमोशन मिल सकता है। भाई-बहनों की सहायता से आपको कार्यक्षेत्र में उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे।

कुंभ — आज नए संपर्क विकसित होने से मन प्रसन्न रहेगा। परिजनों के लिए खरीदारी कर सकते हैं। बिना मतलब दूसरों के मामलों में न पड़ें। अपनी योजनाओं को फिलहाल अपने तक ही सीमित रखें। संतान को शिक्षा में अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

मीन — आज आपकी कार्यशैली में बेहतरीन सुधार होगा। किसी पॉलिसी में बड़ा पूंजी निवेश कर सकते हैं। मन में परोपकार का हित जागृत होगा। यश और कीर्ति मिलने से आपके मन में अहंकार का भाव भी जागृत हो सकता है। वैवाहिक संबंध मधुर रहेंगे।

सुडोकू-130

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		3		5				
6			4			9		
	4				3			8
9					5			
8		6			1	3		5
			2					4
5			1	3			2	
	7	1			4			9
			5	9		6		

सुडोकू - 129 का हल

3	2	5	9	6	8	1	4	7
4	8	7	2	1	3	9	5	6
9	6	1	7	4	5	8	3	2
8	5	6	3	2	9	4	7	1
2	1	4	8	7	6	3	9	5
7	3	9	4	5	1	2	6	8
6	7	2	1	9	4	5	8	3
1	9	3	5	8	7	6	2	4
5	4	8	6	3	2	7	1	9

मुझे लगता है कि हम जानते हैं कि पांच-छह महीनों में हम किस तरह की क्रिकेट खेल रहे हैं। इसलिए एक टीम के रूप में यह अच्छा संकेत है कि हम ऐसा करने में सफल रहे हैं। जब से गंभीर ने कहा कि मुझे छठे नंबर पर बल्लेबाजी करनी है तब से मैं बल्लेबाज के रूप में सोच रहा हूं। -रविंद्र जडेजा

स्टेडियम

हल्द्वानी, बुधवार 15 अक्टूबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

फिडे विश्व कप: गुकेश को मिली शीर्ष वरीयता

नई दिल्ली : गोवा में 30 अक्टूबर से शुरू हो रहे फिडे विश्व कप में मौजूदा विश्व चैंपियन डी गुकेश शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी होंगे, उनके बाद हमवतन अर्जुन एरिगैसी और आर प्रज्ञानानंदा का स्थान है। यह टूर्नामेंट 27 नवंबर तक चलेगा। इसमें दुनिया भर के प्रमुख सितारे भाग लेंगे और डेनमार्क के अनीश गिरि को चौथी वरीयता दी गई है। इस प्रतियोगिता में 20 लाख डॉलर की बड़ी पुरस्कार राशि होगी और इसमें दुनिया भर से 206 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। पुरस्कारों के अलावा खिलाड़ी 2026 कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में तीन स्थानों के लिए भी प्रतिस्पर्धा करेंगे। गोवा में शीर्ष तीन पर रहने वाले खिलाड़ियों को कैंडिडेट्स में सीधे प्रवेश मिलेगा। इस प्रतियोगिता में अमेरिका के वेस्ले सो पांचवीं वरीयता प्राप्त खिलाड़ी हैं, जिनके बाद क्रमशः विन्सेंट केमर, वेई यी, नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव, शखरियार मामेदयारोव और हंस नीमन का स्थान है।

जोश-जम्पा, भारत के साथ पहले वनडे से बाहर

पर्थ : ऑस्ट्रेलिया के विकेटकीपर जोश इंगलिस और लेग स्पिनर एडम जम्पा क्रमशः चोट और पारिवारिक कारणों से भारत के खिलाफ रविवार को होने वाले पहले वनडे मैच में नहीं खेल पाएंगे। भारत ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे शृंखला खेलेगा, जिसके बाद पांच मैचों की टी-20 शृंखला होगी। अगले दो वनडे मैच एडिलेड (23 अक्टूबर) और सिडनी (25 अक्टूबर) में होंगे। इंगलिस पिंडली की चोट से उबर रहे हैं, जिससे वह इस महीने की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 शृंखला में नहीं खेल पाए थे। उनकी जगह जोश फिलिप को विकेटकीपर के रूप में ऑस्ट्रेलियाई टीम में शामिल किया गया है।

आइसलैंड ने फ्रांस का विजय अभियान थामा

रेक्जाविक : फ्रांस ने आइसलैंड के साथ 2-2 से ड्रॉ खेलकर 2026 में होने वाले फुटबॉल विश्व कप में स्थान सुरक्षित करने का मौका गंवा दिया। फ्रांस ने इससे पहले लगातार तीन मैच में जीत हासिल की थी। दो बार की विश्व चैंपियन टीम अगर आइसलैंड को हरा देती और यूक्रेन की टीम अज़रबैजान को हराने में नाकाम रहती, तो फ्रांस की टीम विश्व कप में जगह पक्की कर सकती थी। यूक्रेन ने 2-1 से जीत दर्ज की। विश्व कप 2022 का उपविजेता फ्रांस अभी भी ग्रुप डी में 10 अंकों के साथ शीर्ष पर है, जो यूक्रेन से तीन अंक अधिक हैं। फ्रांस की टीम कप्तान किलियन एमबाप्पे के बिना मैदान पर उतरी थी, जिन्होंने शुक्रवार को अजरबैजान के खिलाफ टीम की 3-0 की जीत में गोल किया था, लेकिन दाएं टखने में चोट के कारण वह लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर चले गए थे।

पैरा पावरलिफ्टिंग में मैथ्यू ने कांस्य जीता

नई दिल्ली : भारत के अनुभवी पैरा पावरलिफ्टर जोबी मैथ्यू ने मिस्र के काहिरा में आयोजित पैरा पावरलिफ्टिंग विश्व चैंपियनशिप के लेजेंड्स (मास्टर्स) वर्ग में कांस्य पदक जीता। मैथ्यू ने अपने पहले प्रयास में 147 किग्रा के भार उठाया लेकिन इसे अमान्य घोषित कर दिया गया। उन्होंने इसके बावजूद दूसरे प्रयास में 148 किग्रा वजन आसानी से उठा लिया। मैथ्यू ने इस लय को जारी रखते हुए अपने अंतिम प्रयास में 152 किग्रा का वजन उठाकर अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इससे पहले उनका पिछले व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 150 किग्रा था जिसे उन्होंने दो महीने पहले बीजिंग विश्व कप में हासिल किया था। थाईलैंड के फोंगसाकोन चुमचाई ने 162 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता जबकि पेरू के नील ग्रेसिया ने 161 किग्रा वजन उठाकर रजत पदक जीता।

रोहित-कोहली के भविष्य पर गंभीर ने कहा- मौजूदा समय में रहने की जरूरत

नई दिल्ली, एजेंसी

विराट कोहली और रोहित शर्मा 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप खेलने के इच्छुक हैं, लेकिन भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने मंगलवार को इस स्टार जोड़ी के भविष्य को लेकर कोई वादा नहीं किया। गंभीर ने कहा कि वनडे विश्व कप में अभी दो साल से अधिक का समय है और वर्तमान में रहना जरूरी है।

शुभमन गिल की वनडे कप्तान के रूप में नियुक्ति के साथ राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने पहले ही वनडे क्रिकेट में बदलाव की प्रक्रिया शुरू कर दी है और 2027 में कोहली (39) और रोहित (40) की उम्र को देखते हुए उनके भविष्य पर काफी संदेह है। गंभीर ने कहा कि 50 ओवर का विश्व कप अभी ढाई साल दूर है। वर्तमान में रहना बहुत जरूरी है। जाहिर है वे बेहतरीन खिलाड़ी हैं। वे वापसी कर रहे हैं। उनका अनुभव ऑस्ट्रेलिया में काम आएगा। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट के समापन पर कहा कि उम्मीद है कि ये दौरा दोनों खिलाड़ियों के लिए सफल साबित होगा, लेकिन इससे जरूरी बात यह है कि टीम एक सफल शृंखला खेले। ऐसा माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों में होने वाले नौ वनडे मैचों (ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन-तीन मैच) में इन दोनों खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर काफी कुछ निर्भर करेगा। भारतीय टीम पिछले एक साल में गंभीर की कोचिंग में सभी प्रारूपों में बदलाव के दौर से गुजर रही है। राष्ट्रीय टीम में शामिल करते समय किसी खिलाड़ियों के गुणों पर गंभीर ने कहा कि इस सूची में प्रतिभा सबसे पहली चीज है। फिर काम के प्रति लगन और ड्रेसिंग रूम में आपके व्यवहार खासकर टेस्ट क्रिकेट में काफी मायने रखता है। हम यह भी परखने की कोशिश करते है कि रन बनाने और विकेट लेने के अलावा आप किस तरह से टीम के लिए योगदान दे सकते हैं। आप में खेल के लिए जज्बा होना भी काफी जरूरी है। आप में अगर ये सारे गुण है तो आप निश्चित रूप से एक सफल टेस्ट करियर बना सकते हैं।

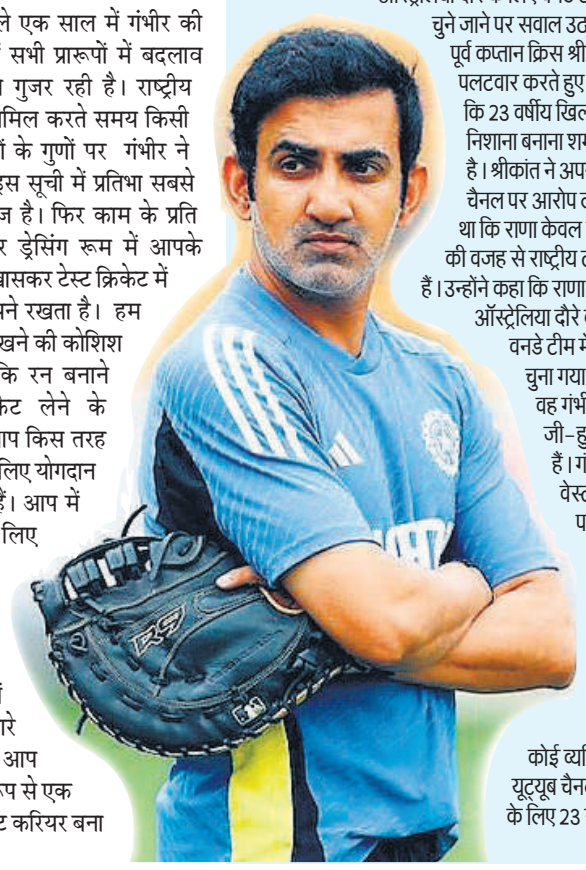

के. श्रीकांत से गंभीर बोले- 23 साल के खिलाड़ी को निशाना बनाना शर्मनाक

भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने तेज गेंदबाज हर्षित राणा को ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए वनडे टीम में चुने जाने पर सवाल उठाने वाले पूर्व कप्तान क्रिस श्रीकांत पर पलटवार करते हुए कहा कि 23 वर्षीय खिलाड़ी को निशाना बनाना शर्मनाक है। श्रीकांत ने अपने यूट्यूब चैनल पर आरोप लगाया था कि राणा केवल गंभीर की वजह से राष्ट्रीय टीम में हैं। उन्होंने कहा कि राणा को ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए वनडे टीम में इसलिए चुना गया क्योंकि वह गंभीर की जी-हुजूरी करते हैं। गंभीर ने वेस्टइंडीज पर भारत की टेस्ट शृंखला जीत के बाद कहा कि यह शर्मनाक है कि कोई व्यक्ति अपना यूट्यूब चैनल चलाने के लिए 23 साल के खिलाड़ी को निशाना बना रहा है। अगर आप मुझे निशाना बनाना चाहते हैं, तो बनाइए। मैं इससे निबट सकता हूं, लेकिन यूट्यूब व्यूज के लिए 23 साल के युवा खिलाड़ी को ट्रोल करना शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि उनके (राणा के) पिता चयनकर्ता नहीं हैं। उन्होंने अपनी योग्यता के आधार पर टीम में जगह बनाई है। इन युवा लड़कों को निशाना मत बनाइए। हालांकि यह पता नहीं चल सका है, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से यह निशाना श्रीकांत के बेटे अनिरुद्ध पर लगाया जा सकता है, जिन्हें एक बार ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारत ए टीम में चुना गया था। तब श्रीकांत चयन समिति के अध्यक्ष थे। श्रीकांत ने हाल ही में कहा था कि केवल एक सदस्य है, हर्षित राणा... कोई नहीं जानता कि वह टीम में क्यों है। सबसे अच्छा यही है कि हर्षित राणा की तरह बनें और टीम में चयन के लिए गंभीर की लगातार हां में हां मिलाते रहें। गंभीर ने कहा कि अगर राणा अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं तो चयन समिति उन्हें हटा देगी। राणा ने अब तक तीनों प्रारूप में 10 मैच खेले हैं, जिनमें उन्होंने 19 विकेट लिए हैं। भारत के मुख्य कोच ने कहा कि लोगों को उनके प्रदर्शन के आधार पर निशाना बनाइए और चयनकर्ता इसी काम के लिए हैं। अगर आप सोशल मीडिया पर किसी 23 साल के खिलाड़ी के बारे में बुरी बातें कहेंगे, तो इससे उसकी मानसिकता पर क्या असर पड़ेगा। अगर आपका बच्चा कल क्रिकेट खेलता है, तो कल्पना कीजिए कि उसके साथ दुर्व्यवहार हो। वह 23 साल का है, 33 साल का नहीं। मेरी आलोचना करो, मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूं, लेकिन वह 23 साल का लड़का है, इसलिए यह स्वीकार्य नहीं है। गंभीर ने कहा कि भारतीय क्रिकेट के प्रति नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए और आपको अपना यूट्यूब चैनल चलाने के लिए ये चीजें नहीं करनी चाहिए। यह केवल हर्षित के मामले में ही नहीं है। भविष्य में अन्य खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा हो सकता है। आप लोगों (मीडिया) से भी मेरा यही कहना है कि आप मुझे निशाना बनाइए, लेकिन खिलाड़ियों को नहीं।

शुभमन को कप्तान बनाकर किसी ने कोई एहसान नहीं किया, वह इसके हकदार

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने युवा कप्तान शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने इंग्लैंड में कप्तान के रूप में अपनी सबसे कठिन परीक्षा पास कर ली है और किसी ने भी उन्हें टेस्ट और वनडे दोनों प्रारूपों में कप्तान नियुक्त करके कोई एहसान नहीं किया है। भारत ने गिल की कप्तानी में इंग्लैंड में पांच टेस्ट मैच की शृंखला बराबर कराई थी जबकि अब उसने वेस्टइंडीज को दोनों मैच में हराया। गिल को अब रोहित शर्मा की जगह वनडे टीम का कप्तान बनाया गया है, जिसकी शुरुआत ऑस्ट्रेलिया के दौरे से होगी। गंभीर से जब पूछा गया कि वह मुख्य कोच के रूप में नए कप्तान को कैसे संभालते हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें अपना स्वाभाविक दृष्टिकोण बनाए रखने की इजाजत देकर। मुझे लगता है कि उन्हें टेस्ट या वनडे कप्तान बनाकर किसी ने उन पर कोई एहसान नहीं किया है। मुझे लगता है कि वह इसके हकदार हैं। उन्होंने कड़ी मेहनत की है। कप्तान के रूप में इंग्लैंड दौरे में वह पहले ही सबसे कठिन परीक्षा पास कर चुके हैं। इंग्लैंड का दौरा काफी कठिन था क्योंकि हमारा मुकाबला विदेशी परिस्थितियों में मजबूत टीम से था। गिल ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया और खिलाड़ियों के बीच सम्मान अर्जित किया। गंभीर फिलहाल वर्तमान पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और इसे लेकर चिंतित नहीं हैं कि भारत 2027 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेलेगा या नहीं।

द. अफ्रीका शृंखला से पहले रणजी खेलें खिलाड़ी

गौतम गंभीर चाहते हैं कि टेस्ट विशेषज्ञ खिलाड़ी बेंगलुरु स्थित उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) में कौशल विशेष अभ्यास की जगह आगामी दक्षिण अफ्रीका शृंखला से पहले मैच अभ्यास के लिए अपने-अपने राज्यों के लिए रणजी ट्रॉफी खेलें। गंभीर ने कहा कि भारतीय टीम का कार्यक्रम काफी व्यस्त है क्योंकि भारत की टी-20 टीम नौ नवंबर को ब्रिस्बेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना आखिरी मैच खेलेगी और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट 14 नवंबर को कोलकाता में शुरू होगा। कोच ने कहा कि कभी-कभी यह मुश्किल होता है, लेकिन पेशेवरता इसी को कहते हैं। खिलाड़ियों को अपने दिनों का सर्वश्रेष्ठ तरीके से इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि हम जानते हैं कि यहां से वन-डे क्रिकेट, फिर टी-20 और चार दिन बाद फिर टेस्ट मैच खेलना काफी मुश्किल है। जो खिलाड़ी केवल टेस्ट का हिस्सा हैं, उनके लिए तैयारी करना और घरेलू क्रिकेट खेलना बहुत महत्वपूर्ण है।

राहुल का अर्धशतक, भारत ने किया क्लीन स्वीप

पांचवें दिन वेस्टइंडीज को सात विकेट से हराकर दो मैचों की टेस्ट शृंखला की अपने नाम

लोकेश राहुल।

- मैच में आठ विकेट लेने पर 'प्लेयर ऑफ द मैच' बने बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव
- बल्ले-गेंद से शानदार प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' चुने गए ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा

नई दिल्ली, एजेंसी

सलामी बल्लेबाज केएल राहुल के नाबाद अर्धशतक की मदद से भारत ने दूसरे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच के पांचवें दिन मंगलवार को वेस्टइंडीज को सात विकेट से हराकर दो मैच की शृंखला में क्लीन स्वीप किया। भारत ने 121 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पांचवें दिन एक विकेट पर 63 रन से अपनी पारी आगे बढ़ाई। उसे जीत के लिए केवल 58 रन की जरूरत थी। भारत ने आखिर में 35.2 ओवर में तीन विकेट पर 124 रन बनाए। राहुल 58 रन बनाकर नाबाद रहे।

भारत ने सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (175) और कप्तान शुभमन गिल (नाबाद 129) के शतकों की मदद से अपनी पहली पारी पांच विकेट पर 518 रन बनाकर समाप्त घोषित की थी जिसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 248 रन ही बना पाई थी और उसे फॉलोऑन करना पड़ा था। वेस्टइंडीज की दूसरी पारी में जॉन कैम्पबेल (199 गेंदों पर 115 रन) और शाई होप (214 गेंदों पर 103 रन) ने तीसरे विकेट के लिए 177 रन की साझेदारी की जिससे उसकी टीम 390 रन बनाने में सफल रही। इससे मैच पांचवें दिन तक खिंच गया। भारत ने अहमदाबाद में खेला गया पहला टेस्ट मैच तीन दिन के अंदर पारी और 140 रन से जीता था।

अरुण जेटली स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीतने के बाद ट्रॉफी के साथ जश्न मनाते भारतीय खिलाड़ी।

- भारत पहली पारी : 518/5 (घोषित)
- वेस्टइंडीज पहली पारी : 248/10
- वेस्टइंडीज दूसरी पारी: 390/10

भारत

124/3 (35.2 ओवर) (दूसरी पारी)

यशस्वी का फिलिप बो वारिकन	08
केएल राहुल नाबाद	58
साई सुदर्शन का होप बो चेज़	39
शुभमन गिल का ग्रीव्स बो चेज	13
ध्रुव जुरेल नाबाद	06

गेंदबाजी : जेडन सील्स 3-0-14-0, जोमेल वारिकन 15.2-4-39-1, खारी पियरे 8-0-35-0, रोस्टन चेज़ 9-2-36-2

भारत की घरेलू धरती पर श्रेष्ठता की पुष्टि करने के अलावा यह जीत भारत के टेस्ट कप्तान के रूप में शुभमन गिल की शृंखला में पहली जीत के रूप में भी दर्ज की जाएगी। राहुल ने छह चौके और दो छक्के लगाए तथा साई सुदर्शन (39) के साथ दूसरे विकेट के लिए 79 रन जोड़े। गिल ने 13 रन बनाए जबकि ध्रुव जुरेल छह रन बनाकर नाबाद रहे।

बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव को मैच में आठ विकेट लेने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया, जिसमें पहली पारी में लिए गए पांच विकेट भी शामिल हैं। ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया। वेस्टइंडीज के खिलाड़ियों ने इस मैच में अपना जज्बा दिखाया लेकिन इसके बावजूद रोस्टन चेज, क्रैग ब्रैथवेट के बाद, कप्तान के रूप में अपने पहले पांच टेस्ट मैच हारने वाले वेस्टइंडीज के दूसरे कप्तान बन गए। चेज़ ने पुरस्कार वितरण समारोह में कहा कि मुझे लगता है कि हमारे खिलाड़ी कैरेबियाई देशों के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से हैं। इसलिए हमें इस आखिरी टेस्ट मैच को एक मानदंड के रूप में उपयोग करना होगा। हमें यहां से जितना संभव हो सके उतना सुधार करना होगा। दो टेस्ट मैचों में भारतीय गेंदबाजों ने विपक्षी टीम के सभी 40 विकेट चटकाए। भारतीय बल्लेबाजों की ओर से दो मैचों में पांच शतक बनाए गए। भारतीय बल्लेबाजों की असली परीक्षा दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली आगामी टेस्ट शृंखला में होगी।

खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने के लिए कभी-कभी आपको साहसिक फैसले लेने पड़ते हैं: गिल

भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि वह अपने खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने के लिए साहसिक फैसले लेने में नहीं हिचकिचाते और वह इस भूमिका के आदी हो चुके हैं। गिल ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में जीत के बाद कहा कि मैं खेल की परिस्थितियों के अनुसार फैसला करता हूं। कभी-कभी आपको साहसिक फैसले लेने होते हैं और यह इस पर निर्भर होता है कि कौन सा खिलाड़ी आपके लिए विकेट ले सकता है या रन बना सकता है। मुझे लगता है कि मैं इस टीम के सभी खिलाड़ियों से काम लेने का आदी हो रहा हूं। मुझे ज़िम्मेदारी निभाना अच्छा लगता है। मुझे ज़िम्मेदारी निभाना पसंद है और मैं इसे अपने तरीके से करता हूं। कुछ अहम फ़ैसलों में शामिल होना मुझे बहुत पसंद है और मुझे लगता है कि इससे मेरे अंदर का सर्वश्रेष्ठ सामने आता है।

अटापट्टू-निलाक्षिका ने श्रीलंका को छह विकेट पर 258 रन तक पहुंचाया

कोलंबो, एजेंसी

निलाक्षिका डिसिल्वा (नाबाद 55 रन) के आक्रामक और कप्तान चामरी अटापट्टू (53 रन) के संयमित अर्धशतक से श्रीलंका ने मंगलवार को महिला वनडे विश्व कप मुकाबले में न्यूजीलैंड के खिलाफ 6 विकेट पर 258 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। अटापट्टू ने 72 गेंद में 7 चौके लगाए तो वहीं निलाक्षिका ने सबसे तेज अर्धशतक जड़ते हुए 28 गेंद की पारी में 7 चौके और 1 छक्का जड़ा।

युवा बल्लेबाज विष्मी गुणरत्ने (42) के साथ मिलकर अटापट्टू ने 101 रन की साझेदारी की। हसिनी परेरा ने भी 44 रन का योगदान दिया। टूर्नामेंट में पहली जीत की तलाश में श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी का फैसला किया और ऊपरी क्रम में एक रणनीतिक बदलाव करते हुए गुणरत्ने को कप्तान के साथ पारी की शुरुआत के लिए भेजा। दोनों ने पावरप्ले की पांबदियों का पूरा फायदा उठाया और पहले 10 ओवरों में 52 रन बनाए। न्यूजीलैंड की खिलाड़ी मैदान पर अपने तेज तर्रार क्षेत्ररक्षण से दूर दिखीं और कई मौकों पर दोनों बल्लेबाजों के आउट करने और रन आउट के मौके गंवाए। लेकिन पावरप्ले के बाद उन्होंने वापसी की। अटापट्टू ने सोफी डिवाइन की गेंद पर अपना 20वां वनडे अर्धशतक पूरा किया। लेकिन डिवाइन ने श्रीलंकाई कप्तान को मैडी ग्रीन के हाथों कैच कराया। गुणरत्ने रोजमैरी मैयर की गेंद पर बोल्ड हो गईं। परेरा (44) और हर्षिता (26) ने 58 रन की साझेदारी कर पारी को संभाला। न्यूजीलैंड ने समरविक्रमा, कविशा दिलहारी (4) और परेरा को आउट कर दिया, जिससे रन गति पर लगाम लगी। निलाक्षिका ने शानदार पारी खेलीं।

कोलंबो में खेले जा रहे महिला विश्व कप मैच के दौरान श्रीलंकाई कप्तान चामरी अटापट्टू और विश्मी गुणारत्ने।

भरत 8,000 मीटर ऊंची नौ चोटियों पर चढ़ने वाले पहले भारतीय बने

कोलकाता। आंध्र प्रदेश के कुरनूल के पर्वतारोही भरत थम्मिनेनी मंगलवार को छठे सबसे ऊंचे पर्वत 'माउंट चो ओयू' (8,188 मीटर) पर चढ़ाई करने के साथ दुनिया की 14 सबसे ऊंची चोटियों में से नौ पर फतह करने वाले पहले भारतीय बन गए। इस 36 वर्षीय पर्वतारोही के करीबी सूत्रों ने यह जानकारी दी।

सूत्रों ने बताया कि इस उपलब्धि से पहले थम्मिनेनी ने मई 2017 में माउंट एवरेस्ट, सितंबर 2018 में मनास्लू, मई 2019 में ल्होत्से, मार्च 2022 में अन्नपूर्णा, अप्रैल 2022 में कंचनजंगा, मई 2023 में मकालू, अक्टूबर 2024 में शीशपंगमा और अप्रैल 2025 में धौलागिरी पर चढ़ाई की थी। ये सभी 8,000 मीटर से अधिक ऊंची चोटियां हैं। बची हुई पांच शीर्ष चोटियां के2, नंगा पर्वत, गशेरब्रुम 1 और 2 तथा ब्रॉड पीक पाकिस्तान में हैं।

सुल्तान जोहोर कप | भारत ने दो गोल से पिछड़ने के बाद बनाई बढ़त, पाकिस्तान ने अंतिम क्षणों में बराबरी की

भारत-पाकिस्तान के बीच मैच 3-3 से ड्रॉ रहा

जोहोर बाहरु (मलेशिया), एजेंसी

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने मंगलवार को सुल्तान जोहोर कप के अपने ग्रुप चरण के तीसरे मैच में पाकिस्तान के खिलाफ 3-3 से ड्रॉ खेला। भारत ने रोमांचक मुकाबले में दो गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए बढ़त बनाई लेकिन पाकिस्तान ने गोल करके अंक बराबर कर लिए। इस परिणाम का मतलब है कि भारत को अब तक टूर्नामेंट में हार का सामना नहीं करना पड़ा है।

भारत के लिए अरिजीत सिंह हुंडल (43वें मिनट), सौरभ आनंद कुशवाहा (47वें मिनट), मनमीत सिंह (53वें मिनट) ने गोल दागे। पाकिस्तान के लिए हन्नान शाहिद (5वें मिनट) के अलावा सूफियान खान (39वें मिनट, 55वें मिनट) ने दो गोल किए। भारत ने शानदार शुरुआत करते हुए गेंद पर दबदबा बनाए रखा। भारत ने शुरुआत में सर्कल में कई बार सेंध लगाई जिससे पाकिस्तान बैकफुट पर रहा। पाकिस्तान ने पलटवार करते हुए जल्द ही पेनल्टी स्ट्रोक हासिल कर लिया। कप्तान शाहिद ने बिना कोई गलती किए गेंद गोलकीपर के दाईं ओर से नीचे की ओर डालकर अपनी टीम को शुरुआती बढ़त दिला दी। इसके बाद सूफयान ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके पाकिस्तान की बढ़त 2-0 कर दी। भारत ने क्वार्टर के अंत में एक पेनल्टी स्ट्रोक हासिल किया। तीन मिनट से भी कम समय रहते हुंदल ने गोल करके अंतर कम किया। इसके बाद कुशवाहा ने एक बेहतरीन शॉट लगाकर स्कोर बराबर कर दिया।

भारत के आक्रामक रुख से पाकिस्तान बैकफुट पर

बराबरी गोल करने के बाद आत्मविश्वास से लबरेज भारत ने आक्रामक रुख अपनाया जिससे पाकिस्तान बैकफुट पर आ गया। फिर मनमीत ने गोल करके मैच में पहली बार भारत को बढ़त दिलाई। हालांकि यह बढ़त ज्यादा देर तक नहीं टिक पाई क्योंकि सूफयान ने मैच में दूसरी बार पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके बराबरी हासिल कर ली।